Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
उपन्यास साहित्य

साहित्यकार

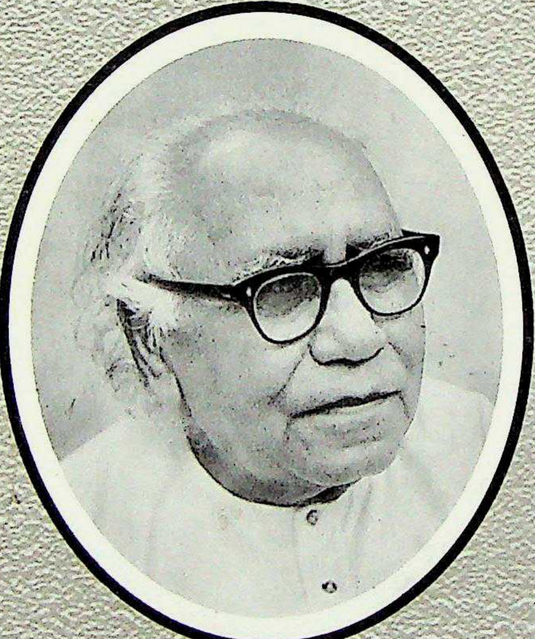

43
S
5

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

168015
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकार

(उपन्यास)

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store
All Yog & Organic Products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकार

081
168015

गुरुदत्त

Central Library
168015
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 026

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-S

© प्रकाशकाधीन 1964

[redacted]
मो० [redacted]
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बरस, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड़,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य : 30.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
18/28, पंजाबी बाग (पूर्वी)
नई दिल्ली–110 026
फोन : 5102133

संस्करण : 2000

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली–110 032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

अन्य कलाओं की भांति साहित्यिक प्रतिभा भी भाग्य से मिलती है। मनुष्य तो, परमात्मा से तथा भाग्य से मिली विभूतियों को केवल उन्नत अथवा अवनत ही कर सकता है। मूल प्रतिभा जन्म जात होती है।

बच्चे भी कलाकार होते हैं। वे अपनी कला का प्रदर्शन अपनी स्वाभाविक, अपरिष्कृत और विलक्षण आकृति में उपस्थित करते हैं। बड़ी आयु के लोग, उनकी कला को वास्तविकता से दूर पाते हैं। यह उनकी प्रतिभा में कमी के कारण नहीं, वरन् उनकी आंखें, उनके हाथ, उनके मन तथा बुद्धि के अशिक्षित होने के कारण होता है।

एक बालक अपने मन में बन रहे चित्रों को लेखनी अथवा तूलिका से कागज़ पर बनाना चाहता है। वह चित्र दिखाई देने वाली वस्तुओं में विलक्षण होता है। इस विलक्षणता में कारण उसकी कला-प्रतिभा में कमी का कारण उसकी न्यूनाधिक होने के साथ-साथ उसके ज्ञान में कमी के कारण भी है। ज्ञान आंखें, कान इत्यादि ग्राह्य इन्द्रियों को अशिक्षित होना तथा उसकी बुद्धि व मन का अविकसित होना है। उसकी आंखें वैसा नहीं देखती, जैसा एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति की आंखें देखती हैं। उसकी बुद्धि वैसा नहीं समझती, जैसी एक परिपक्व बुद्धि समझती है और उसका मन देखी वस्तु को वैसा स्मरण नहीं रखता, जैसा देखता है। इसके साथ ही उसका हाथ उस स्थिरता तथ कुशलता से नहीं चलता, जिस स्थिरता तथा कुशलता से एक प्रौढ़ का चलता है। इस पर भी वह अपने चित्र को वास्तविकता की ठीक प्रतिलिपि ही मानता है। उसमें कला की प्रतिभा तो है, परन्तु कुशलता नहीं। वह जैसा देखता, समझता और स्मरण रख सकता है, वैसे ही बना देता है। यही कारण है कि अपने बने को वह ठीक ही मानता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिप्राय यह कि कला के प्रति रुचि तथा प्रतिभा तो जन्म जात होती है, परन्तु कला में यथार्थता ज्ञानेन्द्रियों, बुद्धि तथा मन के शिक्षित अथवा विकसित होने पर आती है।

यही अन्य कलाओं के साथ होता है। कला का रूप बनता है बुद्धि और इन्द्रियों के संयोग से। परन्तु कला के रूप में उसका भाव अर्थात् आत्मा आता है मन अर्थात् संचित संस्कारों से। मन, संस्कारों के संचय करने का भण्डार है। इसी को ज्ञान कहते हैं। साहित्यकार भी इसी नियम के अधीन बनता है।

कविता की बात ही लें। कई बालक अनायास तुक बंदी तथा स्वर लय में बातें करते देखे जाते हैं। उनमें कविता करते की प्रतिभा होती है। उस प्रतिभा का विकास इन्द्रियों और बुद्धि के विकास तथा समन्वय से होता है। परन्तु इस कविता करने की प्रतिभा में ज्ञान का समावेश होने पर कला पूर्णता की ओर जाने लगतो है। ज्ञान मन पर संचित संस्कारों का काम है। जब विशेष चमत्कारपूर्ण और अनुभव मय संस्कारों से निर्मित भाव कविता में स्रवित होने लगते हैं तो कविता का प्रकटिकरण होता है।

कभी किन्हीं कारणों से जन्म-जात प्रतिभा होती है, इन्द्रियां तथा बुद्धि भी विकसित एवं समन्वित होती हैं, परन्तु ज्ञान की कमी अथवा विकृति के कारण कला अर्थहीन अथवा कुमार्ग पर चलने लगती है। चित्रकार वासना-मय अप्सराओं के चित्र भी खेंच सकता है और सौम्य मूर्ति देवी देवताओं के भी। कवि कविता में गाली-गलोज भी भर सकता है और उच्च-ज्ञान ध्यान की बातें भी

अतः कला शरीर तथा आत्मा के संयोग से ही सजीव हो पाती है। कला का शरीर, जन्म जात प्रतिभा और बुद्धि एवं मन के विकास से बनता है और कला का आत्मा ज्ञान की देन होता है।

ज्ञान तीन प्रकार का कहा है। सात्विक, राजसी, तथा तामसी। जिस प्रकार का ज्ञान कला में आत्मा बन करके बैठता है, कला भी वैसी ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात्विक, राजसी अथवा तामसी हो जाती है

ज्ञान संस्कार जन्य होता हैं। ये संस्कार पूर्व जन्म के कर्मों के फल होते हैं अथवा इस जन्म की शिक्षा-दीक्षा और वातावरण का परिणाम होते हैं। इन संस्कारों के बनते समय तो बुद्धि हस्ताक्षेप कर सकती है,परन्तु संस्कारों से ज्ञान का रूप बनते समय बुद्धिहस्ताक्षेप नहीं कर पाती।

उदाहरण के रूप में, एक बढ़ई का लड़का बढ़ई के काम धंधे वाले वातावरण तथा शिक्षा में बड़ा होता है। यदि उसके पूर्व जन्म के संस्कार सामान्य होंगे तो वह बढ़ई के काम का ज्ञान ही रखेगा। बुद्धि उस बढ़ई के ज्ञान को ही तीखा कर सकेगी। यह भी सम्भव हैकि वह साधुसन्तों की संगत में पड़ जाये तो उसके बढ़ई के ज्ञान के साथ, उसके अध्यात्म के संस्कार भी बन जाएं। यही बात प्रत्येक व्यवसाय और मानव व्यापार में होती है।

साहित्य एक कला है। इस कला का शरीर है शब्द, वाक्य कविता अथवा कथानक, कला की आत्मा है, कविता अथवा कथानक में उपस्थित भाव। भाव ज्ञान का सूचक है। ज्ञान संस्कारों से उत्पन्न होता है।

संस्कार अर्थात ज्ञान मानव मन को शिकंजे में कसकर रखने से प्राप्त नहीं होता। यह कांच के कमरे (Hot pourses) में पैंदा किये जाने वाले पुष्प-पत्र को भांति नहीं निर्माण हो सकता। इसके लिये स्वच्छ, स्वछन्द, अबाध वातावरण की आवश्यकता रहती है। रीति-रिवाज, प्रथाएं, नियम आदि मानसिक विकास में बाधक होते हैं। जैसे रीति-रिवाज़ इत्यादि का बल पूर्वक पालन कराया जाना मानसिक विकास में बाधक होता है, वैंसे ही अंधा-धुंध रीति-रिवाज़ आदि का भंग करना भी बंधन रूप ही हो जाता है। वह भी मन के विकास में अर्थात नये-नये संस्कारों के संचय करने में बाधक हो जाता है। रीति-रिवाज़ का पालन अथवा रीति-रिवाज का भंग करना बुद्धि के अधीन होने से स्वतन्त्रता में बाधक नहीं माना जा सकता। यह संस्कारों के संचय में सहायक होता है और ज्ञान की वृद्धि करने वाला होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः कोई भी कलाकार अथवा साहित्यकार अपनी इच्छा के विपरीत बन्धनों में बांधा जाने से ज्ञान शून्य होने लगता है और उसकी कला का आत्मा कला से लुप्त होने लगता है ये बन्धन समाज के हों अथवा राज्य के हों। ये बुद्धिगम्य तथा सरल होने से हीं स्वतन्त्रता के बाधक नहीं होते।

साहित्य की भी आत्मा बनती है। स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी और विवेकशील मन तथा बुद्धि से।

यह है इस साहित्यकार उपन्यास का विषय। स्थान, पात्र तथा घटाएं काल्पनिक हैं। सत्य तो उक्त विवेचना ही है।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

है कहाँ बौर अखियाँ उधार ।।
यह वसन्त नहीं अरि बावरि—विना वक्त की है पुकार।
डालि पे आम की बैठी हो, है कहाँ बौर अखियाँ उधार ।।

साथ के कमरे से गाने का स्वर सुनाई दे रहा था। सतीशचन्द्र मासिक पत्रिका 'प्रशान्त' के लिये कहानी लिख रहा था। वह लिख रहा था, "हिमालय की उत्तुंग बर्फीली चोटियों पर लाल झण्डा अति शोभायमान दिखाई दे रहा था। चीनी वीर सैनिक जब चोटियों की बगल से होते हुए पंक्तिबद्ध नीचे खिसकने लगे तो······।" इस समय सतीश के कान में यह बे-बहार की कूक सुनाई दी। उसका ध्यान अपनी कहानी से उचाट हुआ तो झुंझला कर उसने अपनी कलम सामने मेज पर रख दी और इस कूक के समाप्त हो जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

गाने वाली का स्वर मीठा तो था ही, परन्तु इस समय तो सतीश कहानी लिखने बैठा है। उसे यह बे-बहार ही प्रतीत हुआ। वह विचार करने लगा कि अर्चना को गाने के लिये यही समय मिला है क्या ? वह तो समझा था कि वह सो रही होगी। इसी कारण कुछ विचार प्रसार, कुछ परोपकार और आत्मोद्धार का काम करने आ बैठा था।

सतीश सोच रहा था कि अभी साढ़े चार बजे हैं। वह एक-आध कूक लगा कर सो जायेगी, परन्तु साथ के कमरे में वे अर्चना ने खांस कर गला किया और दुगने उत्साह से आगे गाने लगी:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पपिया जागत भोर जान कर, स्वप्न ले रहा है निराधार,
मालकोस की मधुर थाप पर, स्वर भैरव के हैं बेकार ।।
है कहाँ बौर अखियाँ उधार ।।

सतीश ने यह समझा कि अर्चना जानकर विघ्न डालने का यत्न कर रही है। वह चिन्तित तो था। प्रातःकाल के समय तो कुछ काम-धन्धे का विचार करना चाहिये, परन्तु वह तो उसके काम में विघ्न डाल रही है। वह स्वयं तो सो नहीं रही और अपने 'प्रिय' को सोने के लिए कह रही है।

'प्रशान्त' मासिक पत्रिका के आगामी अंक के लिये उसने भारत पर चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर एक कहानी देने का वचन दे रखा था। पिछली रात सोया-सोया वह अपनी कहानी के कथानक पर विचार करता रहा था। एक अति चमत्कारपूर्ण कथानक उसके मस्तिष्क में आया था। हिमालय की चोटियों पर रहने वाला हिम-पुरुष जो भारत के गंदमी लोगों से डर कर अपनी हिम गुफा में जा कर छुप जाया करता था, चीनी आक्रमण करने वालों को देख प्रसन्नता अनुभव कर रहा था। वह रंग-रूप से उनको अपना सजातीय मान अपनी भूमि का उद्धार हो रहा समझ रहा था। उसने लाल रंग का झण्डा अपनी गुफा के अन्दर गाड़ा जाता देखा तो अपनी मंगोलियन भाषा में आह्लाद प्रकट करने लगा।

प्रातःकाल मस्तिष्क में रात के समय की प्रस्फुटित कहानी को लिखने के लिये जब वह बैठा तो अर्चना के गाने ने उसका विचार भंग कर दिया। वह झुंझला उठा। इस बेतुके असामयिक राग को अति मीठे स्वरों में गाया जाता सुन वह कुर्सी से उठा और अपने कमरे से अर्चना के कमरे में जाने वाले द्वार पर खड़ा हो बोला, "अब वन्द भी करोगी इस कूक-पुकार को। इस समय मैं एक अत्यावश्यक काम कर रहा हूं ?"

"तो क्या मैं अनावश्यक काम कर रही हूं ?"

सतीश कमरे में चला आया। उसने देखा कि अर्चना अभी बिस्तर में लेटी है। मोटी चादर उस पर पड़ी है। वह पेट के बल लेटी अपने तकिये पर रखे कागज पर पेंसिल से कुछ लिख रही थी। बैड लैम्प जल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"देखूं, भला क्या आवश्यक काम कर रही हो ?"

इस समय अर्चना उठ चादर से निकल बिस्तर पर बैठ गयी और बोली, "आप देखकर क्या करेंगे ? किसी कार्य की आवश्यकता उसके करने वाले के देखने की बात है। चलते-फिरते व्यक्ति भला उसका मूल्यांकन कैसे करेंगे ?"

"तो मैं चलता-फिरता व्यक्ति हूं ?" वह अर्चना के पास बैठ तकिये पर रखे कागज को देखने लगा। कई बार लिख-लिखकर काटी हुई पंक्तियों के नीचे एक गीत लिखा था। गीत के दो पद उसने गाये थे और सतीश आ गया था। सतीश पूर्ण गीत पढ़ गया। अर्चना मुस्कराती हुई उसके मुख पर देख रही थी। गीत का शेष अंश था—

'सोजा सजनी रात पड़ी है वेला नहीं यह भोर राग का।
रंग महल की जगमग कोयल, समझी भोर के हैं दीदार॥
है कहाँ बौर अखियां उधार॥
जग जागा है भाग पड़ा है पाने को इक अनजानी के।
अन्धकार में ठोकर खाकर लुढ़केगी वह निराधार॥
है कहाँ बौर अखियाँ उधार॥'

सतीश ने कहा, "तो इस समय कविता हो रही है ?"

"जी।"

"यह सब व्यर्थ है। इससे क्या मिलेगा ?"

"यही तो कह रही हूं। जो करता है वह पाता है। भला आपको कैसे मिल जाएगा ?"

"पर मैं देख तो सकता हूं ?"

"हां, उसके लिये आंखें चाहियें। अन्तर्चक्षु।"

"वे कहां होते हैं ?"

"आत्मा में।"

"फिर वही आत्मा-परमात्मा की निराधार बातें। देखो अर्चना ! मैं एक अत्यावश्यक लेख लिख रहा था और तुमने मेरा ध्यान विचलित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया। इस लेख से एक सौ रुपया मिलने वाला है। भला इस कविता से क्या मिलने वाला है ?"

"किस विषय पर लेख लिखा जा रहा है ?"

"वही जो रात मैं कह रहा था। चीन का हिमालय पर आक्रमण युक्ति-संगत था। यह तो पंडित नेहरू ने साम्राज्यवादियों से सहायता मांग कर सब गड़बड़ घोटाला कर दिया है। अमेरिका का सातवां बेड़ा बंगाल की खाड़ी में विद्यमान था और भारत पर हवाई छतरी तान देने का प्रस्ताव करने लगा था।"

"मैं भी तो वही रात वाली बात लिख रही हूं। मैंने तो आपको बताया था कि पंडित नेहरू की योजा बीस वर्ष में पूर्ण भारत को लाल रंग में रंग देने की है और चीनी मूर्खों ने इस आक्रमण से उनकी योजना को एक सौ वर्ष पीछे कर दिया है।

"मैं यही लिख और गा रही हूं कि यह मूर्ख कोयल समझी है कि दिन चढ़ आया है और कू-कू कर पिया को पुकार रही है। अभी दिन दूर है। मैं उसको कह रही हूं कि सोजा। दूर रंग महल में प्रकाश देख वह समझी थी कि भोर की लाली है। यहाँ सरकारी वक्तव्य और मजदूरों की हड़तालें देख चीन ने समझा था कि यह दिन का प्रकाश है, यह भ्रम था। मैं गा रही थी, "है कहाँ बौर अंखियां उघार ?"

"तो यह भोर कब होगी ?"

"जिस समय भारत में मजदूरों की संख्या किसानों से अधिक हो जाएगी।"

"परन्तु वह तो अब हो नहीं सकेगी ?"

"होगी जी। आप तो अधीर हो रहे हैं। देखिये, इस समय भूमि रखने की उच्च सीमा नियत कर दी गई है। यद्यपि उच्च सीमा बीस एकड़ है, परन्तु बीस एकड़ वाले परिवार बहुत कम रहेंगे। किसानों के पढ़े-लिखे लड़के इस थोड़ी-सी आय से संतुष्ट नहीं रह सकेंगे। वे किसी न किसी नगर में जाकर या तो नौकरी करेंगे अथवा उद्योगपति बनने का यत्न करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दोनों अवस्थाओं में वे किसानों की संख्या कम कर मज़दूरों और कर्मचारियों की संख्या बढ़ायेंगे। देहातों में सहकारी फार्म बनेंगे। वे चल नहीं सकेंगे। इस कारण वे सरकारी फार्म बन जाएंगे। इससे भी नौकरी-पेशा लोगों की संख्या में वृद्धि ही होगी। जब मज़दूरों की संख्या बढ़ जाएगी, तब यहाँ समाजवाद चलेगा। बिना रक्त बहाये। चीन को बदनाम होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। जब भारत में समाजवादी राज्य स्थापित हुआ तो वह चीन का और अन्य कम्यूनिस्ट देशों का मित्र होगा। मित्रों में वह बड़ा होगा, जिसके पास शक्ति अधिक होगी। निःसन्देह वह चीन होगा।"

"यह सब निराधार स्वप्न है, अर्चना! हमारी योजना तो यह थी कि चीनी सेनाएं हिमालय से उतर कर मैदानों में आ जाती तो हम सब कारखानों में हड़ताल करा सरकार को निष्क्रिय कर देते और यहां क्रान्ति हो जाती।"

"और मैं समझती हूं कि आप असफल हो जाते। पंडित नेहरू जी ने अमेरिका और इंग्लैंड को सहायता के लिये आमन्त्रित तो किया ही था। वे यहां आ जाते तो उनके कारखाने यहां शस्त्रास्त्र देते। भारत के किसान यहां की सेना में भरती हो जाते तो यहां क्रान्ति कुचल दी जाती और चीनियों को भगा दिया जाता।"

"और विश्व युद्ध हो जाता। फिर रूस चीन की सहायता करता और वर्तमान बूर्जुआ सभ्यता का समूल नाश हो जाता।"

"यह धमकी कम्यूनिस्ट और चीन तो देते ही। उनका कहना सदा यह रहता है कि रूस और अमेरिका लड़ पड़ें तो एटम बम चलेंगे और मनुष्य समाज विनष्ट हो जाएगा। मैं समझती हूं कि यह धमकी अब प्रभावहीन हो रही है। दोनों बड़ी कौमें यह समझ रही हैं कि एटम बम दोनों के पास हैं और इनका कार्य युद्ध रोकना है। ये चलाने के लिये नहीं हैं और अमेरिका के सातवें बेड़े ने चीन और भारत में युद्ध रोक दिया है।"

सतीश विचार मग्न बैठा रह गया। उसे चुप देख अर्चना ने कह दिया, "ठीक है न? अब आप जाइये और मुझको चीनियों की मूर्खता पर रोने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीजिये।"

"मेरा यह कहना था कि यह विलाप तुम मध्याह्नोत्तर कर लेना। उस समय मैं साहित्यकार सभा में जा रहा हूं। उस समय एकान्त होगा और तुम्हें कोई मना नहीं करेगा।"

"वहां तो मैं भी जा रही हूं। वास्तव में यह गाना वहां गाने के लिये ही तैयार कर रही थी।"

"तो तुम भी वहाँ जाओगी ?"

"क्यों, न जाऊं ?"

"वहाँ विष्णु शर्मा भी आने वाला है।"

"तो फिर क्या हुआ ?"

"हुआ कुछ नहीं। हां, कुछ भी हो सकता है ?"

"क्या कुछ हो सकता है ?"

"मसलन, तुम्हारा उससे विवाह हो सकता है।"

"तो यह नहीं होना चाहिये क्या ?"

"अपनी-अपनी श्रेणी में ही विवाह हो तो ठीक है। वह हिन्दू है।"

"और मैं क्या हूं ?"

"तुम 'प्रोलिटेरियेट' हो। हिन्दू तो सदा शोषक पूंजीपति रहा है।"

"विष्णु शर्मा तो पूंजीपति है नहीं। उसका कोई कल-कारखाना नहीं चलता। एक अध्यापक का लड़का है। लड़कों को प्राइवेट पढ़ा कर निर्वाह करता है और हम तो एक लैंड-लॉर्ड की सन्तान हैं। हमारा जीवन किराये-दारों से मिलने वाले किराये पर चलता है।"

"अर्चना ! तुम कुछ नहीं समझती। हम में और विष्णु में अन्तर है, मैन्टैलिटी (मानसिक अवस्था) का। हम पूंजीपति होते हुए भी अकिंचनों का राज्य और उनके वर्ग की विजय चाहते हैं। यदि अभी तक हम मकानों के किराये पर निर्वाह करते हैं तो यह वर्तमान स्थिति के कारण है। जब यहां वास्तविक समाजवादी व्यवस्था स्थापित होगी, तब हम स्वेच्छा से और प्रसन्नता से यह सब कुछ सरकार को सौंप देंगे। विष्णु तो अपने पास कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

न रखता हुआ भी समाजवादी व्यवस्था के स्थापित होने में बाधा खड़ी करना चाहेगा।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्चना चुप कर रही। सतीश ने उसको चुप देख कह दिया, "देखो अर्चना, अब तुम बड़ी हो गयी हो। शरारतें छोड़ो और आराम से सो जाओ। मुझको मेरा लेख लिखने दो।"

सतीश पलंग से उठा और अपने कमरे में चला गया। वह लेख लिखने के लिये अपना चित्त एकाग्र करने लगा।

: २ :

सतीश और अर्चना सेठ धनंजय की सन्तान थे। दोनों की माता का देहान्त तो तब ही हो गया था, जब अर्चना अभी छोटी थी। सेठ साहब कलकत्ता में आढ़त का काम करते थे और उनका चावल का व्यापार था। बहुत रुपया कमाया था और बहुत व्यय भी किया था, खाने-पीने में, ऐश-आराम में और दान-दक्षिणा में।

सतीश तो इंग्लैंड से पढ़कर आया था। वह अभी पन्द्रह वर्ष का ही था कि विलायत के एक पब्लिक स्कूल में भर्ती करा दिया गया था। स्कूल से वह ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में चला गया। वहां से डिग्री प्राप्त कर वह कानून पढ़ने लन्दन में चला आया और वहां से बैरिस्टर बन भारत लौटा था।

अर्चना सतीश से पांच वर्ष छोटी थी। इच्छा तो उसकी भी थी कि वह पढ़ने विलायत जाये, परन्तु सेठ साहब का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था और वह बीमार पिता को छोड़कर जा नहीं सकी।

सतीश जब विलायत से लौटा तो वह अठारह वर्ष की थी और बी० ए० की प्रथम श्रेणी में पढ़ती थी। सतीश के लौटने के एक मास के भीतर ही सेठ जी का देहान्त हो गया और बहिन-भाई दोनों संसार में अपने को अकेले समझने लगे।

सतीश ने पिता का क्रियाकर्म किया। वह इस झंझट को करना नहीं चाहता था। वह दाह संस्कार के उपरान्त ही सब सम्बन्धियों को, जो इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

निमित्त आये हुए थे। विदा कर देना चाहता था। घर लौटकर उसने अर्चना
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से पूछा था, "तो अब मामा-मामी को विदा कर दूं ?"

"मामी तो कह रही थीं कि वे तेरहवीं करके जाएंगीं। उनका कहना था कि पिता जी वसीयत लिख गये हैं। चौथे के बाद वे उसको सुनना चाहेंगीं।"

"उनका इससे क्या मतलब है ?"

"मामा जी समझ रहे हैं कि मेरे नाम एक बड़ी धन राशि लिखी होगी और फिर उसके अनुसार मेरे लिए घर-वर की खोज करेंगे।"

"वे यह काम क्यों करेंगे ?"

अर्चना मुस्कुराई और चुप कर रही।

"वे मेरे लिये बहू क्यों नहीं ढूंढेंगे ?"

"आपकी बहू के सम्बन्धी तो आपको ढूंढेंगे।"

"ओह ! पर मैं बहू के सम्बन्धियों से ढूंढा जाना नहीं चाहता। न ही मैं चाहता हूं कि मेरे मामी-मामा मेरे लिये कष्ट करें। पत्नी तो चुटकी भर में मिल जाएगी, परन्तु मुझको अभी उसकी आवश्यकता नहीं है।"

"मेरे मन की अवस्था भी तो यही है, परन्तु अभी आज ही जब पिता जी की चिता ठंडी नहीं हुई, मैं अपने निकट सब सम्बन्धियों का, उनकी रुचि के विपरीत कुछ कह कर, अनादर करना नहीं चाहती।

"मेरे मन में तो आया था कि कह दूं, इस काम के लिये आपको कलकत्ता में रहने की आवश्यकता नहीं, परन्तु मेरे मुख से निकला नहीं। मैं चुप रही और वे पिता जी के इच्छा-पत्र की बातें करते रहे थे।"

"और कौन-कौन रह जाने का विचार रखते हैं ?"

"हम सब, जो आये हैं, रहेंगे।" एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा। यह उनका मामा था।

सतीश का मामा कन्हैयालाल पटना का रहने वाला था। वहां उनका अच्छा खासा कारोबार था। कन्हैयालाल के लड़के-लड़कियां थीं। वे नहीं आये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धनंजय की बहिन सुमन और उसका पति घनश्याम भी आये हुए थे। धनंजय के बड़े भाई का लड़का साधुराम और उसकी पत्नी सुमित्रा भी आने वालों में थे। कन्हैयालाल इन सब और कुछ अन्य दूर के सम्बन्धियों से राय कर सतीश से कुछ बातें करने के विचार से उसको ढूंढता हुआ वहां आ पहुंचा था। बहिन भाई में हो रही वार्ता का कुछ अंश उसने कमरे के बाहर खड़े होकर सुना था। जब सतीश ने पूछा कि और कौन-कौन वहां रह जाने का विचार रखते हैं तो वह भीतर आ गया।

सतीश भौंचक्का हो मामा का मुख देखने लगा। उसे इस प्रकार परेशान देख कन्हैयालाल ने कहा, "तो कोई 'प्राइवेट' बात कर रहे थे सतीश ?"

"प्राइवेट तो नहीं मामा जी ! आप सबके विषय में ही अर्चना से पूछ रहा था। कलकत्ता कोई स्वास्थ्यप्रद स्थान तो है नहीं। इस कारण आपके कष्ट की ही बात पर विचार कर रहा था।"

"यह तो हम जानते हैं। हम स्वास्थ्य सुधारने आये भी नहीं। भैया धनंजय से हमारा भी कुछ सम्बन्ध और स्नेह रहा है। हम, मेरा मतलब है मैं और तुम्हारी मामी, पिछले वर्ष जब भैया की अवस्था बहुत बिगड़ रही थी, यहां एक मास तक रहे थे। तब अर्चना समझती थी कि हम उसकी बहुत सहायता कर सके थे।

"हमने श्मशान भूमि में ही यह सुना था कि तुम वहीं सबको बिदा कर देना चाहते थे और चौथे दिन की घोषणा नहीं कर रहे थे। पुरोहित भी कह रहा था कि उसको पूजा-पाठ के लिये नहीं कहा गया। इससे मैं यह जानना चाहता था कि क्या निश्चय है तुम्हारा ?

"देखो सतीश ! भैया का पूर्ण क्रिया कर्म तो होगा। तुम करोगे तो ठीक है और यदि तुम नहीं करोगे तो कोई और करेगा। तुम खर्च दोगे तो यह उचित ही है। अन्यथा सब खर्च मैं करूंगा। बताओ क्या चाहते हो ?"

"पर मामा जी ! इन सब की आवश्यकता है क्या ?"

"हां। हम समझते हैं कि उनकी आत्मा की शान्ति के लिये यह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुछ होना आवश्यक है।

"आत्मा......?" सतीश चुप कर गया। उसको ध्यान हो आया कि वह विलायत में युनिवर्सिटी के छात्र-मंडल से बात नहीं कर रहा। उसका मामा भारत का रहने वाला एक पढ़ा-लिखा मूर्ख है। मूर्ख समाज में रहता हुआ मूर्खता की बात ही कर सकता है। इससे वह आत्मा की हंसी उड़ाता-उड़ाता रुक गया।

अर्चना समझ रही थी कि उसका भाई क्या कहने वाला है। इस कारण वह भयभीत थी कि मामा जी कहीं नाराज़ न हो जाएं। सतीश को चुप देखकर वह बोल उठी, "मामा जी! जो आप उचित समझेंगे वही किया जाएगा, खर्चे की बात नहीं। ईश्वर की कृपा है कि पिता जी ने मेरे नाम बैंक में इतना कुछ तो जमा करा ही रखा है।"

इस प्रकार बात बन गयी। धनंजय कुमार का क्रिया-कर्म विधिवत् और उनकी प्रतिष्ठा के अनुसार हो गया।

चौथे से अगले दिन सतीश ने अपने पिता के कागज-पत्र अपने मामा तथा फूफा के सामने निकाले। उन कागज़-पत्रों में सबसे ऊपर ही एक फाइल में सेठ जी की वसीअत रखी थी।

अचल सम्पत्ति चालीस लाख की थी। नकद और हिस्सों में दो लाख के लगभग था। उस नकद में से एक लाख रुपया सेठ अपनी बहिन सुमन को दे गये थे। पचास हजार अपनी लड़की अर्चना की पढ़ाई और उसके विवाह के लिए था। अचल सम्पत्ति में से दो मकान पांच लाख रुपये मूल्य के और ढ़ाई हजार मासिक की आय के सतीश और अर्चना के नाम थे। विवाह तक वे इसकी आय ले सकते थे। विवाह के उपरान्त एक-एक मकान परस्पर समझौता कर बांट सकते थे। शेष सम्पत्ति का वे एक ट्रस्ट बना गये थे। ट्रस्ट इसकी आय को धर्मार्थ व्यय कर सकता था। कार्य का निर्णय ट्रस्ट को करने का अधिकार था। ट्रस्ट में केवल यह शर्त थी कि ट्रस्टी अपने लिये इसमें से एक पैसा नहीं ले सकेंगे और निर्णय सर्व सम्मति से किया करेंगे। ट्रस्ट में परिवार के तीन सदस्य सम्मलित थे। कन्हैयालाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घनश्याम और सतीश।

सेठ धनंजय का देहान्त हुए पांच वर्ष हो चुके थे, परन्तु अभी तक ट्रस्टी सर्व सम्मति से यह निर्णय नहीं ले सके थे कि किस धर्म कार्य के लिये सेठ जी का धन व्यय किया जाये। ट्रस्ट में एक मत होने में बाधा सतीश था। वह उन कार्यों को धर्म मानता ही नहीं था, जिनको कन्हैयालाल और दूसरे ट्रस्टी धर्म समझते थे।

अर्चना का विवाह भी अभी नहीं हुआ था। वह विवाह पर राजी ही नहीं होती थी। दोनों भाई-बहिन साहित्य रचना में रुचि रखते थे। भाई लेख और कहानियां लिखा करता था और बहिन कविता करती थी।

अर्चना और सतीश विद्यार्थी जीवन से ही प्रगतिशील लेखक माने जाते थे और यह अनुमान लगाया जा रहा था कि दोनों कम्यूनिस्ट पार्टी के टिकटधारी सदस्य है।

दोनों ने एक भाड़े का फ्लैट लिया हुआ था। उसका एक सौ रुपया भाड़ा देते थे। इसमें तीन कमरे थे। रसोई, गुसलखाना था और एक छोटा सा स्टोर था। दो कमरे सोने के काम में आते थे और एक बैठक घर के रूप में प्रयुक्त होता था।

जब से चीन ने भारत पर आक्रमण किया था, कम्यूनिस्टों में मत-भेद उत्पन्न हो गया था। कुछ यह समझते थे कि चीन के आक्रमण से जन-साधारण में कम्यूनिज़म के विपरीत भावना बढ़ गयी है और जब तक हिमालय के क्षेत्र पर चीन का अधिकार रहेगा, कम्यूनिज़म के विरोध का एक कारण बना रहेगा। अन्य यह समझते थे कि चीन का आक्रमण ठीक समय पर ही था। यह तो नेहरू जी जो अपने को कम्यूनिज़म का समर्थक कहते हैं, वास्तव में कम्यूनिज़म के विरोधी सिद्ध हुए हैं। उनमें वास्तविक कम्यूनिस्ट मनः स्थिति नहीं है। राष्ट्रीयता तो दुनिया के मज़दूरों के एक होने में विरोधी है और नेहरू ने चीनी आक्रमण को मज़दूरों का आक्रमण न मान एक विदेशी सत्ता का आक्रमण माना है। इससे लोगों का कहना था कि चीन ने भूल नहीं कि यह तो नेहरू जी ने दगा की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्यूनिस्टों को यह वर्ग, धीरे-धीरे, चीन का पक्षपाती होता जाता था। दूसरा वर्ग रूस का पक्षपाती हो गया था। रूस और चीन में मतभेद उत्पन्न हो गया था। यह मतभेद नेतागिरि का था अथवा एक चाल थी, कहना कठिन है। कुछ भी हो, परिणाम यह हो रहा था कि जनता, मन से कम्यूनिज़म के विरुद्ध तथा चीन की विरोधी होती जा रही थी।

अर्चना रूसी नीति को ठीक मानती थी। और यह पंडित नेहरू को रूस का समर्थक घोषित कर रही थी। सतीश चीनी रंग के कम्यूनिज़म का समर्थक था।

कलकत्ता में एक साहित्य सभा थी और दोनों उसके सदस्य थे। इसमें कुछ साहित्यकार तो भाव विहीन अर्थात 'शुद्ध साहित्यिक' माने जाते थे। ये साहित्यकार प्रायः शृंगार प्रधान लेख एवं कविता लिखते तथा कहा करते थे। कभी चोर डाकुओं के शौर्य पर भी कविताएं करते थे। इनके अतिरिक्त कुछ साहित्यकार ऐसे भी थे, जो धार्मिक विचार के थे। ये बहुत ही अल्प संख्या में थे। इनकी हंसी उड़ाने में कम्यूनिस्ट और शुद्ध साहित्यिक एक मत हो जाया करते थे। कम्यूनिस्ट विचार के लोग शुद्ध साहित्यिकों के जड़वादी और यौन-विषय-प्रधान साहित्य के प्रशंसक रहते थे और इसके बदले में शुद्ध साहित्यिक कम्यूनिस्टों की कम्यूनिज़म के भावों से परिपूर्ण साहित्य को मन्त्र-मुग्ध हो सुना करते थे। धार्मिक विचार के साहित्यकार तो दुहरी मार में रहते थे और धीरे-धीरे वे सभा छोड़ते जाते थे।

धर्म की महिमा गान करने वाले साहित्यिकों में विष्णु शर्मा एक था जो दोनों पक्षों की हंसी सहता हुआ, इन दोनों पर प्रहार करने से चूकता नहीं नहीं था। कभी-कभी तो उसके विपरीत कटुता इतनी तीव्र हो जाती थी कि उसके विचार के लोग भी डर कर चुप कर जाते थे।

इन्हीं साहित्कारों की सभा में जाने की तैयारी सतीश और अर्चना कर रहे थे।

: ३ :

सभा का अध्यक्ष सभा के दिन के लिये ही चुना जाता था। उस दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-M
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश अध्यक्ष बनाये जाने की आशा कर ही सभा में आया था। इसी कारण वह सबसे आगे मंच के समीप जा बैठा था। वहां विष्णु शर्मा पहिले ही बैठा था। लोग आ रहे थे और बैठते जाते थे।

सतीश के आने पर विष्णु ने पूछ लिया, "अर्चना जी नहीं आ रहीं क्या ?"

"मैं घर से नहीं आ रहा। इस कारण कह नहीं सकता।"

"वे घर पर थीं क्या ?"

"होनी चाहियें। यदि न आयीं तो आप को निराशा तो बहुत होगी। आपकी धर्म-संस्कृति की कूक की दाद देने वाला कोई नहीं होगा।"

"आप जो हैं ?" विष्णु शर्मा ने व्यंगात्मक भाव से कहा, "भैया सतीश ! जितना तुम मेरा विरोध करते हो उतना ही मैं उसको अपने भावों के प्रभावों का सूचक मानता हूं। जब चोट गहरी होती है तो चुटियाने वाला जोर से चिल्लाता है।"

"परन्तु उस चोट से परास्त तो नहीं हो जाता।"

"कम्यूनिस्ट परास्त नहीं हुआ करते। वे तो समाप्त ही हुआ करते हैं।"

"क्या मतलब ?" सतीश को क्रोध चढ़ने लगा था।

"देखो सतीश, इस सभा में हमारे शस्त्रास्त्र तो साहित्यिक कौशल ही हैं। मुक्का-मुक्की नहीं अन्यथा काली के भक्त भी खड्ग उठा लायेंगे।"

"उस काली-कलूटी से बहुत प्रेम हो रहा है, शर्मा ?"

"प्रेम तो किसी अन्य से है। हां, मां के चरणों में श्रद्धा और निष्ठा कुछ अधिक होती जाती है। यह आप सब की कृपा ही है।"

सभा के संयोजक ने मंच पर रखी घंटी बजाई। यह सभा के समय होने की सूचना थी। विष्णु ने सतीश से कहा, "आज तो भैया, तुमको अध्यक्ष बना रहा हूं।"

"क्यों ?"

विष्णु जवाब न दे खड़ा हो गया। जब वह खड़ा हुआ तो अर्चना सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Gurukul ... Haridwar 168915

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन में प्रवेश करती दिखाई दी। विष्णु शर्मा ने कह दिया, "मैं आज की सभा के अध्यक्ष पद के लिये अर्चना देवी जी का नाम उपस्थित करता हूं।"

एक बंगाली लड़की चन्द्रिका ने उठ कर विष्णु के प्रस्ताव का समर्थन कर दिया तो संयोजक ने अर्चना देवी को आकर मंच पर विराजमान होने का निमन्त्रण दे दिया।

अर्चना विस्मय कर रही थी कि किसी ने विरोध क्यों नहीं किया। वह लज्जा से सकुचाती हुई मंच के समीप आयी तो सभा के नियमानुसार अध्यक्ष के सामने पुष्प गुच्छ और अंजुलि भर पुष्प रख दिये गये।

विष्णु अपने स्थान पर बैठा तो सतीश ने माथे पर त्यौरी चढ़ा कर पूछ लिया, "क्या मतलब है इसका ?"

"मतलब स्पष्ट है सतीश ! मैं अर्चना जी को आप पर उपमा देता हूं।"

"वह लड़की है इसलिये।"

इस समय संयोजक ने 'आर्डर, आर्डर' की घोषणा कर दी। कुछ थे, जो सतीश को अध्यक्ष बनाने आये थे। वे एकाएक अर्चना के नाम के प्रस्ताव पर निश्चय नहीं कर सके कि क्या करें ? यदि कोई कम्यूनिज़म विरोधी होता तो वे विरोध करने में एक क्षण भी न लगाते, परन्तु यहां तो कम्यूनिस्टों में पहिले ही भेद बढ़ रहा था। इस पर भी वे विष्णु शर्मा की चतुराई और सतर्कता पर प्रसन्न नहीं थे और परस्पर बातें करने लगे थे।

संयोजक के आर्डर आर्डर कहने पर सभा में शान्ति हो गयी और अर्चना ने बैठे-बैठे ही कहना आरम्भ कर दिया।

"मैं अपने को इस अध्यक्ष पद के योग्य नहीं मानती। इस सभा में मेरे गुरुजन और नगर के ख्यातिप्राप्त तथा अनुभवी कलाकार बैठे हैं। उनकी उपस्थिति में आयु, अनुभव और योग्यता में अभी मैं बालिका मात्र ही हूं। इस पर भी यदि आपने यह भार मुझ पर सौंपा है तो मैं आपका आदेश पालन करने से इन्कार नहीं कर सकती।

"साथ ही मैं एक निवेदन करना चाहती हूं कि इस साहित्यकारों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सभा में मौन रहने के अतिरिक्त अन्य कोई ढंग नहीं है जिससे कलाकारों की कृतियों को न पसन्द किया जाये। पिछली कुछ सभाओं में हो रहे दंगों की ओर आप का ध्यान आकर्षित कर मैं कहना चाहती हूं कि यदि आपने मुझ बालिका की अध्यक्षता में कुछ वैसा किया तो मैं सभा विसर्जित कर दूंगी और उठ कर चली जाऊंगी।"

अर्चना के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने का यह पहिला अवसर था। इसलिए सब समझते थे कि यह एक स्त्री का स्वाभाविक कथन है। वह समझती है कि रूठ कर वह पुरुषों को नियन्त्रण में रख सकेगी।

अतः पीछे की पंक्ति में बैठे एक सज्जन ने सिर नीचे कर आवाज़ लगा दी "आप के रूठने पर भी मज़ा आयेगा।"

सब हंसने लगे। संयोजक ने सब से पहले एक शिशिर कुमार से एक रेखाचित्र पढ़ने को कहा। सभा में शान्ति हो गयी। शिशिर कुमार अपने रेखा चित्रों के लिये विख्यात थे।

शिशिर कुमार ने खड़े हो कर कुमारी अर्चना को नमस्कार कर अपना बंगला भाषा में लिखा गया जाविस्को में दंगल का चित्र पढ़ना आरम्भ कर दिया। बीस मिनट तक उपस्थित जन मन्त्र-मुग्ध हो शिशिर कुमार के उस ऐतिहासिक दंगल का चित्र-चित्रण सुनते रहे।

पूर्ण वृत्तान्त का वर्णन कर जब वक्ता ने कहा, "भारत के मस्तक को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विजय-श्री से विभूषित करने में गामा पहलवान का कार्य बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुर से तथा श्री जगदीश वसु से कम महत्व का नहीं था। ये बौद्धिक विजेता थे और गामा शारीरिक विजय प्राप्त करने वाला था। उस समय दर्शक गण 'भारत तेरी सदा जय हो' अनायास कहने लगे थे।

तालियों की गड़गड़ाहट में शिशिर कुमार बैठा तो संयोजक ने सतीश कुमार का आह्वान कर दिया। सतीश ने खड़े हो कर कह दिया।

"मैं आज केवल मौखिक रूप में ही दो वाक्य कह सकूंगा। मैं सभा के लिये एक कहानी लिख रहा था कि मेरे बगल के कमरे से एक बेतुकी कविता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाने वाली ने मेरे मस्तिष्क को इतना बिगाड़ दिया कि मैं एक पंक्ति भी लिख नहीं सका। जय हो बेतुकी कविता लिखने वाली की। जय हो बेतुकी बेहूदा बातों को कोकिल कण्ठ से मुखरित करनेवाली की। जब नारी के हाथ से कड़वा पेय भी वितरण हो तो वह सुमधुर सुवासित माधवी मान कर ही लोग पी जाते हैं। जय हो इस प्रकृति की जिसने जगत् को रसमय बनाने के लिये नारी का निर्माण किया है।"

सब हंसने लगे और सतीश इस हंसी के बीच बैठ गया।

अर्चना को ऐसा समझ आया कि उसका भाई उस पर व्यंग कस रहा है। उसको प्रातःकाल की बात स्मरण हो आयी। प्रायः सभासद यह समझ रहे थे कि सतीश अपने अध्यक्ष न चुने जाने पर अपनी बहिन को जली कटी सुना रहा है। कुछ शुद्ध साहित्यकार थे वे अर्चना के मुख पर लाली देख समझ रहे थे कि सतीश ने सब उपस्थित स्त्रियों पर व्यंग कसा है और इस कारण अर्चना को यह रुचिकर नहीं लगा। अर्चना भी लाल मुख से दूसरों के साथ हंस रही थी।

इस पर एक गजेन्द्र भट्ट को आगे आने को कहा गया। भट्ट जी ने मंच के समीप आकर एक कण्ठस्थ की हुई कविता सुना दी। उसने सुनाया—

नारी की रमणीयता के रसिक गण सभी,
भेद यह जान कर रस महा पाते हैं।
गाली से या चुटकी से, व्यंग भरी ताड़ना से,
अथवा मीठी बातों से प्रेम जतलाते हैं।।
कवि ललित भाषा में, उसके पीन अधरों,
नितम्ब, पयोधरों की शोभा जब गाते हैं।
भाग्यवान नारियों की क्रोध अथवा लज्जा से,
पुलकित, शोभा रसिक तब देख पाते हैं।।

स्त्री वर्ग के अतिरिक्त सब ठहाका मार-मार हंसने लगे। अर्चना को यह समझ आया कि एक स्त्री के अध्यक्ष बनाये जाने का बदला ये लोग ले रहे हैं। इस पर भी वह सब की हंसी में सम्मिलित थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित गणों में से आवाज़ें आने लगीं, "और ! और !!" भट्ट जी ने एक छंद और सुना दिया :—

इस रसमयी सृष्टि में श्रेष्ठतम नारी है।
वह बाल हो, युवती, वृद्धा, सदा यह सुहाती है।।
चलने से मोरनी सी हंसने से हंसनी सी,
मुक्ताहार अधरों में रहती छुपाती है।
विशाल भाल उज्ज्वल, पर भृकुटि कमान,
से नैनों के तीर वह तीक्ष्ण चलाती है।
घायल कविवर के त्राहि-त्राहि बोलने से,
पीड़ा तो मधुर टीस ही समझ आती है।।

"ओह !" सतीश के मुख से निकल गया। सभा भवन श्रोतागणों की वाह-वाह से गूंज उठा। गजानन्द बैठा तो फिर एक संतोष कुमार दत्त मंच के समीप आये। उसने गाया—

उदय हो रहे सूरज की बेला में कुछ की,
अखियां चुंधियाई क्यों समझ नहीं आया था।
चला आ रहा विप्लव क्रोध भरी आंखों से,
सब काल के जुल्म का पड़ा हुआ साया था।।
कोटि-कोटि कण्ठ के कलरव से जाग पड़े,
भैरव ने ताण्डव यह भयंकर मचाया था।
छायी थी लाली जब हिमाचल के भाल पर,
पूंजीपति मन में हो व्याकुल घबराया था।।

सभा भवन के बहुत बड़े भाग से तालियों का कलरव सुनायी दिया और संतोष प्रसन्न वदन बैठ गया। इस पर एक अज्ञात सज्जन उठे और संयोजक से बोलने की आज्ञा मांगने लगे। संयोजक ने पूछ लिया, "क्या है, गद्य अथवा पद्य ?"

"अतुकान्त कवित्त है।"

"हो जाये ! हो जाये !! की आवाज़ें आयीं तो संयोजक ने स्वीकृति दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दी। साथ ही कह दिया, "अपना परिचय भी दे दीजिये।"

ये नये सज्जन बोले, "परिचय दूंगा, मगर पीछे। वह भी अगर, तब भी, आपकी इच्छा हुई तो। पहिले अपना कलाम कहता हूं।

'हिमालय लाल है
सागर हिन्द में भी जल है रक्ताभ
भूतल पर लाली है उषा की झलक सी
फिर भी सोने के अंडे वाली मुर्गी के दो बूंद रक्त
पाने को छुरी चलाई है।
चन्दन के जंगल को कोयले की लालसा में
जला भस्म किया, सदियों की मेहनत में
डाली खटाई है।
यह सब है,
बेहूदा है,
पागलपन है,
बेतुका है।
लाली ने मिलाया हाथ हरियाली से
पाक-चीन मेल से,
मकसद क्या है?
मतलब क्या है?"
रहस्य क्या है?
क्या मेल है लाल और हरे रंग का
भूसला बन गया है रंग। भला इसमें देखो,
क्या भलाई है।
हो रहा था अग्रवानी हिन्द अपने आप ही
ले छुरी चढ़ आये।
खूंखार सांडों को बुला लिया फजूल में
चिथड़ा लाल हिला कर भड़का दिया फजूल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बेबस हो अटक गये,
ऊँचाइयों पर
खाइयों में।
सालों ने बेसब्री में तबाही
खूब मचाई है।

"पसन्द है। बहुत पसन्द है।" एक आवाज़ आई।

"बेतुकी पसन्द है।" एक अन्य आवाज़ आयी।

कवि बैठने लगे तो संयोजक ने याद दिला दिया, "कृपया परिचय...।"

बोलने वाले कवि बैठते-बैठते रुक गये और बोले, "संयोजक महाशय, परिचय मांगते हैं।

"मेरा नाम बेतुकानन्द है। मैं बेतुकी कविताएं ही किया करता हूं और इस बेतुकी पसन्द से प्रसन्न होता हूं।"

इस पर सब हंसने लगे। बेतुकानन्द बैठ गये। अब संयोजक विष्णु शर्मा की ओर देखने लगा। उसने कहा, "कुछ और आने दीजिये। मैं भागा नहीं जा रहा। परन्तु जब अर्चना ने उसकी ओर देखा तो वह खड़ा हो गया। वह एक कण्ठस्थ कविता ही कहने लगा। उसने सुनाया—

अतुकों में तुक बैठाने में, सज्जनता परखी जाती है।
बिछुड़ों में मेल कराने में, पहिचान ज्ञान की आती है॥
सूझ बूझ की बात यही है, सब में आत्म तत्त्व भरा है।
सुख दुख सबको होता ही है, न मन वेदना भाती है॥
भूख-प्यास सरदी से सब ही, एक समान दुःखी होते हैं।
फिर एक समान सभी में ही वह आत्मा एक बताती है॥
गोरे अथवा पीले में क्या, कुछ भेद दिखाई देता है।
गात से नहीं आत्मा से ही, मानवता परखी जाती है॥
जो सबको अपने जैसा ही व्यवहार मान कर करते हैं।
उनको ही आत्मदर्शी समझो गुण दुनिया उनके गाती है॥
जो देश राग रंग रूप से, है भेद मानने चल बैठे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है असुर-हीन आत्मा उनके, हित सिद्धि नहीं बन पाती है।
कर्म भेद से मानव परखो, असुरो से तुम मत मेल करो ।।
असुरों के तो लिए भवानी वह खड्‌डा सदा चलाती है ।।

आवाज़ें आने लगी, "तुकबन्दी खूब है। बेतुकी के उपरान्त तुकबन्दी का कमाल भी देखा।" हा···हा···इत्यादि।

विष्णु शर्मा बैठा नहीं। वह इस प्रकार के स्वागत की आशा ही करता था। संयोजक अगले व्यक्ति को बुलाने के लिए खड़ा हुआ तो विष्णु शर्मा ने हाथ के संकेत से कह दिया, "अभी समाप्त नहीं हुई।"

"ओह !" कह संयोजक बैठ गया। विष्णु शर्मा ने सभासदों से कहना आरम्भ कर दिया, "मुझको उनसे पूरी सहानुभूति है जो समझे थे कि मैंने अपना कथन समाप्त कर दिया है और प्रसन्न हो रहे थे। मैं उनसे क्षमा मांगता हूं। मेरी कविता अभी समाप्त नहीं हुई। अतः थोड़ा धैर्य धारण करिये। दो-चार छन्द और हैं।"

वह उसी लय में गाने लगा—

"नारी अधर नितम्ब नहीं है, इसकी पहिचान नहीं वक्षोज।
ये तो साधन उस मतलब के, है जिससे उसका पूर्ण ओज ।।
नारी सकल जगत की मां है, रचना करना इसका काम।
इस रचना के सहज करन को, प्रभु ने इसको दिया ललाम ।।
अंधों को तो इसमें केवल, हैं दीख रहे नितम्ब महान्।
नारी की अद्‌भुत महिमा को, क्या जाने ये मूर्ख नादान ।।
सकल जगत की भरी मधुरता, रहता इसके मन पावन में।
नहीं सके कर इसका वर्णन, ये अपनी कविता नूतन में ।।
जड़वादी तो बैठे से हैं, सागर तट पर कंकड़ बिनते।
गहराई को नहीं गये पर रहते हैं ये लहरें गिनते ।।
भैंसा-बुद्धि के लिये भोजन, खुरली भर भूसा ही होगा।
पानी में से दूध का दूध मुक्ताहारी हंस करेगा ।।

इस कविता को विष्णु शर्मा सहज ही नहीं पढ़ सका। पग पग पर व्यंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसे गए। जब जड़वादियों की महिमा गान होने लगी तब तो सभा भवन के एक कोने से सीटियां बजने लगीं। विष्णु शर्मा ने अपनी कविता समाप्त की तो एक बोल उठा, "भैंसा-बुद्धि की जय हो।"

बहुत कठिनाई से शान्ति स्थापित हुई। संयोजक अलग नाम बोलने ही लगा था कि सतीश खड़ा हो गया और बोला, "अध्यक्ष महोदय, मैं एक सुझाव उपस्थित करना चाहता हूं।"

अर्चना ने भाई की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा तो वह कहने लगा, "मेरा यह सुझाव है कि कविताओं में गालियां देने वालों को सभा से बाहर निकाल दिया जाए।"

सभा में हां! हां! और ना! ना! की आवाज़ें कसी जाने लगीं।

अर्चना ने हाथ खड़ा कर सबको शान्त करते हुए कहा, "आपको विदित है कि हमारी सभा में एक समालोचक रहते हैं। वे अध्यक्ष के वक्तव्य के लिए रिपोर्ट तैयार करते हैं। मैं उनकी रिपोर्ट को देखने के उपरान्त ही अपनी सम्मति दे सकती हूं।

इस पर एक लड़की जो भवन के एक कोने में बैठी थी, उठ कर बोल पड़ी, "एक सुझाव मेरा भी है।"

"हां, तुम भी बता दो।" अध्यक्षा ने कहा।

"गाली की परिभाषा भी होनी चाहिए। 'बेतुकी कविता वाली' 'बेहूदा बातों को कोकिल कंठ से मुखरित करने वाली', इत्यादि भी गाली मानी जानी चाहिए। यदि भैंसा और मूर्ख विशेषण प्रयोग करने वाले को भवन से निकालने की बात हो तो बेहूदा शब्द का प्रयोग करने वाले को भी भवन से निकल जाने की आज्ञा होनी चाहिये।"

"और मृग नयनी के तीरों से घायल होने वाले कविवर को भी।" एक और लड़की उठकर रोष में बोल बड़ी।

जब लड़कियां बैठ गईं तो पांच मिनट तक भवन में हो हल्ला रहा। इस दिन विष्णु के सहायक भवन में कम थे। परन्तु आज लड़कियां और स्त्रियां उसका पक्ष ले रही थीं। उसने नारी की महिमा गान की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्चना स्वयं भी आज विष्णु के लिए सहानुभूति से भरी हुई थी। इसी कारण उसने पांच मिनट तक स्त्रियों और पुरुषों में हो रहे विवाद को चलने दिया। जब शान्ति हुई तो फिर साहित्यिक वार्त्ता आरम्भ हो गई।

: ४ :

कार्यक्रम की समाप्ति पर समालोचक की समालोचना अर्चना के सम्मुख आई और उसने उसको पढ़ कर सुना दिया। समालोचक महोदय ने लिखा था, "आज की सभा में पहली सभाओं से अधिक शान्ति रही और वक्ता तथा श्रोतागण शिष्टता की सीमा में रहे।"

इस पर सभासदों ने नो-नो और यस-यस की आवाज़ें लगाई। अर्चना मुस्कराती हुई आगे पढ़ने लगी—"भट्ट जी की कविता मैटिरयलिस्टिक विचार धारा की प्रतीक थी। परन्तु एक जड़वादी के मन में भी टीस उठी है। वह टीस भी मीठी है।"

अब तो भवन तालियों से गूंज उठा। अर्चना ने समालोचना पढ़नी जारी रखी। उसने आगे पढ़ा—

"भट्ट जी के जड़ मन में वेदना उत्पन्न करने का सौभाग्य नारी को ही मिला है।"

पुनः तालियों की गड़गड़ाहट हुई। अर्चना पढ़ती गई—"लाल हिमालय और लाल विप्लव तो वस्तु-स्थिति है। इसकी उपयोगिता पर और इसके औचित्य पर मतभेद है। इस कारण दोनों कविताएं अच्छी तुकवन्दी होने पर भी इसके औचित्य पर प्रकाश नहीं डाल सकीं। समालोचक को इसमें यही कहना है।

"सतीश जी और कुमारी चन्द्रिका के सुझावों को व्यर्थ समझ मेरा अपना सुझाव है कि कविताओं और लेखों में व्यंगात्मक भावों के आने की छूट होनी चाहिए। इसमें सभ्यतापूर्ण ढंग से कटाक्ष करने की स्वीकृति होनी चाहिए।

"सौन्दर्य वर्णन के समय नारी सदा उपमा योग्य रही है। इनमें नारी का अपमान नहीं, वरंच मान है। हां, नारी के सौन्दर्य की गहराई तक कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कितना पहुच पाया है, दूसरी बात है। विष्णु जी का कहना सर्वथा ठीक है कि केवल शारीरिक सौन्दर्य वर्णन से नारी का विवरण अधूरा ही है।

"परन्तु भट्ट जी ने जो देखा है उसको बहुत भली प्रकार वर्णन कर दिया है। यह भी अच्छा ही है कि जितना नहाये उतना पुण्य।"

अर्चना ने समालोचना पढ़ नियमानुसार अपनी कविता अंत में पढ़ दी। अध्यक्ष की कविता सदा समालोचक की समालोचना का विषय नहीं होती थी। कविता वही थी जिसको सतीश ने बेतुकी और बेहूदा कहा था। सदा की भांति अर्चना ने गाकर सुनाया—

है बौर कहां, अखियां उघार।

अर्चना का स्वर अति मीठा था। अतः सब ने शान्त हो सुना और रस पान किया

सभा भवन खचाखच भरा हुआ था। सभा विसर्जन होने पर भीड़ कम हो जाने की प्रतीक्षा में अर्चना एक ओर खड़ी हो गई। सतीश विष्णु को कह रहा था,'आज तो बच गये हो, विष्णु! अर्चना का धन्यवाद करो।'

विष्णु मुस्कुराता हुआ अर्चना की ओर देख रहा था। अर्चना ने सुना तो कह दिया, "हमारी सभा की समालोचना सदा बहुत ही युक्ति-युक्त होती है। उसको निष्पक्ष ही कहना चाहिए।"

"तो विष्णु ने गाली नहीं दी क्या ?"

"भैया! नहीं। उसने विचार-धारा की निन्दा की है।"

"यह निर्णय भी समालोचक का ही है क्या ?"

"यह उससे पूछ लो।"

सतीश आज अध्यक्ष बन विष्णु शर्मा को अपमानित करने के विचार से आया था। उसकी इस पूर्ण योजना को विष्णु ने अस्त-व्यस्त कर दिया था। इस कारण वह चिढ़ा हुआ था। वह समालोचक नरेशचन्द्र चटर्जी की ओर घूम गया और पूछने लगा, "चटर्जी महोदय, अंधा और मूर्ख क्या गाली नहीं है ?"

चटर्जी वकील था। उसने बात को हंसी में उड़ाने के लिए कह दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"सभा का काम मैं फीस के बिना करता हूं, परन्तु सभा समाप्त हो चुकी है और मेरा निःशुल्क काम भी समाप्त हो चुका है। फीस दो तो राय दूंगा।"

"क्या फीस है, राय देने की ?"

"चाय पार्टी। जिसमें मैं, अर्चना देवी, विष्णु शर्मा और भट्ट जी आमन्त्रित हों ?"

अर्चना हंस पड़ी। उसने हंसते हुए कहा, "पर मैं क्यों ?"

"सतीश बाबू से मिलने वाली फीस की राशि बढ़ाने के लिए।"

"उसके लिए तो श्रीमती चटर्जी अधिक उचित होगी।"

"ओ ! हां ! यह तो मैं भूल ही गया था। चाय पार्टी में चार ठीक नहीं रहते। पांचवीं अनिमा चटर्जी होगीं।"

सतीश ने हसते हुए कहा, "अनिमा आती है तो पार्टी स्वीकार है। बताइए, कहां ?"

"ग्रीन होटल में।"

"ठीक है। कल सायं पांच वजे।"

चटर्जी ने भट्ट और विष्णु को भी निमन्त्रण दे दिया। विष्णु समझ रहा था कि वकील साहब ने शाही दंगल का आयोजन कर दिया है। वह ऐसे अवसरों से भागता नहीं था। उसने पूछ लिया, "निमन्त्रणदाता सतीश बाबू हैं अथवा चटर्जी साहब ?"

चटर्जी ने कह दिया, "सतीश तो फीस दे रहा है। मैं वह फीस चाय पार्टी में व्यय कर रहा हूं। इस कारण निमन्त्रणदाता मैं हूं।"

सब हंसने लगे। विष्णु इत्यादि चले तो सतीश ने पूछ लिया, "अर्चना, मेरे साथ मोटर गाड़ी में चलोगी ?"

"जी नहीं ! मैं विष्णुजी के साथ जा रही हूं।"

"कहां ?"

सतीश ने विष्णु की ओर देखा तो वह बोल पड़ा, "यह मैं अर्चनाजी से राय कर ही बता सकता हूं। हम रात का खाना इकट्ठे खा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु में यह गुण था कि वह उत्तर देने में सदा सतर्क रहता था। विष्णु और अर्चना में रात का खाना इकट्ठे लेने का कोई निर्णय नहीं था। वह सीधा अपने घर मां की सेकी रोटियां खाने जा रहा था। परन्तु एकाएक अर्चना को यह कहते सुन कि वह उसके साथ जा रही है, उत्तर उसके मस्तिष्क में तैयार था और सतीश के "कहां" पूछते ही उसने उत्तर दे दिया।

सतीश ने अर्चना से ही पूछा, "कब तक घर पहुंच जाओगी ?"

"यह खाने के उपरांत ही निर्णय होगा। पीछे का कार्यक्रम निश्चित नहीं है।"

सतीश की चिढ़ अभी मिटी नहीं थी। उसने कह दिया, "यह कुछ ठीक प्रतीत नहीं हो रहा।"

"इस पर कल प्रातःकाल विचार कर लेंगे।"

"अच्छी बात।" सतीश हाल से निकल अपनी मोटर में सवार हो घर को चल दिया।

अर्चना और विष्णु इकट्ठे हाल से निकले। सड़क के किनारे खड़े हो टैक्सी की प्रतीक्षा करते हुए अर्चना ने कहा, "विष्णुजी ! आपने मेरी जान छुड़ाई है। इसके लिए धन्यवाद है।"

"जान छुड़ाई ? क्या मतलब ? कोई जान लेने वाला था क्या ?'

"हां, भैया मेरे अध्यक्ष बनने पर नाराज़ हैं और वे अपनी नाराज़गी प्रकट करने वाले प्रतीत होते हैं।"

"तो इससे जान जाने का तो भय नहीं हो सकता। भला इसमें आपका क्या दोष था ?"

"दोष तो आपका था। आपने मेरा नाम प्रस्तावित किया और मेरा दोष यह था कि मैंने अध्यक्ष बनने से इन्कार नहीं किया।"

"परन्तु आप इन्कार क्यों करतीं ?"

इस समय एक खाली टैक्सी सड़क पर से गुज़री तो अर्चना ने हाथ दिखा कर रोक ली। उसने विष्णु से पूछा, "कहां चलेंगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं तो आपको अपने घर ले चलना चाहूंगा। मां ने खाना बनाया होगा।

"मेरे लिए भी ?"

"थोड़ा-थोड़ा सब कम खायेंगे तो आपके लिए भी हो जायेगा। देश का दुर्भाग्य है कि कोई भी अतिथि को खिलाने के लिए बनाकर तैयार नहीं रख सकता। यह समाजवाद का परिणाम है।"

अर्चना ने बात बदल दी। दोनों टैक्सी में बैठ रहे थे और टैक्सी वाला उनकी ओर देख रहा था कि कहां चलने को कहते हैं। विष्णु के कहने से पूर्व ही अर्चना ने कह दिया, "ग्रीन होटल !"

टैक्सी चली तो अर्चना ने पुनः कहा, "किसी अन्य दिन आपकी माता जी की बनी रोटियां खाने चलूंगी। आज नहीं।"

: ५ :

अर्चना के मस्तिष्क में सतीश के इस कहने ने हलचल मचा दी थी कि उसका विष्णु से विवाह भी हो सकता है। इससे पूर्व वह विष्णु से मिलती थी, बातें किया करती थी, परन्तु दोनों का विवाह हो सकता है, उसने कभी विचार नहीं किया था।

जब सतीश लेख लिखने के लिए चला गया तो वह विचारने लगी कि यह विवाह हो सकता है क्या ? हो क्यों नहीं सकता। भैया का कहना है कि वे दो पृथक्-पृथक् श्रेणियों के प्राणी हैं, इस कारण उनका विवाह ठीक नहीं। उसका मन कहता था कि श्रेणी-भेद से विवाह क्यों ठीक नहीं ? श्रेणी का भला विवाह से क्या सम्बन्ध हो सकता है ? जब सभा में दो श्रेणी के प्राणी बैठ सकते हैं तो घर-गृहस्थी में क्यों नहीं ? परन्तु वह अनिश्चित मन थी। इससे उसके मन में अन्य अनेकानेक प्रश्न उत्पन्न होने लगे। क्या विवाह करना ही चाहिए ? क्या विष्णु से विवाह हो सकेगा ?

आज अध्यक्ष पद के लिए विष्णु का प्रस्ताव उसको भैया के संशय की पुष्टि करता प्रतीत हुआ। उसको समझ आया था कि भैया ने अवश्य विष्णु के व्यवहार में कुछ देखा होगा, जिससे उनको विष्णु के मन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कल्पना हुई होगी। अध्यक्ष पद पर आसीन वह किसी दिन विष्णु के मन की बात जानने का विचार कर रही थी। इस पर भट्टजी पर विष्णु का कटाक्ष। उसका स्त्रियों पर लिखी कविता का फूहड़ प्रकट करना और फिर यह कहना कि जड़वादी सागर तट पर बैठे कंकड़ बटोर रहे हैं—उसके मन में कई प्रश्न उपस्थित करने लगे थे। इस पर भी उसके मन में इतनी जल्दी ही संशय निवारण के लिए अवसर मिल जाने की आशा नहीं थी। यह अवसर तो सतीश के माथे पर त्यौरी ने उसको दिया था। वह समझ रही थी कि रात भोजन के समय और सोने के समय सतीश का लैक्चर सुनना पड़ेगा। वह उसके मन की बात तो जान चुकी थी। उस लैक्चर को वह आ रही मुसीबत ही समझ रही थी।

इस समय उसको विष्णु सहारा मिला। पहले तो वह डर रही थी कि वह कह न दे कि वह तो कहीं अन्यत्र जा रहा है, परन्तु जब विष्णु ने कहा कि वह अर्चना से राय कर ही बता सकता है कि कहां खाना खाने जाएंगे, उसकी जान में जान आई।

अब टैक्सी में बैठी वह विचार करने लगी कि किस प्रकार उससे पूछे। अपने विवाह के विषय में बात करने में उसको लज्जा लगने लगी थी। विष्णु ने अर्चना को चुप देख बात उसकी कविता के विषय पर आरम्भ कर दी। उसने कहा, "अर्चनाजी, आपकी कविता, रचना के विचार से तो एक अच्छी कृति है। परन्तु यह प्रमाद-सूचक है। इसमें मानवता को आगे ले जाने के लिए कुछ नहीं और कवि जो परमात्मा का रूप ही होता है, मानव को सो जाने की प्रेरणा देता ठीक नहीं लगा।"

"परन्तु मैं तो परमात्मा हूं नहीं।"

कविता करते समय कवि परमात्मा का रूप ही होता है। परमात्मा को हमारे शास्त्र कवीश्वर अर्थात् महान् कवि मानते हैं। सब श्रेष्ठ कविताएं वह ही कवि के मन में प्रस्फुटित करता है। अंग्रेजी का 'पोयट' शब्द भी ग्रीक शब्द 'प्रौफेट' शब्द का अपभ्रंश है। कवि जब कोई चमत्कार की बात लिखता है तो यह परमात्मा ही उससे लिखाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपकी कविता उसकी लिखाई नहीं हो सकती। इसमें सो जाने के लिए कहा है। परमात्मा तो मनुष्य को, उठ जाग आगे चलने का उपदेश देता है। उतावलों के लिए धैर्य तो ठीक है परन्तु धैर्य का प्रयोजन सो जाना नहीं। धैर्य का अर्थ तो सावधान हो अवसर की प्रतीक्षा करना है।"

"परन्तु कविता की दृष्टि से वह कैसी है ?" अर्चना ने पूछ लिया।

"कविता की ही बात कर रहा हूं, अर्चना ! कविता तो बिना प्रगतिशील भावों के, केवल तुकबन्दी रह जाती है। कभी यह तुकबन्दी के साथ भाव भी रख सकती है, परन्तु जब तक भाव-प्रेरक न हो तब तक यह कविता की सीमा में नहीं आती। इसमें प्रेरणा है सो जाने की। वह कवि की दृष्टि की सूचक नहीं।"

"मैंने तो केवल ये प्रकट करने का यत्न किया था कि चीनी आक्रमण असामयिक है। अभी उसके लिए परिस्थिति अनुकूल नहीं थी।"

"यद्यपि मैं आक्रमण को ठीक समय पर ही समझता हूं, परन्तु आपके दृष्टिकोण को भी 'सो जाने' से प्रकट नहीं किया जा सकता। मैं यदि आपके स्थान पर लिखने वाला होता तो कुछ इस प्रकार लिखता—

अधीरता नहीं गम्भीरता चाहिये सफलता पाने को।
पशुता नहीं है, मानवता मनुष्यता के निभाने को॥
विचार प्रसार के करने को जब शस्त्र-अस्त्र चलने लगते।
सर्वनाश उनका होता है जो कहते इन्हें चलाने को॥

"आपके दृष्टिकोण से यह ठीक है परन्तु हम तो ऐसा नहीं मानते। हम तो यह समझते हैं कि जिसकी लाठी उसको भैंस।"

विष्णु हंस पड़ा। हंस कर उसने कहा, "तो आपकी दृष्टि में भारत में सब भैंस और भैंसे ही भरे पड़े है क्या ?"

इस पर तो अर्चना भी हंस पड़ी। हंसते हुए उसने कहा, "मैं तो भैंस नहीं हूं, न ही मैं भैंस-बुद्धि भट्ट जी हूं।"

"और भी बहुत है जो भैंस और भैंस बुद्धि नहीं हैं। उनको समझाने के लिए तलवार नहीं, विचार चाहिये। यदि तलवार का प्रयोग किया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो विरोध भी प्रबल उत्पन्न होगा।"

"मैं विस्मय किया करती हूं कि चीन और रूस में क्या सब भैंसे ही भरे पड़े है। वहां विरोध क्यों नहीं हो सका ?"

"वहां सब भैंस तो नहीं थे। बुद्धिशील लोग उनमें भी थे। इस पर भी उसकी बुद्धि जड़वादियों की सी अधूरी अवश्य थी।

"देखिये अर्चना देवी, रूस में क्रान्ति के पूर्व नेता ईसाई थे अथवा जड़वादी, अनीश्वरवादी थे। ईसाई मत केवल निष्ठा पर आधारित था। केवल निष्ठा तो बुद्धि को जड़ बना देती है। अत: जब इनके विपरीत झंडा उठाया तो वे विरोध नहीं कर सके और न अपने को जीवित रख सके। ये भयभीत हो दब गये। इस भय को उत्पन्न करने के लिये करोड़ों की हत्या करनी पड़ी थी। यही बात चीन में हुई। कन्फ्यूशिज़म भी जड़वाद का एक रूप ही था। चीन के पढ़े लिखे इस मत के थे। कुछ ईसाई हो गये थे। दोनों शस्त्राशस्त्र की चमक देख कर भयभीत हो गर्दन झुका बैठे थे।

"यहां बात वैसी नहीं है। यहां निष्ठा है तो बुद्धि युक्त व्यवहार भी है। यहां परमात्मा पर विश्वास है तो सोच विचार के उपरान्त है। यहां शस्त्र चलाया गया तो बुद्धि को तलवार के सामने कट कर चूर चूर हो जायेगा।"

इस समय टैक्सी ग्रीन होटल के बाहर जा खड़ी हुई। दोनों उतरे और भाड़ा चुकाकर भीतर खाने के कमरे में जा बैठे। अर्चना ने खाने का आर्डर दे दिया। जब बैरा सामान लेने चला गया तो अर्चना ने कहा, "हम पहिले इस आत्मा-परमात्मा के गोरख-धन्धे को ही तोड़ना चाहते हैं।"

"यह ठीक है। कर सको तो करो। जब यहां विदेशी राज्य था, तब उसके जड़वादी प्रभाव से बचने के लिए स्वराज्य की चाहना हुई थी। स्व-राज्य हुआ है परन्तु धोखे में आकर देश का नेतृत्व एक महान् जड़वादी के हाथ में चला गया है। अभी वह भ्रम जो गांधी जी के कारण उत्पन्न हुआ था, पूर्णतः मिटा नहीं। ज्यों ही मिटा, यह नेता नहीं रहेगा।

"मैं चीन के आक्रमण को ठीक समय पर हुआ मानता हूं। इसने नेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जड़ता को प्रकाश में उपस्थित किया है। इसके पंख कटने लगे हैं। मैनन गया, मालवीय भी मैनन के मार्ग पर है। कुछ और भी हैं, वे भी जा रहे हैं। यह नेता अकेला रह जाने पर या तो शीघ्र ही परलोक गमन करेगा अथवा पदच्युत कर दिया जायेगा।

"अर्चना जी ! तब अंग्रेजी काल और नेहरू काल में उत्पन्न हुई बुद्धि की मलिनता मिटने लगेगी। मैं समझता हूं कि उस समय आपका यह प्रचार भी चल नहीं सकेगा।

"यही तो भैया कहते थे कि यदि भारत के प्रतिक्रियावादियों को अवसर दिया गया तो ये यहां प्रचार में बाधा खड़ी कर देंगे। इनके बाधा खड़ी करने से पूर्व, नेहरू-मैनन के रहते ही, चीन का आक्रमण इनका सफाया कर सकता था।

"उनका कहना है कि भूल नेहरू जी से हुई है। वे स्वयं कम्यूनिस्ट होते हुए भी साम्राज्यवादी तथा पूंजीपति देशों को बुला बैठे हैं। उनके आने से चीन को रुकना पड़ रहा है।"

विष्णु हंस पड़ा। इस समय बैरा खाने का सामान लगाने लगा था। शाक-भाजी का थाल था, सलाद थी और चटनी-अचार था। खाने लगे तो विष्णु ने कहा, "यह झगड़ा आपका आपस का है। मेरा मतलब है कम्यूनिस्टों-कम्यूनिस्टों का। मैं तो गोरे और पीले अर्थात रूसी और चीनी कम्यूनिज़म लाने के ढंग में अन्तर नहीं मानता।"

"आप राष्ट्रवाद और अन्तर्राष्ट्रवाद में किसको पसन्द करते हैं ?" अर्चना ने एकदम बात बदल दी।

"मैं दोनों को परस्पर विरोधी नहीं मानता। ये एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे परिवार-परिवार में भेद भी है और फिर नागरिकता के नाते समानता भी। वही बात राष्ट्र-राष्ट्र की अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में है।

"परन्तु हम तो परिवार-परिवार में भी हद बंदी नहीं चाहते।

"पति-पत्नी के सम्बन्धों में भी ?" विष्णु का प्रश्न था।

इस पर अर्चना खाती-खाती रुक गई और विष्णु का मुख देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको इसका उत्तर सूझ नहीं रहा था। विष्णु खाता गया। जब अर्चना कुछ नहीं बोली तो उसने भी मुख उठाया और अर्चना को अपनी ओर निहारते और न खाते हुए देख वह मुस्कुराते हुए कहने लगा "कदाचित्, आप मेरा अभिप्राय नहीं समझीं। क्या आप नहीं समझतीं कि पति-पत्नी में और पत्नी-पति में अपनापन अनुभव करते हैं और वे उस अपनेपन को दूसरे से पृथक् रखना चाहते हैं। उनके साथ विलीन करना नहीं चाहते। यही परिवार का आरम्भ है।"

"परन्तु इनके विलीन करने में हानि है क्या ?"

"यह मानव प्रकृति के विपरीत है। मनुष्य में यह प्रकृति भी तो बनी है लाखों वर्षों के अनुभव से। उसने इसमें लाभ देखा है। यही बात राष्ट्रवाद की है। राष्ट्र को दूसरे राष्ट्रों से भिन्न रहने में लाभ प्रतीत हुआ है। इस पर भी परिवार की पृथक्ता का अर्थ दूसरे परिवारों से विरोध नहीं। अतः राष्ट्र-राष्ट्र में पृथकता का अभिप्राय परस्पर विरोध नहीं।"

"परन्तु जवाहरलाल जी तो लिखते हैं कि राष्ट्रवाद अर्थात् नैशनलिज़म दूसरों के प्रति विरोध और घृणा का सूचक है।"

"जो जवाहरलाल जी ने कह दिया वह ठीक ही होना चाहिए क्या ? वास्तविकता यह है कि नेहरू जी एक अज्ञ व्यक्ति है उनकी अज्ञानता कई कारणों से ढकी हुई थी। चीनी आक्रमण ने उनके ज्ञान के ढोंग का निरावरण करना आरम्भ किया है। पाकिस्तान के विषय में उनकी धारणा का मिथ्या होना भी उनकी अज्ञानता को प्रकट करने वाला है। वे अंग्रेज़ी भाषा लिखना तथा बोलना जानते हैं। अन्य सब कुछ तो भगवान का नाम ही है।"

यद्यपि अर्चना नेहरू जी के प्रशंसकों में नहीं थी, इस पर भी वह उनको इतना खराब नहीं मानती थी, जितना विष्णु प्रगट कर रहा था। इससे उसने बात बदलने के लिये कह दिया, "तो आप पति-पत्नी में तलाक को पसन्द नहीं करते।"

इस रस्म के कानून बन जाने को तो मैं बुरा नहीं मानता। यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतन्त्रताओं में है, परन्तु मैं स्वेच्छा से पति-पत्नी के सम्बन्धों में स्थायित्व का प्रशंसक हूं।

"वास्तव में पति-पत्नी का पृथक हो जाना तो पहिले भी था। जब नहीं बनती थी तो मुक्का-मुक्की भी हो जाती थी। परन्तु तलाक का अर्थ तो है नवीन विवाह की स्वीकृति। यह भी बुरा नहीं। परन्तु इस स्वीकृति का प्रयोग बहुत ही कम अवस्था में होना चाहिये।"

"जब कानून है तो उसका प्रयोग होगा ही। इसमें इच्छा का प्रतिबन्ध क्यों लगा रहे हैं।"

"कानून तो मानव स्वतन्त्रता का ही द्योतक है, परन्तु उस स्वतन्त्रता का प्रयोग मुझको अभीष्ट नहीं ?"

"मान लीजिये। आपकी पत्नी की आपसे बनती नहीं। तो क्या वह आपको तलाक न दे ?"

"उसकी इच्छा हो तो दे सकती है।"

"आप उसके दावे का विरोध नहीं करेंगे।"

"दावे की आवश्यकता तो तब होगी, जब मैं उसके पृथक होने अथवा उसके किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध बनाने में आपत्ति करूंगा। इस पर भी यदि वह मानवता विहीन नहीं होगी तो न तलाक की इच्छा करेगी न दावा।"

"यह आप कैसे कहते हैं ? क्या सहस्रों की संख्या में जो तलाक हो रहे हैं, वे मनुष्यों के नहीं पशुओं के हो रहे हैं।"

"हां अर्चना देवी ! मैं ऐसा ही समझता हूं। मुसलमानी सभ्यता और योरुपीय सभ्यता के प्रभाव से देश में मानवों की संख्या कम हो रही है और पशुओं की अधिक। मैं पशुओं को और इन मनुष्यों को असुर का नाम देता हूं।"

खाना समाप्त हो चुका था। बैरा वर्तन उठा रहा था। दोनों ने हाथ धोये और बिल की प्रतीक्षा करने लगे। अर्चना ने एक अंतिम प्रश्न पूछ लिया, "आप मुझको क्या समझते हैं ? मनुष्य अथवा पशु ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु ने उत्तर नहीं दिया। उसने हाथ के संकेत से वताया, "सतीश जी उस कोने में बैठे हैं।"

अर्चना उधर ही देखने लगी।

: ६ :

सतीश को संदेह हो रहा था कि विष्णु अर्चना की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखता है। यही कारण था कि जब अर्चना ने पूछा क्या होगा साहित्य सभा में जाने से तो उसने कह दिया था कि विवाह भी हो सकता है।

वह अर्चना का विवाह एक निर्धन माता-पिता के निर्धन पुत्र और पूर्व ग्रहों से ग्रसित युवक से पसंद नहीं करता था। इस पर भी जब अर्चना ने पूछ लिया कि विवाह नहीं होना चाहिये क्या ? तो वह मन की अवस्था का स्पष्ट वर्णन करने के स्थान केवल यह कहने लगा कि वह हमारी श्रेणी का नहीं।

सायंकाल सभा में अर्चना के विषय में विष्णु का मत कि वह अर्चना को उस पर उपमा देता है स्पष्ट न होते हुए भी उसके मन के संशय का समर्थन करता था। सभा समाप्त होने पर वह अर्चना को अपने साथ ही अपनी मोटर में ले जाना चाहता था, परन्तु जब अर्चना ने कहा कि वह विष्णु के साथ जा रही है, तो यह उसको भला प्रतीत नहीं हुआ। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "यह कुछ ठीक प्रतीत नहीं हो रहा।"

इस पर अर्चना का कहना तो उसे और भी अखरा। अर्चना ने कहा था, "इस पर कल प्रातःकाल विचार कर लेंगे ?" वह इसका अर्थ यह समझा था कि आज दोनों में नैसर्गिक विवाह हो रहा है। वह अपनी मोटर में सभा भवन से चला और कुछ दूर जा कर लौट कर मोटर को एक अंधेरे कोने में खड़ा कर देखने लगा कि वे किधर जाते हैं।

जब अर्चना और विष्णु टैक्सी में सवार हो चल पड़े तो उसने अपनी मोटर उनकी टैक्सी के पीछे लगा दी और ग्रीन होटल में जा पहुंचा। वह उनके पीछे-पीछे ही खाने के हाल में गया और उनसे दूर बैठ उनके हाव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावों से उनमें हो रही बात का अनुमान लगाने लगा।

वह उनसे पहले ही खाना समाप्त कर बिल का दाम चुका कर चलने के लिये तैयार था। वह देखना चाहता था कि अब वे किधर जाते हैं। वह उनका पीछा करना चाहता था।

उसकी योजना में विघ्न पड़ा। विष्णु के उसको बैठे सिगरेट जलाते देख लेने से। विष्णु ने अर्चना को बताया तो पहिले वह घबराई, फिर साहस पकड़ बोली, "चलिये, उनसे पूछ लें कि वे किधर चल रहे हैं?"

"हां, आओ। मैं अपना दोष मान तुमको दोषमुक्त कर सकता हूं।"

"नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं। वह मैं स्वयं ही निपटूंगी। परन्तु आपने मेरे अंतिम प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।"

"तो", विष्णु ने गम्भीर हो कहा, "सब बातों का उत्तर देना ही चाहिये।"

"मैं आपको विवश तो नहीं कर सकती, परन्तु उत्तर जानने की इच्छा तो रखती हूं।"

"तो आपकी इच्छा पूर्ण करूंगा, परन्तु अभी नहीं। फिर किसी दिन। उत्तर जानने में कुछ समय भी लग सकता है। अब तो हमें आपके भाई के पास चलना चाहिये। मैं समझता हूं कि उन्होंने भी हमको देख लिया है।"

अर्चना सतीश की ओर चल पड़ी। विष्णु उसके साथ था। सतीश ने उसको देख ऐसे विस्मय प्रगट किया, मानो उसने उसको पहिले नहीं देखा था। उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "अर्चना! यदि तुमने यहां खाना खाना था तो मैं भी तो यहीं ही आ रहा था।"

"हमने आपको अब जाने के समय ही देखा है। आपने अभी खाना लिया है अथवा नहीं?"

"ले लिया है।"

"अब आप किधर जा रहे हैं?"

"जिधर आप जाना चाहें। मेरी मोटर हाज़िर है।"

"हम तब 'रॉक्सी' में पिक्चर देखने जा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलो।"

तीनों चल पड़े। सतीश स्वयं मोटर चला रहा था। अर्चना उसके पास बैठ गई। विष्णु पीछे की सीट पर। मार्ग में कोई बातचीत नहीं हुई। हाल के सबसे ऊंचे दर्जे का टिकट लेकर वे जा बैठे। अर्चना दोनों पुरुषों के बीच बैठ गई।

सतीश ने पूछ लिया, "तो आज सभा भवन में अध्यक्ष बनने की खुशी में दावत हो गयी है?"

"जी।" अर्चना ने उत्तर दिया।

"क्यों विष्णु जी! मूल्य मिल गया मुझ पर इसको उपमा देने का?"

"जी।"

"तो बदला चुक गया।"

विष्णु समझ रहा था कि सतीश लड़ने का यत्न कर रहा है। अतः वह किसी प्रकार से बात टालने का विचार करने लगा। वह अभी विचार कर ही रहा था कि अर्चना बोल पड़ी, "नहीं भैया! आज इनसे इतना कुछ पता चला है कि और जानने की लालसा बन रही है। और फिर उसका प्रतिकार भी तो देना होगा।"

"क्या इस होटल में खाना खिलाना इतना मूल्यवान नहीं कि इनकी सब बातों का मूल्य चुक गया समझा जाये?"

"मैं तो उनको बहुत ही मूल्यवान मानती हूं। कब मूल्य चुक सकेगा, कहना कठिन है।"

"ओह।"

इस समय पिक्चर आरम्भ हो गई। विवश सतीश को बातें बन्द करनी पड़ीं। एक अमरीकन पिक्चर थी। यौन आकर्षण और धन का लोभ, दो केन्द्रीय विचार थे, जिनके आधार पर कहानी लिखी गई थी और पिक्चर बनायी गई थी।

आधे समय में अर्चना उठी और बोली, "चलिये, एक प्याला काफी पी लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों नींद आने लगी है ? " सतीश ने पूछा ।

उत्तर विष्णु ने दिया, "इसको देखते हुए और हो ही क्या सकता है ?"

"तो यह इतनी नीरस है ?"

"जी !"

"तो आप जा सकते हैं ।"

"मैं अपने मुख से कह कर अशिष्टता करना नहीं चाहता था ।"

इस पर अर्चना ने कह दिया, "तो चलो, चलें ।"

"परन्तु मुझको तो यह बहुत पसन्द आ रही है। इस संसार के दो महान प्रश्नों पर कलाकार के विचार मूर्तिमान किये गये हैं ।" सतीश का उत्तर था ।

टिकट का दाम सतीश ने दिया था । इस कारण सतीश की जाने की अभिरुचि न देख अर्चना ने कह दिया, "तब तो काफी लेनी ही चाहिये । क्यों विष्णु जी ?"

"आप लीजिये । सतीश जी ने तो मुझे छुट्टी दे दी है ।"

"पर मैंने तो नहीं दी और आप तो मेरे साथ हैं । भैया के साथ नहीं ।"

विष्णु चुप रहा तो सतीश ने कह दिया, "ठीक है। मैं चलता हूं। बताओ रात घर आने का विचार है अथवा नहीं ?"

"घर की एक चाबी मेरे पास है ।"

सतीश रैस्टोराँ में नहीं गया। अर्चना और विष्णु वहां जा बैठे। विष्णु ने क्षमा के भाव से कह दिया, "अर्चना देवी मुझे खेद है कि मेरे कारण आपके भाई साहब आपसे नाराज़ हो गये हैं ।"

"मैं आज सवेरे से ही परेशानी अनुभव कर रही हूं। क्या हो गया है इनको, कुछ समझ नहीं आया ।"

"मैं समझता हूं कि आपको घर चल देना चाहिये ।"

"मैं तो घर को चल ही रही थी, परन्तु वे तो आपको दुत्कार रहे थे। अब उनका पूछना कि रात घर आने का विचार है अथवा नहीं, अशिष्टता की सीमा हो गयी है । ये श्रीमान् रातें ही रातें घर से बाहर रहते हैं तो मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कभी पूछा नहीं।"

एस्प्रेसो काफी के दो प्याले आ गये। विष्णु अपने को बहुत ही अनिच्छित स्थिति में अनुभव करता था। वह चुपचाप काफी पीने लगा। एकाएक अर्चना ने एक बड़ा सा घूंट गले के नीचे उतारते हुए कहा, "अब तो घर आने को जी नहीं करता।"

"क्यों ?"

"इस टायरैंट (तानाशाह) भैया के साथ रहते-रहते मन ऊब गया है।"

"तो कहाँ रहने को तबीयत करती है ?"

"यह तो मेरे अकेले निर्णय करने की बात नहीं। अभी तो आज रात की ही बात विचार कर रही हूं।"

"परन्तु अर्चना देवी ! इससे तो लोक-निन्दा होने लगेगी।"

"मैं समझती हूं कि आप मुझे अपने घर ले चलिये और अपनी मां के पास रहने की स्वीकृति ले लीजिये।"

"इसमें कुछ भी कठिन बात नहीं। परन्तु…"

"क्यों, आपकी मां भी मेरा वहाँ रहना पसन्द नहीं करेंगी क्या ?"

"उसके पसन्द न पसन्द की बात तो मैं जानता नहीं। उसकी शिष्टता का एक अपना मापदंड है। इस पर भी जब मैं कहूंगा तो वह मेरी बात से इन्कार नहीं करेगी।"

"घर में और कोई स्त्री अथवा पुरुष है अथवा नहीं ?"

"मां है और एक छोटा भाई है। वह अभी नवीं श्रेणी में पढ़ता है।"

"तो मैं मां जी के कमरे में सो सकूंगी ?"

"निस्सन्देह। इस पर भी अर्चना देवी, इस प्रकार तो आप अपने भाई के सन्देह की पुष्टि ही करेंगीं।"

"क्या सन्देह है उनका ? आप क्या समझे हैं ?"

"यही कि आपकी मुझसे सीमा से अधिक घनिष्टता है।"

"और यह सन्देह निराधार है न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आधार की बात तो अपने-अपने विचार का विषय है, परन्तु सन्देह में तत्व नहीं। यह मैं जानता हूं।"

अर्चना मुस्कुराई और पूछने लगी, "क्या आधार तत्त्वहीन भी होते हैं?"

"दोनों पृथक्-पृथक् बातें हैं। एक विचार का विषय है दूसरा वस्तु-स्थिति है। कभी बुद्धि निर्मल हो तो विचार और वस्तुस्थिति में समत्व हो जाता है। मलिन बुद्धि वालों के विचार कल्पना की श्रेणी में आते हैं। उनका वस्तुस्थिति से मेल नहीं भी हो सकता।"

अर्चना देख रही थी कि विष्णु का युक्ति करने का ढंग सर्वथा विल-क्षण है। इस पर भी वह उसमें तथ्य समझती थी? आधार कल्पित भी हो सकता है।

विष्णु ने एक बात खाना खाते समय बतायी थी। तलाक की रस्म तो नये विवाह की स्वीकृति मात्र है। पति-पत्नी में पृथक्ता तो बिना तलाक के भी होती थी, हो सकती है और होती रहेगी।

अर्चना को विष्णु एक बुद्धिशील व्यक्ति लगा था। वह उसकी अपने भाई से तुलना कर रही थी।

काफी समाप्त हुई तो अर्चना ने दाम दिया और पिक्चर देखने के स्थान हाल से बाहर निकल आई। वहाँ टैक्सियाँ खड़ी थीं। टैक्सी में बैठ विष्णु को बैठने के लिये कहने लगी। विष्णु ने बैठते हुए पूछ लिया, "किधर चलेंगीं?"

"अपनी मां के पास ले चलिये।"

: ७ :

सतीश को रात भर नींद नहीं आई। रह-रहकर वह अर्चना के कमरे में देखने जाता रहा था और उसको वहाँ न देख चिन्ता और विष्णु पर क्रोध अनुभव कर रहा था। उसको कुछ यह समझ आया था कि विष्णु ने उसकी बहिन को अपने सम्मोहन में ग्रस रखा है।

वह अपने पलंग पर लेटा हुआ विचार करने लगा कि यौन सम्बन्ध हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया तो कोई बात नहीं, परन्तु यह सम्मोहन ही बुरी बात है। लड़कियों से लड़कों का यौन सम्बन्ध होना एक स्वाभाविक कर्म है। सब झगड़े की जड़ है सम्मोहन। इसी कारण वियोग, दुःख, क्लेश और हत्याएं होती हैं। इसी को वह खराबी समझता था।

उसका भी कई लड़कियों से सम्बन्ध था, परन्तु वह किसी के लिये व्याकुल अथवा अधीर नहीं होता था। एक नहीं मिली तो दूसरी सही। ऐसी मन की भावना ही वह मानवता के अनुकूल मानता था। प्रेम और वह भी अटूट, उसकी समझ से बाहर की बात थी।

उसको अर्चना के विषय में चिन्ता थी तो केवल इस बात की कि विष्णु अपनी जात-बिरादरी के बन्धन में बंधा हुआ अर्चना की मानसिक और व्यावहारिक स्वतन्त्रता में बाधक होगा और फिर अर्चना कष्ट अनुभव करेगी। वह सम्मोहन में फंसी हुई उसको छोड़ नहीं सकेगी और उसकी तानाशाही को सहन करने पर विवश हुआ करेगी। विष्णु उस पर हुकूमत भी करेगा और फिर उसके धन पर सुख ऐश भी लूटेगा।

सवेरे के चार बज गये। अब वह निराश हो सो गया। उसकी नींद आठ बजे के उपरान्त खुली। घर का रसोइया चाय लिये खड़ा था। वह भी गम्भीर दिखाई देता था।

सतीश ने जाग खुलते ही पूछ लिया, "चन्दन! बहिन जी आयी हैं क्या?"

"जी नहीं। यह तीसरी बार चाय बना कर लाया हूं। दोनों बार पड़ी-पड़ी ठंडी हो गयी तो ले गया और अब आपको जगाने का विचार कर रहा था।"

"ठीक है। ले आओ।"

सतीश अब अर्चना के विषय में चिन्ता छोड़ उसको जीवन की प्रगतिशील मीमांसा पर शिक्षा देने का विचार करने लगा था।

स्नानादि से निवृत्त हो उसने अपनी डायरी देखी कि किस-किस से कहां-कहां मिलना है। यह देख उसने कपड़े पहिने और एक मित्र अवनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुमार घोष से मिलने चला गया।

सतीश के जाने के एक घण्टा पीछे अर्चना घर पर आई और सीधी अपने कमरे में जा अपना सूटकेस खोल उसमें अपने कपड़े और सामान भरने लगी। चन्दन आया तो वह उसकी सहायता करने लगा। उसके कमरे में कुछ अधिक सामान नहीं था। इस पर भी एक सूटकेस में कपड़े, दूसरे में कुछ पुस्तकें तथा होल्डाल में बिस्तर बांधा गया। बिस्तर के स्ट्रैप बांधते हुए चन्दन ने पूछ लिया, "बहिन जी, किधर जा रही हैं?"

"मैं यह घर छोड़ रही हूं।"

चन्दन अपने प्रश्न का उत्तर न पा विस्मय में अर्चना का मुख देखने लगा। अर्चना हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "प्रश्न का उत्तर नहीं मिला न ? वह मैं स्वयं नहीं जानती। जितना जानती हूं बता दिया है।"

"तो सतीश भैया से इतना ही कहूं। वे रात-भर परेशान रहे हैं।"

"उनको मैं स्वयं लिखूंगी। अभी तुम जाओ और एक टैक्सी ले आओ।"

चन्दन समझ गया कि अधिक पूछ-ताछ करना उचित नहीं। इस कारण उसने तीनों नग कमरे से निकाल ज़ीने के नीचे रखे और सड़क पर जा टैक्सी ले आया।

अर्चना टैक्सी पर सवार हुई तो एक पांच रुपये का नोट चन्दन को दे बोली, "इससे आज मिठाई खाना।"

चन्दन का मुख खिल उठा और बोला, "तो आप···।" इसके आगे वह कह नहीं सका। बात अर्चना ने पूरी कर दी, "मैं तुम्हारी इमानदारी से प्रसन्न होकर तुमको इनाम दे रही हूं।"

"मैं विवाह की बात समझा था।" चन्दन ने अपने मन की बात कह दी।

"वह भी तो होगा ही चन्दन भैया ! उस समय तुम कुछ अधिक ही पाओगे।"

चन्दन हंस पड़ा। अर्चना ने टैक्सी वाले को बताया, "मानकतल्ला।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु शर्मा का घर मानकतल्ला में था। पिछली रात विष्णु उसको अपनी मां रुक्मिणी देवी के पास ले गया था। मां पुत्र की प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसे कहकर गया था कि रात साढ़े आठ बजे तक आयेगा और भोजन घर पर ही करेगा।

विष्णु का छोटा भाई शंकर भोजन कर अपनी स्कूल की पढ़ाई में लग गया। जब विष्णु ने घर का द्वार खटखटाया तो रुक्मिणी देवी ने द्वार खोलते ही कहा, "बहुत देर कर दी है विष्णु ?"

"मां ! एक मेहमान आया है।"

इस समय मां ने विष्णु के पीछे खड़ी अर्चना को देख लिया। यह अप्रत्याशित था। विष्णु कभी किसी लड़की को घर पर नहीं लाया था। मां ने अपने विस्मय को छुपाते हुए कहा, "आओ बेटा। विष्णु, इनको भीतर ले आओ।"

मां ने मार्ग दिखाया और विष्णु तथा उसके साथ आयी लड़की को लेकर विष्णु के कमरे में चली गयी। कमरे में एक ही कुर्सी थी। वह भी लिखने की मेज के पास रखी थी। दीवार के साथ खाट लगी थी और दरी चादर और तकिया बिछा था। एक चादर ऊपर ओढ़ने के लिये पांव की तरफ रखी थी। दीवार में एक आलमारी थी। उसको ताला लगा था। मेज पर कुछ पुस्तकें रखी थीं और कागज कलम-दवात थी। बस यही कुछ कमरे में सामान था। बिजली का टेबल फैन था जो एक कोने में तिपाई पर रखा था। मेज़ पर टेबल लैम्प रखा था। जब वे आये तो छत के साथ लटक रहा लैम्प जल रहा था।

विष्णु ने अर्चना को कुर्सी पर बैठाया और मां से कह दिया, "ये हैं अर्चना देवी। स्वर्गीय सेठ धनञ्जय सोमानी की लड़की है। अभी तक अपने भाई के साथ बालीगंज में रहती थीं। उससे कुछ झगड़ा हो गया है और आज रात यहां रहने चली आई हैं।"

"क्या आयु है बेटी, तुम्हारी ? रुक्मिणी ने पूछ लिया।"

इस आयु पूछने का आशय विष्णु समझ हंस पड़ा। उसने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मां ! इसको बी० ए० पास किये चार वर्ष हो चुके हैं। इससे मैं समझता हूं कि ये बालिग हैं।"

इस पर तो मां की भी हंसी निकल गयी। उसने कहा, "तुमने ठीक समझा है विष्णु। मैं कानून को ही इस काल का धर्म समझती हूं और इसका भंग करना सहन नहीं कर सकती।

"आओ बेटा ! तुम मेरे कमरे में आ जाओ। क्या नाम है तुम्हारा ?"

अर्चना ने उठते हुए कहा, "अर्चना।"

"भोजन रसोई घर में बैठकर करोगी अथवा मेरे कमरे में ?"

"भोजन हम कर चुके हैं।"

"तो मेरा बनाया ?"

"वह हम प्रातः कलेवा के समय लेंगे।" विष्णु ने कह दिया।

मां के कमरे में तो सामान विष्णु के कमरे से भी कम था। भूमि पर चटाई और उस पर दरी बिछी थी। तकिया और एक चादर ओढ़ने के लिये थी। कोने में एक चौकी थी। उस पर जल भरा लोटा, उसको ढकने के लिये एक कटोरा और समीप एक गिलास रखा था।

रुक्मिणी देवी ने अर्चना को अपने बिस्तर पर बैठाया और बगल के कमरे से एक चटाई तथा एक दरी, तकिया और चादर ले आयी। अपनी चटाई के समीप ही उसने अर्चना के लिये बिस्तर लगा दिया। अब रुक्मिणी ने कहा, "बेटी अर्चना ! यहां तो यही कुछ है। कष्ट तो होगा, परन्तु विवशता है।"

"यह तो बहुत कुछ है माता जी !"

"अच्छा। तुम इस पर बैठो। मैं अपना खाना ले आऊं। खाकर तुमको रात पहिनने के लिये धोती इत्यादि निकाल दूंगी।"

रुक्मिणी एक थाली में दो रोटी, दाल साग और गिलास में जल ले आई। वह अपनी चटाई पर बैठ खाने लगी तो अर्चना ने पूछ लिया, "तो आप खाना इतनी रात गई खाती है क्या ?"

"नहीं ! विष्णु ने कहा था कि वह खाना घर पर ही खायेगा। उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आने में देरी हो गयी है। मैं उसकी प्रतीक्षा में बैठी थी। बेटा ! वह कमा कर लाता है तो हम खाते हैं। इस कारण उसे खिलाये बिना खाना ठीक नहीं लगता। जो सब को देने वाला है उसको भोग तो पहिले लगाना चाहिये।"

"परन्तु माता जी ! हम तो अभी और भी देरी से आने वाले थे। मेरे कारण ही वे कम से कम एक घण्टा पहिले चले आये हैं।"

"यदि वह कह गया होता कि वह खाना बाहर खा लेगा तो मैं खा लेती। ऐसा बहुत कम ही होता है, जब वह बिना कहे बाहर खाता है।"

"तो आपको बहुत कष्ट हुआ है। वे तो घर पर ही आकर खाने वाले थे। मैंने बाहर खाने को कहा तो वे मान गये।"

मां ने बात बदल दी, "भाई से झगड़ क्यों पड़ी हो अर्चना ?"

"माताजी ! पुरुष और स्त्रियों के अनुभवों में अन्तर होता है। यह अन्तर आयु के साथ बढ़ता जाता है। अनुभव के आधार पर विचार बनते हैं और विचार कर्म का आधार होते हैं। इस प्रकार कर्मों में भी अन्तर होता जाता है। इस अन्तर को भाई बहन में देख नहीं सका। बस, झगड़ा हो गया।"

रुक्मिणी खाती-खाती रुक गयी। वह विस्मय में अर्चना का मुख देखने लगी। फिर कुछ विचार कर पूछने लगी, "प्रतीत होता है तुम्हारा भाई और कदाचित् तुम भी अपने में आत्मा को अनुभव नहीं करते।"

इस पर अर्चना मुस्कुराई और पूछने लगी, "भला इसमें आत्मा कहां से आ गया ?"

तुम्हारे इस वक्तव्य से मैं यह ही समझी हूं। प्राणियों में आत्मा एक ऐसी वस्तु है जो सब में समानता स्थापित करती है। जो उसके अस्तित्व को मानते नहीं वे उस द्वारा उत्पन्न समानता की ओर ध्यान नहीं देते। उन्हें प्रकृति से उत्पन्न विभिन्नता ही दृष्टिगोचर होती है।

"प्रकृति विकार युक्त है और इसमें भी परिवर्तन होते रहते हैं। जो प्रकृति की ओर ध्यान लगाते हैं, उनको अनुभवों में भिन्नता दिखाई देती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आत्माभिमुखों को सर्वत्र समानता ही दृष्टिगोचर होती है। आत्मा सदा एक रस रहती है।"

"पर माता जी ! वह तो कहीं दिखाई नहीं देता ?"

"मुझे तो तुम्हारा आत्मा तुम में कार्य करता दिखाई दे रहा है। यदि वह न होता तो तुम यहां आती नहीं। उसकी प्रेरणा से ही तो यहां चली आयी हो। तुम देखती नहीं और उसके आदेशों का पालन कर रही हो। मैं देखती हूं और उसके कार्यों को समझती हूं।"

अर्चना को मां पुत्र से भी अधिक विवेकशील प्रतीत हुई। इस पर भी वह अभी इस आत्मा की प्रेरणा से भाई को छोड़ चले आने की बात समझी नहीं थी। रुक्मिणी ने खाना समाप्त किया तो बर्तन उठाये और रसोई घर में रखने तथा हाथ धोने चली गयी। इस समय तक अर्चना रुक्मिणी के कथन को समझने का यत्न करती रही थी। रुक्मिणी आयी और अपनी चटाई पर दरी ठीक कर बैठ गयी।

अर्चना ने कहा, "माता जी ! यह आत्मा का झमेला तो समझ आया नहीं। पर आपका यह कहना कि आत्मा की प्रेरणा से ही यहां चली आयी हूं सुखद प्रतीत हुआ है। आप इसको आत्मा का काम कह कर ठीक मान रही हैं।"

"देखो बेटा ! मनुष्य का शरीर इन्द्रियों का पुंज है। इन्द्रियां मनुष्य को भोगों की ओर ले जाती हैं। जब मनुष्य इन भोगों को लात मार कर दूसरे मार्ग पर चल पड़ता है तो वह इन इन्द्रियों के अतिरिक्त किसी अन्य की प्रेरणा के अधीन काम करता हुआ ही मानना चाहिये। वह दूसरा भी तो तुममें ही है। उसी को आत्मा नाम दिया है। मैं तुममें और तुम्हारे भाई में पुरुष-स्त्री के अनुभवों में भेद के कारण वैमनस्य नहीं समझी। मैं तो यही समझी हूं कि वह आत्मा की ओर ध्यान करता ही नहीं। वह उसकी बात को सुनता ही नहीं। उसे केवल शरीर ही शरीर दिखाई दे रहा है।

"उसके विपरीत तुम तो इस शरीर के अतिरिक्त किसी अन्य की बात मान रही प्रतीत होती हो। यदि यह करतीं तो वर्तमान व्यवहार से भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करतीं क्या ?"

"यही मैं समझी हूं। देखो बेटा ! तुम किसी धनी परिवार की लड़की प्रतीत होती हो। यह तो तुम्हारे कपड़ों और भूषणों से ही प्रतीत होता है। विष्णु तो एक सरलचित्त निर्धन लड़का है। तुम भाई से लड़ कर यदि कहीं शरीर की प्रेरणा से जातीं तो किसी धनी मानी मित्र के घर जाने का यत्न करतीं अथवा इन्द्रियों के सुख के पीछे भाग खड़ी होतीं। कलकत्ता में इसके साधनों की कमी नहीं है। तुम युवा, सुन्दर, स्वस्थ शरीर रखती हो। तुम्हारे किंचित् मात्र संकेत से ही तुम अपनी इन्द्रियों का भोग प्राप्त कर सकती थीं।

"मुझको विश्वास है कि विष्णु ने अपनी अवस्था और स्थिति का मिथ्या परिचय नहीं दिया होगा। क्या मेरा विश्वास आधार रहित है ?"

"नहीं माता जी ! उन्होंने कभी अपने को धनवान प्रगट नहीं किया। जब कभी भी उनसे आर्थिक स्थिति पर बात हुई है वे यह ही कहते रहे हैं कि वे पिता-विहीन है और केवल निर्वाह योग्य पैदा करने वाले ब्राह्मण हैं।"

"आज भी जब हम होटल में खाने के लिए जाने लगे थे तो उन्होंने कहा था कि वे मुझे मां की बनाई रसोई के लिए ही निमन्त्रण दे सकते हैं। मैं उनको एक बहुत बढ़िया होटल में खाने के लिए ले गई थी। हम दोनों के खाने का पन्द्रह रुपये दाम लगा था। इसके उपरान्त ही भाई ने कुछ कहा था जो मुझको अरुचिकर प्रतीत हुआ और मैंने उनके घर जाना उचित नहीं समझा।"

"और तुमने विष्णु से यह प्रस्ताव नहीं किया कि वहीं होटल में एक कमरा भाड़े का लेकर रह जायें ?"

"अर्चना का मुख लज्जा से लाल हो गया। उसने आंखें नीचे किये हुए कहा, "भला यह प्रस्ताव कैसे कर सकती थी ?"

"शरीर की प्रेरणा से।"

"मन ने उचित नहीं समझा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही तो कह रही हूं कि तुम शरीर के अतिरिक्त किसी अन्य का आदेश मान यहां चली आयी हो।"

"अर्चना बेटी ! मैं नहीं जानती कि तुम्हारे भाई ने क्या अरुचिकर बात तुमको कही होगी। इस पर भी इतना तो समझ सकती हूं कि वह तुमको केवल मात्र शरीर ही समझ रहा होगा और शरीर मान वैसा व्यवहार कर रहा होगा। यदि उसको तुममें आत्मा के होने का आभास होता तो वह तुम्हारे आत्मा को तुम्हारे शरीर पर नियन्त्रण करने की प्रेरणा देता। यह वह कर नहीं सका।

"अच्छा। अब सो जाओ। ईश्वर तुमको सद्बुद्धि देगा और वह तुम्हारे आत्मा को सन्मार्ग पर ले जाएगा।"

: ८ :

अर्चना के मन में रुक्मिणी के युक्तियुक्त कथन ने हलचल मचा दी थी। वह अपनी कालेज की पढ़ाई के उपरान्त कम्यूनिज़म और जड़वादी मीमांसकों का साहित्य पढ़ती रही थी, परन्तु इस सरल सी बात को जो रुक्मिणी ने कही थी वह उन सब बड़ी-बड़ी पुस्तकों से अधिक सुगमता से हृदयंगम कर सकी। दो बातें उसके मस्तिष्क में चक्कर काटने लगी थीं। प्रकृति अर्थात् मैटर परिवर्तनशील है। यह विकारयुक्त है। आत्मा सदा एक रस रहता है। दूसरी बात थी शरीर, जो प्रकृति जनित अर्थात् मैटीरियल है, एक प्रेरणा देता है। आत्मा उस प्रेरणा का विरोध करता है।

इन दोनों बातों की धुरि पर ही विष्णु की माता ने उसके व्यवहार का विश्लेषण किया था।

वह अपने मनकी अवस्था का स्मरण कर रही थी। उस रात सिनेमा में और उससे पहिले भी, जब कभी उसका भाई कभी रात भर घर से बाहर रहता था, वह वासना के पीछे वह जाया करती थी, परन्तु कोई उसके मन को कहता रहता था कि भाई का व्यवहार ठीक नहीं और उसको स्वयं वह व्यवहार स्वीकार नहीं करना चाहिए।

वह मन में सोचने लगी क्या यह कहने वाला उसका आत्मा है। यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने मात्र से वह आत्मा के अस्तित्व को मानने के लिए तैयार नहीं हो रही थी, परन्तु इसका अन्य कोई कारण भी तो प्रतीत नहीं होता था।

सिनेमा हाल के बाहर टैक्सी में सवार होते समय विष्णु ने पूछा था, "किधर चलें?" उसके मन में आया था कि विष्णु से रात उसके साथ किसी होटल में रह जाने का प्रस्ताव करे, परन्तु उसके मुख से अनायास ही निकला था, "अपनी मां के पास ले चलो।" यह किसने कहा था? क्या यह उसका आत्मा बोल रहा था?

मन में इन सब का अर्थ लगाकर ही, उसने विष्णु की मां से कहा था कि पुरुष स्त्री के अनुभवों में अन्तर था। परन्तु विष्णु की मां ने तो इसका अर्थ दूसरा ही लगाया है। उसका कहना था कि यह प्रेरणा आत्मा की थी। यदि कहीं भैया सतीश इसी स्थिति में होते तो उनका आत्मा भी उनको यही कहने को कहता जो उसे कहा है। विष्णु की मां का कहना था कि यदि सतीश वैसी परिस्थितियों में इन्द्रियों की वासना के पीछे चल पड़ता है तो यह इस कारण कि उसने आत्मा की ओर कभी ध्यान नहीं दिया और वह उसकी बात सुनता ही नहीं।

उसको उसी सायंकाल विष्णु से पढ़ी कविता का एक पद याद आ गया। विष्णु ने पढ़ा था :

जो सबको, अपने जैसा ही मानकर व्यवहार करते हैं।
उनको ही आत्मदर्शी समझो गुण दुनिया उनके गाती है।

सिनेमा के रेस्टोरां में बैठी वह विचार कर रही थी कि उसका भाई जो अपने लिए ठीक समझता है वह अपनी बहिन के लिए ठीक क्यों नहीं समझता? अब वह लेटे-लेटे विचार कर रही थी कि विष्णु के कहने के अनुसार वह आत्मदर्शी नहीं है। विष्णु की मां के कथनानुसार उसका भाई आत्मा के अस्तित्व को मानता नहीं और उसकी आवाज़ को सुनता नहीं।

वह चकित रह गई कि यह क्या युक्ति है। कैसी सरलता से उसकी जटिल समस्या वर्णन कर दी गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात भर वह सोती जागती यही विचार कर रही थी। सोते समय स्वप्न में, विष्णु की मां उसकी उंगली पकड़ कर उसे एक दिशा की ओर ले जाती समझ आई। जागते हुए वह अपने विवाह के विषय में विचार करने लगती थी।

प्रातः उसकी आंख खुली तो उसने देखा विष्णु की मां एक कोने में आसन बिछा रही थी। अर्चना ने कलाई पर बंधी घड़ी में समय देखा। चार बजे थे। वह समझ गयी कि मां पूजा पर बैठने वाली हैं। वह उठ पड़ी। पूजा करते हुए के सामने सोना उसे ठीक नहीं लगा। अभी पूरी नींद तो उसने ली नहीं थी। इस कारण सुस्ती निकालने के लिए वह अंगड़ाइयां लेने लगी। उबासी ले वह उठ खड़ी हुई।

रुक्मिणी ने कहा, "तुम अभी सो सकती हो।"

"नींद नहीं आ रही।"

"हां। कड़ी भूमि पर सोने का अभ्यास नहीं है न?"

अर्चना चुप रही और फिर चादर ओढ़ अपनी चटाई पर पलथी मार कर बैठ गई। रुक्मिणी ने अपनी पूजा आरम्भ कर दी। अर्चना समय देख रही थी कि कितनी देर लगती है पूजा में। छः बजे रुक्मिणी ने आंख खोली। अर्चना विस्मय कर रही थी कि कैसे वह इतनी देर तक निश्चल बैठी रही है।

रुक्मिणी ने आंख खोल पूछा, "तो तुम शौचादि के लिये नहीं गई?"

"कहां जाती?"

"ओह मैं तो भूल ही गयी थी कि तुम मेहमान हो। अच्छा आओ।"

रुक्मिणी अर्चना को शौचालय दिखाने चली गई। विष्णु भी प्रातः साढ़े तीन बजे उठा था और चार बजे स्नानादि से निवृत्त हो स्वाध्याय कर रहा था।

जब तक अर्चना स्नानादि से अवकाश पाकर आई तो मां ने अल्पाहार तैयार कर रखा था और विष्णु तथा शंकर अल्पाहार के लिए रसोई के बाहर बिछी चटाई पर बैठे थे। अर्चना सोने के कपड़े उतार अपनी साड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इत्यादि पहन वहां आ गई। विष्णु ने पूछ लिया, "कष्ट तो हुआ होगा, परन्तु हम इससे अधिक नहीं कर सकते थे।"

"कुछ विशेष कष्ट नहीं हुआ। रात सुख की बीती है। मैं तो इतने सुख की भी आशा नहीं करती थी।"

विष्णु ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो क्या आप समझती थीं कि किसी अस्तबल में बांध दी जायेंगी ?"

अस्तबल का ज़िकर आने से अर्चना ने कह दिया, "भैंसबुद्धि को तो अस्तबल की ही आशा थी और खुरली भर भूसा की, परन्तु मांजी ने तो कुछ मीठा-मीठा बनाया प्रतीत होता है।"

रुक्मिणी ने हलुआ बनाया था। प्लेटों में डालकर तीनों के सामने रख दिया। साथ चाय के लिए प्याले लगा दिए। अर्चना ने खाते हुए विष्णु से पूछ लिया, "आपका इस समय क्या कार्यक्रम है ?"

"मैं एक लड़के को संस्कृत पढ़ाने जा रहा हूं। आठ बजे तक लौट आऊंगा।"

"मैं तब तक माताजी के पास रहूंगी। जब आप आयेंगे तो अपने विषय में विचार करूंगी।"

विष्णु चुप रहा। अल्पाहार समाप्त हुआ तो विष्णु चला गया। शंकर अपनी पुस्तकें ले स्कूल को चला गया। रुक्मिणी ने भी अल्पाहार किया और अर्चना को साथ लेकर पुनः अपने कमरे में चली गई।

अर्चना ने अपने मन की बात कह दी, "मैं अपने भाई के साथ रहने नहीं जा रही।"

"तो कहां रहने जा रही हो ?"

"अपना पृथक् मकान लेकर रहूंगी। कोई इधर दो तीन कमरे का फ्लैट मिल जाये तो बहुत ही अच्छा हो।"

"मिल तो जायेगा, परन्तु ऐसा ही होगा जैसा यह हमारा है।"

"यह तो बहुत अच्छा है। कहां होगा ?"

"इसी मकान की ऊपर की मंजिल पर ही। तीन-चार दिन हुए खाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है। कहो तो मुन्शी को बुला लाऊं ?"

मुन्शी बुलाया गया। ऊपर की मंजिल पर कमरे देखे गए। साठ रुपये मासिक भाड़ा था। बिजली, पानी, हाउस टैक्स पृथक्, किराया पेशगी। निश्चय हो गया। अर्चना ने भाड़ा दे रुक्मिणी से ताला ले वहां लगा दिया।

विष्णु ट्यूशन कर लौटा तो अर्चना को इस प्रकार अपना प्रबन्ध कर लिया देख चकित रह गया। "बहुत जल्दी की है अर्चनाजी !" उसने कहा।

"रात भर विचार करती रही हूं कि माताजी की संगत में रहूंगी तो कहीं ठिकाने पर पहुंच सकूं। इन कमरों का पता तो आपके जाने के बाद ही लगा है। मैंने इस अवसर को जाने नहीं दिया। रुपये तो पर्स में थे ही। बस किराया दिया और रसीद ले ली है। मुन्शी ने अभी कच्ची रसीद दी है। पक्की दस बजे तक दे जायेगा।"

"सतीशजी क्या कहेंगे ?"

"यह बात उन्होंने ही सिखाई है। मन में आने पर, साधन हों, तो कर लो। न साधन हों, तो विचार छोड़ दो। चिन्ता न करो। यही किया है। मन में आया कि भैया के साथ नहीं रहना। बस टैक्सी की और आपके साथ चल पड़ी। रात विचार किया था कि मांजी के साथ रहूंगी। अवसर मिला है तो चूकी नहीं। अब चिन्ता नहीं। शेष घर में आकर रहने लगूंगी तो विचार कर लूंगी।'।

"और कब रहने लगोगी ?"

"अब मैं भाई के घर से अपना सामान लेने जा रही हूं। अपने कपड़े और किताबें। वे ले आऊं, तो फिर कुछ फर्नीचर ले आऊंगी। बस घर बन गया और रहने लगूंगी।"

"भोजन ?" रुक्मिणी ने पूछ लिया।

"चाय घर पर स्वयं बना लिया करूंगी और दो समय रोटी होटल में।"

"अर्थात् पन्द्रह रुपये नित्य व्यय किया करोगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। उससे कम में काम चल जायेगा। पर माताजी! रुपयों की चिन्ता नहीं है। पिताजी पर्याप्त दे गये हैं।"

विष्णु ने अपना दिन भर का कार्यक्रम बता दिया। उसने कहा, "मैं दस बजे एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने जाया करता हूं। वहां दस बजे से एक बजे तक काम कर घर आ मध्याह्न का भोजन करता हूं। तदनन्तर एक घंटा विश्राम कर अपना लेखन कार्य करता हूं। तीन से चार बजे तक एक सेठजी को गीता पढ़ाने जाता हूं। वहां से चार बजे अवकाश मिलता है। आज वहां से घर आऊंगा और फिर चटर्जी के निमन्त्रण पर ग्रीन होटल पहुंचूंगा।"

"ओह! वह तो मैं भूल ही गई थी।" अर्चना ने कह दिया, "तब तो मैं दस बजे के उपरांत ही अपना सामान ले आऊंगी और भैया से भेंट चाय पार्टी पर ही होगी।"

उस दिन अर्चना भागदौड़ ही करती रही। सायं चार बजे तक उसने अपने कमरे सजा लिए थे। एक कमरा बैठक-घर बन गया था। उसके लिए कालीन, सोफासेट, सेन्टर टेबल,, फूलदान इत्यादि सामान वह बाजार से खरीद लाई थी। उसके बगल का कमरा बेड रूम था। एक लकड़ी का पलंग, उस पर डनलोपिलो का गद्दा, एक तिपाई, टेबल लैंप और लिखने-पढ़ने की मेज़, कुर्सी, एक रेडियो यह सारा सामान बाजार से खरीदकर उसने सजा दिया। तीसरे कमरे में कुछ नहीं रखा था। वह खाली पड़ा था।

चाय के बर्तन, बिजली का स्टोव, खाने के लिए टोस्ट तथा बिस्कुट इत्यादि सामान भी वह ले आई थी। अर्चना ने सब पर लगभग चार हजार रुपया खर्च कर दिया। सब कुछ लगाकर वह नीचे आई तो विष्णु सेठजी को गीता पढ़ाकर लौटा था। शंकर सायंकाल का अल्पाहार ले रहा था। इस समय तक शंकर को मां से ऊपर की मंजिल पर आकर रहने वाली का परिचय मिल चुका था। उसने अर्चना को ऊपर की मंजिल से नीचे आते देखा तो कहा, "बहिनजी चाय तैयार है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारे भैया आ गए क्या ?"

"अभी-अभी आये हैं। वे तो अल्पाहार नहीं ले रहे।"

"हां, मैं भी उनके साथ ही एक स्थान पर चाय पर आमन्त्रित हूं।"

विष्णु अर्चना की आवाज़ सुन अपने कमरे से निकल आया और अर्चना को अपने कमरे में ले गया। रुक्मिणी वहां थी। रुक्मिणी ने कहा, "विष्णु ने मुझको कल वाली सभा की बात और चाय के आयोजन की बात बताई है। इस कारण मैं विष्णु को कह रही हूं कि घर से खा पीकर जाओ। वहां पर भी कुछ मिल गया तो रात को भोजन न करना, परन्तु बिना खाये घर से नहीं जाना चाहिये।"

अर्चना प्रश्न भरी दृष्टि में विष्णु की ओर देखने लगी। विष्णु ने कह दिया, "अर्चना देवी! कहावत है—'घर से चलें खाकर, तो बाहर मिले पकाकर।' इस कारण मैं भी यही समझता हूं। मांजी ने हमारे लिए चाय तैयार की है।"

रुक्मिणी चाय लेने रसोईघर में गई तो अर्चना ने पूछ लिया, "किसी प्रकार के झगड़े की आशंका करते हैं आप ?"

"कुछ तो झगड़ा होगा ही। किससे होगा और किस सीमा तक होगा, कहा नहीं जा सकता।"

"तो हमको वहां नहीं जाना चाहिये क्या ?"

"यह तो अपने को अपराधी मान लेने के समान होगा।"

"ठीक है। खा पीकर चलना चाहिए और सब बात स्पष्ट रूप में हो जानी चाहिये। आप मेरे ऊपर के कमरे देखने नहीं आयेंगे ?"

मां देख आई हैं और उन्होंने वर्णन कर दिया है। मैं तो केवल यह ही कहता हूं कि व्यर्थ में रुपया खर्च कर दिया है।"

"और मैं तो अभी और व्यय करने वाली हूं।"

"अच्छा ? तीसरे कमरे पर ? वहां क्या करने वाली हो ?"

"इस कमरे की अभी योजना नहीं बनी। मैं कुछ व्यवसाय के विषय में विचार कर रही हूं। परन्तु उसकी बात तो कल करेंगे। उसके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अभी सोच ही रही हूं। विचार पूरा नहीं हुआ।

"क्यों ? रुपया पैदा करने की आवश्यकता पड़ गई है क्या ?"

"आवश्यकता के विषय में भी तो विचार करना होगा।"

विष्णु ने समझा कि भाई से पृथक् होने पर उसको क्या मिल रहा है ? यही जानने पर वह अपनी आवश्यकता का अनुमान की बात कह रही है। पर वह कौन-सा व्यवसाय करने वाली है ? वह समझ नहीं सका।

मां अल्पाहार ले आई।

: ९ :

ग्रीन होटल में सतीश सबसे पहिले पहुंचा था। उसने चाय के लिए पांच सीटों वाली मेज़ रिजर्व करा रखी थी। चटर्जी आया तो सतीश ने कह दिया, "कदाचित् विष्णु और अर्चना नहीं आ रहे।"

"क्यों ?"

"विष्णु अर्चना को लेकर भाग गया है।"

कहां और क्यों ?"

सतीश हंस पड़ा। हंसकर कहने लगा, "भला एक लड़का किसी लड़की को क्यों भगा ले जाता है ?"

"ओह, तो इसका मतलब हुआ कि बीवी बनाने के लिए ? पर भागने की क्या आवश्यकता थी ! अर्चना सज्ञान हो चुकी है। उसको राजी कर लिया था तो कौन मना कर सकता था !"

"मना तो मैं कर रहा था।"

"क्यों ? किस लिए ?"

"वह न तो हमारी जात-बिरादरी का है, न ही हमारी श्रेणी का।"

"और तुम्हारी क्या जात-बिरादरी है ? श्रेणी की बात तो मुझको समझ नहीं आई।"

"हम अग्रवाल मारवाड़ी हैं।"

"और वह भारत से बाहर की कोई बिरादरी है क्या ?"

"नहीं, मेरा अभिप्राय है। वह ब्राह्मण है। हम वैश्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम तो अपने को कम्यूनिस्ट कहते थे। भला कम्यूनिस्टों में भी वैश्य और ब्राह्मण होते हैं ?"

"यही तो बात है चटर्जी साहब। वह कम्यूनिस्ट भी नहीं।"

"तो यह बात कहो। परन्तु तुमने समझाया नहीं बहिन को ?"

"कहा था कि वह अपनी श्रेणी का नहीं है।"

"तो उसने क्या उत्तर दिया था ?"

"कुछ नहीं।"

"अर्थात् वह उसको अपनी ही श्रेणी का समझती है। अथवा श्रेणी भिन्नता को विवाह में वह किसी प्रकार की बाधा नहीं मानती। पर सतीश ! तुमने अपनी बहिन का विवाह अभी तक क्यों नहीं किया था ! कोई अच्छा-सा लड़का ढूंढकर आज से पांच वर्ष पूर्व ही उसका विवाह कर देना था।"

"वह मानती नहीं थी।"

"और अब तुम नहीं मान रहे थे। यही कह रहे हो न ? देखो सतीश, तुमको चिन्ता नहीं करनी चाहिये। विष्णु एक गरीब लड़का प्रतीत होता है और तुम्हारी बहिन के पास अपनी सम्पत्ति है। वह सदा उस पर शासन करेगी। सम्भव तो यह है कि वह भी कम्यूनिस्ट बन जायेगा।"

"आशा नहीं।"

"क्यों नहीं ? एक मुसलमान और कम्यूनिस्ट स्त्री का पति हिन्दू नहीं रह सकता न ?"

"यही तो चिन्ता की बात है वकील साहब। एक-दो बच्चे पैदा कर वह उसको छोड़ जायेगा।"

"नहीं भाई ! वह क्यों छोड़ेगा। यदि बात न बनी तो छोड़ेगी तुम्हारी बहिन.........।"

इस समय भट्टजी आ गये। वार्तालाप का तार टूटा। भट्टजी ने पूछ लिया, "अभी और कोई नहीं आया ?"

"श्रीमती चटर्जी तो अभी आने वाली हैं। रहे विष्णु और अर्चना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देखें, वे कब आते हैं।"

वकील ने उसके विषय में बात जानबूझकर नहीं की। वह विचार करता था कि उनके विषय में कुछ भी बताना सतीश का काम है। उसका नहीं। सतीश चुप था।

परन्तु सतीश और वकील दोनों एक-दूसरे का मुख देखने लगे, जब अर्चना और विष्णु दोनों इकट्ठे रिसेप्शन हाल में प्रविष्ट हुए। वे आये और हाथ जोड़ नमस्कार कर बैठ गये। अर्चना अपने भाई के पास, और विष्णु वकील के पास। सतीश ने पूछा, "तो तुम घर छोड़ गई हो?"

"जी, आपका। मैंने एक पृथक् मकान भाड़े पर ले लिया है।"

"कहां?"

"मानकतल्ला में।"

"वहां तो विष्णु रहता है?"

"हां। उनके मकान में, ऊपर की मंजिल पर।"

"तो तुम विष्णु से विवाह करोगी?"

"भला इससे यह कैसे सिद्ध हो गया? देखो भैया! विवाह की कोई चर्चा नहीं। चर्चा है आपकी तानाशाही की। कुछ दिन से आप यह समझने लगे थे कि मैं आप के अधीन अभी बच्ची मात्र हूं।"

"मैं तुमसे बड़ा तो हूं ही?"

"परन्तु बड़े होने का यह अर्थ कहां से आ गया कि सबके सम्मुख आप मेरा अपमान करने लगें।"

"मान-अपमान व्यर्थ की बात है। यह बुर्जूआ मनोवृत्ति का सूचक है। असल बात है कर्त्तव्य की। तुम अपना कर्त्तव्य पालन नहीं कर रही थी।"

"मैं तो यह समझी हूं कि आप अपने अधिकार से कुछ अधिक कर रहे थे। हम कामरेड मात्र थे। आप ने तो 'बॉस'(मालिक)बनना चाहा था।"

सामने चटर्जी विष्णु से पूछ रहा था, "देख रहे हो सामने क्या झगड़ा हो रहा है।"

"जी। एक अज्ञानी अपने अज्ञान का प्रदर्शन कर रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अज्ञानी ? क्या अज्ञान की बात कर रहा है वह ?"

"आप उससे पूछ सकते है। मैं तो यह ही कह सकता हूं कि सतीश पढ़ा-लिखा अनपढ़ मूर्ख गंवार व्यक्ति है। जो कुछ वह पढ़कर आया है, वह विद्या नहीं है। उससे वह पशु का पशु ही रहा है। वह आत्मा का हनन करने वाला असुर मात्र है।"

"चटर्जी मुख देखता रह गया। बात आगे नहीं चल सकी। चटर्जी की पत्नी अनिमा देवी आ गईं। वह अपने साथ अपनी पांच वर्ष की लड़की सावित्री को ले आयीं थी। एक कुर्सी और लगवाई गई। बैरा खाने का सामान मेज पर लगाने लगा।

चटर्जी ने सतीश को सम्बोधन कर कहा, "हां सतीश ! अब बताओ क्या प्रश्न था तुम्हारा ? फीस तो मिल गई। उत्तर भी दे दूं तो ठीक होगा।"

सतीश की अर्चना से बात अधूरी ही रह गई। वह जान नहीं सका कि उसका विष्णु से क्या सम्बन्ध है अथवा क्या होने वाला है।"

उसने अपना प्रश्न दुहरा दिया, "कल की समालोचना में आपने मूर्ख और अंधा को गाली नहीं मानी। यह क्यों ?

"देखो सतीश ! कोई शब्द प्रशंसा और गाली नहीं हो सकता जब तक उसका प्रयोग व्यक्ति विरोध के लिए न किया जाए। विचार धारा को अथवा उसके पोषकों को अंधा कहना गाली नहीं कहा जा सकता।

"अब देखो, भट्ट जी ने नारी के वक्षोज और नितम्बों की प्रशंसा की थी, परन्तु चन्द्रिका ने इसको निन्दा समझा। भट्ट जी ने नैनों के तीर चलाने की बात कहीं और वहां बैंठे स्त्री वर्ग ने इस पर आपत्ति की। उनकी आपत्ति भी वैसी ही थी, जैसी तुम्हारी विष्णु की कविता पर है। ये दोनों प्रकार की बातें व्यक्तिगत न होने से, साहित्य में स्वीकार करने योग्य हैं। गांधीवाद की निन्दा, गांधी की निन्दा नहीं हो सकती। इसी प्रकार नेहरू जी की धर्म निरपेक्षता की निन्दा नेहरूजी की निन्दा नहीं हो सकती।

नारीके सब गुणों को छोड़ केवल नितम्बों को देखने वालोंको अन्धा कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से भट्ट जी की निन्दा नहीं। सतीश ! तुम कई बार कह चुके हो कि शिव जी पर जल चढ़ाने वाले मूर्ख हैं। वह तो मेरी धर्मपत्नी भी चढ़ाती है। परन्तु मैं तुम्हारे कथनको अपनी धर्म पत्नी की निन्दा नहीं,परन्तु तुम्हारी अज्ञानता मानता हूं।

"देखो, 'ड्राइडन' ने अपने प्रतिस्पर्धी का नाम लिए बिना ही कह दिया था—'There comes a wagon of midnight soil.'

यह गाली नहीं। यह एक व्यंगात्मक साहित्य का उदाहरण बन गया है।"

सतीश वकील साहब की युक्ति को रद्द नहीं कह सका। वह चुप कर रहा। चाय और केक पेस्टरी इत्यादि लिए जा रहे थे। वकील साहब के कथन से उत्साहित हो विष्णु ने कह दिया, "परन्तु चटर्जी साहब ! सतीश जी का भी यह रोष नहीं। कार्ल मार्क्स के सब शिष्य युक्ति कर सकते ही नहीं। उस महामूर्ख ने कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टो में भी युक्ति विहीनता का उदाहरण दे दिया था। श्रीमान् लिखते हैं कि अकिंचनों के पास खोने को कुछ नहीं और जीतने को पूर्ण संसार है।"

चटर्जी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "भला इसमें मूर्खता क्या है?"

"यही कि यदि संसार के अकिंचनों का एक तरफ कर दिया जाये तो शेष नगण्य ही रह जायेगा। दुनिया में अकिंचन नब्बे प्रतिशत तो हैं ही।"

इस पर सतीश ने कहा, "शेष दस प्रतिशत ने ही तो पूर्ण संसार पर अधिकार कर रखा है।"

"वह तो उस दस प्रतिशत को निःशेष कर देने पर भी अकिंचनों का नहीं होगा। हां, मालिक दस प्रतिशत के स्थान और कम हो जाएंगे। सतीश जी, रूस में बोलशेविक पार्टी के सदस्य कितने हैं, वे ही तो रूस के वास्तविक मालिक हैं। उनकी संख्या रूस की पूर्ण जनसंख्या की चार प्रतिशत से भी कम है।"

"परन्तु शेष ९६ प्रतिशत को सुविधाएं तो सब के समान मिलती है।"

"यह मिथ्या कथन है। उच्च नौकरियां, पदवियां, अच्छे मकान और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बढ़िया वस्त्र इत्यादि तो पार्टी के सदस्यों अथवा उनसे सिफारिश किए लोगों को ही मिलते हैं। यही बात चीन में हो रही है। संसार दस प्रतिशत का होने के स्थान चार प्रतिशत का हो गया है।"

इस पर चटर्जी ने कह दिया, "यह तो है ही। जो राज्य के अनुकूल नहीं उसको राजकीय सुविधाएं कैसे दी जा सकती है ?"

"जैसे अमरीका और इंग्लैंड में सत्ताधारी दल के विपरीत मतदान करने वालों को मिलती हैं।"

"वह बात दूसरी है।" सतीश ने कह दिया, "वहां दलों-दलों में सैद्धान्तिक मतभेद नहीं।"

"सैद्धान्तिक मतभेद के बिना तो दल बने रह सकते ही नहीं। कुछ काल के लिये जनता को मूर्ख बनाया जा सकता है, परन्तु सदा के लिए ऐसा नहीं हो सकता।"

"तो रूस में भी जनता को मूर्ख बनाया जा रहा है ?" चटर्जी ने पूछ लिया।

"जी नही।" विष्णु का कहना था, "रूस में जनता को मूर्ख नहीं बनाया जा रहा, परन्तु चार प्रतिशत की ओर से ९६ प्रतिशत की आंखों पर पट्टी बांधी जा रही है। उनको कुछ देखने, सुनने और समझने ही नहीं दिया जाता। इसी को तानाशाही कहते हैं। कहने को तो रूस और चीन में सम्पत्ति-विहीनों की तानाशाही कहाती है। परन्तु यथार्थ में यह चार प्रतिशत चतुर और गुण्डों की तानाशाही है।"

"तो फिर क्या होगा ?"

"यदि ये देश सन्मार्ग पर न आये तो वहां विप्लव के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा।" सतीश का कहना था।

इस पर अनिमा चटर्जी ने कह दिया, "तो सतीश जी, रावण और कंस के मर जाने से भी इन्कार करते हैं ?"

सतीश हंस पड़ा। हंसते हुए कहने लगा, "वे सब काल्पनिक व्यक्ति थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और नैपोलियन ? मुसोलीनी तथा हिटलर भी ?"

इस पर तो सब हंसने लगे। अनिमा ने अंतिम निर्णय दे दिया, "संसार में भले और दुष्ट यही दो प्रकार की श्रेणियां है। दुष्ट कष्टदायक होते हैं। जब उनका कष्ट सीमा से अधिक हो जाता है तो उनको पदच्युत करने के लिए भगवान अवतार लेते हैं। असम्भव को सम्भव कर दिखाते हैं।"

"तो अब अवतार होगा। कदाचित् विष्णु जी के घर में होगा ?" सतीस ने व्यंगात्मक भाव में कह दिया।

उत्तर अनिमा ने ही दिया, "अवतार को किसी के घर में जन्म लेने की क्या आवश्यकता है। भगवान् दुष्टों के विनाश के लिए किसी के भीतर आकर बैठ जाते हैं और उससे अपना काम करा कर चुपचाप चल देते हैं। हिटलर के विनाश के लिये भगवान् चर्चिल के कलेवर में आये थे और छः वर्ष तक उसमें बैठ हिटलर का सर्वनाश करा कर चले गये थे। चर्चिल फिर वही का वही शरारती जीव रह गया था।"

"तब तो भगवान् विष्णु जी में ही आने चाहिये।"

"क्या जाने कहां और किस रूप में आयेंगे। पहिले भारत में कम्यूनिस्ट दुष्टता की सीमा पार तो करें।"

चाय समाप्त हो गई तो सब उठ खड़े हुए।

: १० :

उठते हुए सतीश ने अर्चना को कहा, "अभी तुम से और बातें करनी हैं।"

"तो आइये मेरे घर पर।"

"तुम्हारे घर पर ? वहां कैसे चलेंगे ?"

"क्यों सवारी नहीं है आज ?"

"है तो, परन्तु तुम मेरी मोटर गाड़ी में चढ़ोगी ?"

"क्यों ? भाड़ा लगेगा उसमें क्या ?"

"नहीं। मैं विष्णु को अपनी गाड़ी में चढ़ने नहीं दूंगा।"

"परन्तु उसको चढ़ाने के लिये किसी ने कहा है क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश इस सतर्क उत्तर से भौंचक्का हो मुख देखता रह गया "आओ भैया ! वहां मैं तुमको सब समझा दूंगी ।" अर्चना ने सतीश को आग्रह के भाव में कहा ।

"अच्छा चलो ।" दोनों रेस्टोरां से निकल गये । विष्णु, चटर्जी और उसकी पत्नी अनिमा देवी से बातें कर रहा था । चटर्जी विष्णु को कह रहा था "सतीश कह रहा था कि तुम उसकी बहिन को भगा ले गये हो ।"

"नहीं जी ! यह बात नहीं । यदि मैं यह कहूं तो सत्य के अधिक समीप होगा कि वह रात मेरे साथ भाग खड़ी हुई थी । उसके भाई ने मेरे सम्मुख ही उसका अपमान किया था ।"

इस पर विष्णु ने रॉक्सी थियेटर में हुई पूर्ण बात सुना दी । साथ ही बताया, "जब सतीश ने कहा, 'रात घर आ रही हो अथवा नहीं ? तो अर्चना के माथे पर त्योरी चढ़ गयी थी । मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होने लगा था कि अर्चना एक चपत अपने भाई के मुख पर लगा देगी, परन्तु उसने अपने पर नियन्त्रण कर कह दिया कि एक चाबी उसके पास है ।

"इसके उपरान्त उसने पिक्चर देखने के लिए नहीं कहा और बोली कि मैं उसको अपनी मां के पास ले चलूं ।"

"बहुत मूर्ख है यह सतीश ?" अनिमा ने कह दिया ।

चटर्जी ने कहा, "मूर्ख तो वह है ही । इस पर भी मैं यह समझा हूं कि उसने बहिन का इतना अपमान नहीं किया जितना तुम्हारा किया है । अर्चना तुम्हारा अपमान होता देख सहन नहीं कर सकी। विष्णु ! कहां रखा है उसको ?"

"रात तो वह मां के पास रही थी । प्रातः हमारे रहने के कमरों से ऊपर वाली मंजिल में एक तीन कमरों का फ्लैट भाड़े पर लेकर रहने लगी है ।"

"मैं समझता हूं कि तुमसे वह विवाह करेगी ?"

"अभी ऐसी कोई बात नहीं, चटर्जी साहब ! यदि कभी इस विषय पर चर्चा हुई तो आपको निमन्त्रण दूंगा ही ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"और यदि जड़वादियों की भांति विवाह हुआ तो ?"

"परन्तु मैं तो जड़वादी नहीं हूं।"

अब अनिमा ने अपने पति से पूछ लिया, "आपको काम तो नहीं जाना।"

"जाना तो है ?" चटर्जी ने कहा, "मैं क्लब जा रहा हूं।"

"मैं अर्चना के कमरे देखने जा रही हूं।"

"क्यों ?"

"उसके मन की बात जान कुछ सुमति देने का विचार रखती हूं।"

चटर्जी हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "मान न मान, मैं तेरा मेह-मान।"

"मेहमान बनकर तो जा नहीं रही। कुछ कहने का विचार रखती हूं। यदि नहीं मानेगी तो मुझको शोक नहीं होगा। मैं तो निष्काम भाव से ही कहना चाहती हूं। एक चार बच्चों की मां का अनुभव रखते हुए यह कर्तव्य समझती हूं कि एक कुमारी को कुछ शिक्षा दे दूं।"

"तो तुम यह कहने जा रही हो कि वह विवाह न करे ? अथवा कुछ और कहने जा रही हो ?"

"यह मैं यहां नहीं बताऊंगी। सुनने की इच्छा हो तो हमारे साथ आ जाइये। क्लब कल चले जाना ?"

"नहीं श्रीमती जी ! मैं तो क्लब जा रहा हूं। मेरे पास इन कम्यूनिस्टों से मगज़पच्ची करने की सामर्थ्य नहीं।"

"तो आप जाइये। क्यों विष्णु जी ! मैं साथ चलूं ?"

"मैं तो पैदल जाने का विचार रखता हूं।"

"मेरी टैक्सी में भी नहीं चलेंगे ?"

"आप निमन्त्रण देंगी तो चलूंगा।"

चटर्जी हंस पड़ा। उसने विष्णु को कहा, "अच्छा आगामी साहित्य सभा में देखूंगा कि इन सब का क्या परिणाम निकलता है।" इतना कह वह रैस्टोरां से बाहर आ टैक्सी पर सवार हो क्लब चला गया। अनिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चटर्जी और उसकी लड़की सावित्री विष्णु का साथ ले मानकतल्ला में विष्णु के मकान के नीचे जा पहुंचे। वहां सतीश की गाड़ी खड़ी देख विष्णु ने कह दिया, "अर्चना के भाई की गाड़ी खड़ी है।"

एक क्षण तक अनिमा झिझकी। फिर बोली, "तब तो और भी मज़ा रहेगा। आप भी आइये विष्णु जी।"

"चलिये। मैं आपको उसका स्थान दिखा देता हूं। मैं बिना बुलाये वहां जाने का विचार नहीं रखता।"

"तुम 'टिमिड' (भीरु) प्रतीत होते हो, विष्णु! इस प्रकार स्त्रियों पर विजय नहीं पाई जा सकती।

"अनिमा देवी! मैं उस पर विजय प्राप्त करने की लालसा नहीं रखता। आप जाइये।"

विष्णु ने अनिमा देवी को अर्चना के फ्लैट के बाहर खड़ा कर दिया, द्वार पर पर्दा टंगा था। भीतर सतीश ऊंचे-ऊंचे बोलता सुनाई दे रहा था। विष्णु चुपचाप नीचे उतर गया।

अनिमा देवी ने आवाज़ दी, "अर्चना! मैं आ जाऊं?"

और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये वह भीतर घुस गयी। सावित्री उसके साथ थी। अनिमा ने सतीश को यह कहते सुन लिया था कि तुमने तो माता-पिता का नाक काटने की बात की है।"

अनिमा ने कमरे में पहुंचते ही कह दिया, "मैं यही विचार कर रही थी कि तुम बहिन से लड़ने आये हो?"

"पर अनिमा देवी! आप यहां क्या करने आई हैं?"

"अर्चना की तुम जैसे पशु से रक्षा करने।"

"ओह! करो। देखूं कैसे रक्षा करती हो?" उसने अर्चना को सम्बोधन कर कहा, "चलो उठो। यह स्थान तुम्हारे रहने योग्य नहीं है।"

अनिमा और सावित्री कुर्सियों पर बैठ गईं। सतीश कोच पर बैठा था और अर्चना उसके समीप बैठी थी।"

अर्चना कुछ कहना चाहती थी, परन्तु अनिमा की ओर देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अनिमा ने कहा, "हाँ अर्चना! जो स्वेच्छा स करना चाहो करो। मैं तुम पर अंकुश लगाने नहीं आई। परन्तु मैं सतीश को तुम पर वल प्रयोग नहीं करने दूंगी।"

"तो साथ पुलिस लेकर आई हो?"

"यह तुम दख लोगे कि पुलिस है अथवा सेना।"

अर्चना ने साहस पकड़कर कह दिया, "भैया! मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी।"

"तो होटल में चलकर रहो। इस पचास रुपये महीने की गन्दी जगह पर नहीं रहने दूंगा।"

"मैं यहां कुछ दिन रहने के उपरान्त यह निर्णय करूंगीं कि यह स्थान कलकत्ता के किसी भी होटल से कम गन्दा है अथवा अधिक।"

"अनिमा देवी। अब तुम बताओ कि एक लखपति की लड़की के लिये यह स्थान ठीक है क्या?"

"तो एक लखपति की लड़की को यह निश्चय करने का अधिकार नहीं कि कौन-सा स्थान उसके लिये ठीक है?"

"यह लड़की वासनाभिभूत हो मतिभ्रष्ट हो चुकी है।"

"यही देखने तो यहां आई हूं कि यह मतिभ्रष्ट हो चुकी है अथवा तुम।"

"तुम्हारा इससे क्या सम्बन्ध है?"

"यह तो मैं इसको बता दूंगी। तुमको मैं यह कहना चाहती हूं कि यह तुम्हारी सम्मति मानना नहीं चाहती। इस कारण यदि और कुछ वात नहीं तो तुम यहां से चलते बनो।"

"ओह! तुम किस अधिकार से यह आज्ञा दे रही हो?"

अब अर्चना ने कहा, "भैया, मैंने बता दिया है कि मैं वहां से क्या चली आई हूं। मैं समझती हूं कि अब तुम्हारा यहां कुछ काम नहीं। कभी मुझसे काम हो तो पत्र डालकर मिलने का स्थान और समय निश्चय कर लेना। मैं तुमको यहां आने के लिये विवश नहीं करूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश कुछ कहने ही वाला था कि अनिमा उठ खड़ी हुई और बोली, "सतीश ! अब चलो। नहीं तो...।"

—"नहीं तो क्या ?" सतीश ने भी खड़े हो पूछ लिया।

अनिमा ने कमरे के द्वार के समीप जा आवाज़ दे दी, "विष्णु जी, ओ विष्णु जी।"

"तो यह बात है।" सतीश समझ गया कि अनिमा फौजदारी के लिये तैयार होकर आई है। एक भी शब्द बोले बिना वह नीचे उतर गया। विष्णु उसको सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ मिला।

: ११ :

विष्णु ने अर्चना की बैठक के द्वार पर आकर पूछा, "अनिमा जी, क्या है ?"

"कुछ नहीं। सतीश यहां से जाता नहीं था। मैं समझी थी कि धक्के देकर निकालना होगा, परन्तु वह तो आपका नाम सुनते ही भाग खड़ा हुआ है।"

"बस ? तब तो ठीक है। अच्छा मैं चलता हूं।"

"हां, जब बुलाऊं तो चले आइयेगा।"

विष्णु हंसता हुआ नीचे उतर गया। शंकर सीढ़ियों में खड़ा था। उसने पूछ लिया, "क्या था भैया ?"

"सम-अन-डिज़ायरेबल इन्ट्रूडर। वह चला गया है।"

शंकर समझा नहीं। उसको तो समझ आया था कि अर्चना का भाई था।

अनिमा ने अर्चना को बैठाते हुए कहा, "मुझको विदित नहीं था कि बहिन भाई से स्नेह प्राप्त कर रही है। पता होता तो कल किसी समय आती।

"विष्णु ने अभी-अभी कल की बात बतायी है। इस कारण मैंने समझा कि तुमसे मिलना चाहिये और यदि तुम को किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो देनी चाहिये। बताओ अकेली तो अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं करतीं।

"भैया के घर से यहां कम अकेली हूं। यहां विष्णु जी की मां हैं। वे कल रात और आज मध्याह्न के समय बहुत सहायता देती रही हैं। वहां तो कोई स्त्री समीप फटकती नहीं थी। वैसे तो मामा-मामी और चाचा-चाची हैं, परन्तु भैया सबसे लड़ पड़े हैं और दो वर्ष हो गये हमारे यहां कोई आता नहीं।

"कॉमरेड लोग आते रहते थे। आने वालों में कुछ लड़कियां भी आती थीं, परन्तु वे स्त्री वर्ग में थीं, अथवा पुरुष वर्ग में, पता नहीं चलता था। मेरी कुछ कालेज की सहेलियां थीं। वे भी हमारे घर में नहीं आती थीं। पिताजी के जीवन काल में तो आती थीं, परन्तु पीछे उन्होंने न आने में बहाने बनाने आरम्भ कर दिये। अब तो मैं किसी को कहती ही नहीं थी।"

"परन्तु अर्चना, शास्त्र में लिखा है कि स्त्री को किसी पुरुष के संरक्षण में रहना चाहिये। अब तुम सज्ञान हो चुकी हो और तुमको पिता-भाई से पति का संरक्षण अधिक ठीक रहेगा।"

अर्चना मुस्कुराते हुए बोली, "यद्यपि आपके शास्त्र के सिद्धान्त को तो मैं मानती नहीं, इस पर भी पति कहीं मिले तब ही तो ला सकती हूं अथवा उसके यहां जा सकती हूं।"

"कलकत्ता पुरुषों से भरा पड़ा है और तुम कहती हो कि कोई मिलता नहीं। कहो तो मैं तुम्हारी सहायता कर दूं।"

अर्चना हंस पड़ी। हंसकर बोली, "परन्तु जब तक जूता फिट नहीं बैठेगा, कैसे उसको पहिन लूं।"

"भली लड़की! जब जूता खरीदना होता है तब ही तो दुकान पर जाकर ही ला सकती हो। किसी समझदार जूता बेचने वाले की दुकान पर जाओगी तो वह तुम्हारा पांव देखते ही समझ जायेगा कि किस नम्बर का और किस डिज़ाइन का जूता तुमको ठीक रहेगा। फिर तुम स्वयं भी देखकर निर्वाचन कर सकती हो।"

"तो आपकी पति रूपी जूतों की दुकान है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं अर्चना ! मेरी दुकान नहीं है। इस पर भी है मैं तुम्हारे लिये उचित पति ढूंढ कर ला सकती हूं। यहीं ले आऊंगी। यत्न करूंगी कि फिट बैठ जाये।"

इस पर दोनों हंसने लगीं। एकाएक अर्चना ने उठकर कहा, "तो आइये मैं आपको एक वस्तु दिखाऊं।"

अनिमा उसके साथ चलने को तैयार हो गई। वह पूछने लगी, "कितनी दूर जाना होगा ?"

उसका विचार था कि वह उसे विष्णु की मां के पास ले जाना चाहती है, परन्तु अर्चना उसको अपने फ्लैट के तीसरे कमरे में ले गयी। वह सर्वथा रिक्त पड़ा था। अर्चना ने बिजली का प्रकाश किया तो अनिमा ने पूछ लिया, "यह क्या है ?"

"यह उसके लिये खाली रखा है जिसको लाने के लिये आप कह रही हैं।"

"ओह ! समझी। अर्थात् इस विषय में तुम्हारा मन अभी रिक्त पड़ा है। तब तो पति ढूंढना कुछ कठिन नहीं।"

"हां, ढूंढ दीजिये। पर इतना समझ लीजिये कि मेरी रुचि साधारण लड़कियों सी नहीं है। साधारण लड़का मैं रिजैक्ट भी कर सकती हूं।"

"मैं यह समझी थी कि तुम अपने पति के निर्वाचन के उपरान्त भाई से पृथक् हुई हो। परन्तु जांच-पड़ताल से पता चला है कि नहीं। अब तुमने उसका स्थान रिक्त दिखाकर मेरी जांच की पुष्टि की है।

"देखो। मैं तुमको अपनी बात बताती हूं। मैं भी बी० ए० तक पढ़ी हूं और अपने पति के लिये बहुत विचित्र कल्पनाएं किया करती थी। कई लड़के देखे और कई दिखाये गये, परन्तु कोई मेरी कल्पना को छू तक नहीं पाता था। चार वर्ष व्यतीत हो गये। मेरे सम्बन्धी निराश हो चुप कर गये थे। मैं नाना जी के घर बनारस गई हुई थी कि एक दिन एक बाबा जी मिल गये। वे उत्तराखण्ड के रहने वाले थे। नाना जी उनको भोजन कराने घर ले आये थे। वे बाबा से काफी बड़े थे। इस पर भी कमर सीधी और आंखों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खोज रखते थे। हम घर के सब प्राणी उनके सामने बैठे थे। नाना जी उनको भोजन करा रहे थे। एकाएक वे मेरी ओर देखकर बोले, 'यह लड़की भटक रही प्रतीत होती है। क्यों बेटी ! क्या चाहती हो ?'

"मेरी आंखें झुक गईं और मैं कुछ नहीं बोली। इस पर दो-चार ग्रास खाकर वे कहने लगे, 'बच्चों का खिलौने से मोह तो उसके रंग-रूप से ही होता है, परन्तु बेटा ! पति खिलौना तो नहीं हो सकता। वह सजीव मन और बुद्धि रखने वाला प्राणी होता है। इस कारण पति की खोज में मन बुद्धि और आत्मा की परख शरीर से अधिक आवश्यक होती है। यदि इस दृष्टि से देखोगी तो जीवन में सफल होगी।"

"मैंने अपनी कल्पना को मोड़ दिया और ये चटर्जी महोदय मिल गये। विवाह हुए दस वर्ष हो चुके हैं। चार बच्चों की मां हूं और मैं अपने जीवन से सर्वथा प्रसन्न हूं।"

"देखिये मिसेज़ चटर्जी ! आप मेरी मौसी बन जायें। ठीक है न ? और किसी मन और बुद्धि रखने वाले आत्मा को पकड़ लाइये। मैं मान जाऊंगी। परन्तु बुद्धिशील तो कॉमरेड श्रेणी में भरे पड़े हैं। मुझको वे मनविहीन अर्थात् संवेदना रहित प्रतीत हुए हैं। मन जहां दिखाई दिया है वहां बुद्धि की कमी ही प्रतीत हुई है। आप लोगों ने एक तीसरी वस्तु 'आत्मा' खड़ी कर दी है। रात विष्णु जी की मां ने युक्ति से सिद्ध कर दिया था कि मुझ में आत्मा है। वह आत्मा है, या मन है ? अभी समझ नहीं सकी। दूसरे जिसको मन कहते हैं, नीचे वाली माता जी उसको आत्मा कहती थीं।

"अब मौसी ! आत्मा, मन और बुद्धि तीनों के रखने वाला कोई प्राणी दिखायेगीं तो कदाचित् समझ सकूंगी कि आत्मा क्या है।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत पढ़ती रही हो। यह युरोपीय दार्शनिकों को पढ़ने का ही परिणाम है। वे लोग मन, बुद्धि और आत्मा तीनों को 'माइंड' (मन) की ही संज्ञा देते हैं। जैसे हाथी अपनी मोटी उंगलियों से खस-खस के दाने चुन नहीं सकता, इसी प्रकार उनकी मोटी बुद्धि तीनों में भेद नहीं कर सकी। परन्तु अर्चना यह मैं तुमको सिखा दूंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, खाली समय में मेरे घर आ जाया करो। कभी मैं भी तुम्हारे यहां आ जाया करूंगी। इतना ध्यान रखना कि मेरी देख-रेख में पांच प्राणी हैं। चार ये भाई-बहिन हैं और पांचवें इनके पिता।" उसने सावित्री की ओर संकेत कर कह दिया।

"तो मौसी! मुझको भूल गई हो। मैं अब छठा प्राणी तुम्हारी देख-रेख में आ गयी हूं।"

"ओह! ठीक है। पर तुम यहां रहती हो न। इससे तुम्हारी देख-रेख इन बच्चों की भांति नहीं कर सकूंगी।"

"पर मैं इनस बड़ी भी तो हूं।"

"अच्छा लो। अब मैं चलती हूं। कल मध्याह्न के समय आना। तुमको तुम्हारे दूसरे भाई बहिन दिखाऊंगी।"

दोनों हंसती हुई नीचे उतर आईं। नीचे दोनों विष्णु की मां से मिलीं। अर्चना ने अनिमा का परिचय इस प्रकार कराया। "माता जी! ये हैं हमारी साहित्य सभा के समालोचक महोदय श्री नरेश चटर्जी एडवोकेट कलकत्ता हाईकोर्ट की पत्नी अनिमा देवी। इन्होंने बहुत कृपा कर मेरी मौसी बनना स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार मेरे चार बहन भाई और बन गये हैं। यह सावित्री बहिन है।"

"और अनिमा मौसी! ये विष्णु शर्मा जी की मांजी हैं। इन्होंने कल ही मुझे अपनी बेटी बना लिया था। इस प्रकार कल मां मिली और आज मौसी मिली है। अब मैं एक बहुत बड़े परिवार में हो गई हूं।"

दोनों बड़ी औरतें हंसने लगीं। रुक्मिणी अर्चना की पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद देने लगी, "सौभाग्यवती रहो बेटी"।

"अब तो हो गयी माताजी! कितना बड़ा भाग्य हो गया है! पिछले पांच वर्ष से मैं अपने को अकेली समझ रही थी। अब तो एक बड़े परिवार की बच्ची हूं।"

"हां। परमात्मा का धन्यवाद करो।"

अनिमा ने पूछ लिया, "विष्णु घर पर नहीं है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"है। अपना लेखन कार्य कर रहा है। अभी भोजन के समय में आधा घण्टा है।"

"ठीक है। उसको मेरा नमस्कार कहियेगा। मैं अब जा रही हूं।"

अनिमा सीढ़ियां उतर गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

उक्त घटना को एक मास होने जा रहा था और साहित्यिक सभा की मासिक गोष्ठी होने वाली थी। इसी गोष्ठी के विषय में सतीश कुछ कॉम-रेडों से बातचीत कर रहा था। साहित्यिक सभा का संयोजक मणीन्द्र मुखर्जी भी वहां बैठा था। सतीश का कहना था, "मैं समझता हूं कि इस सभा में मूल-चूल परिवर्तन करना पड़ेगा।"

"क्या परिवर्तन चाहते हैं ?"

"एक तो समालोचक बदल दिया जाये।"

"परन्तु चटर्जी जैसा प्रतिष्ठित व्यक्ति मिलना कठिन है। वह अंग्रेजी का विख्यात लेखक भी है।"

"उसकी ख्याति को क्या करें, जब वह हमारे उद्देश्यों पर ही कुठार-घात करने लगे। मेरी सम्मति में अब की सभा में बंगाल असैंबली के डिप्टी स्पीकर कान्तिनारायण चट्टोपाध्याय को ले आऊंगा और आप उसका नाम घोषित कर दीजिये।"

संयोजक कुछ चिन्तित प्रतीत हुआ। इस पर सतीश ने पूछ लिया, "डर किस कारण रहे हो ?"

"इस कारण कि यह साहित्य सभा राजनीति का अखाड़ा बन जायेगी ?"

"यह तो होना ही चाहिये। देखो मणीन्द्र ! हमारा सिद्धान्त है कि संसार में अर्थ-व्यवस्था ही एक मुख्य विषय है और संसार की राजनीति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास, साहित्य, सर्वांश समाज अर्थात् सब क्रियाएं अर्थ के चारों ओर घूमती हैं। इस कारण साहित्य भी हमारी पार्टी को सहायक होना चाहिये। हमारी पार्टी ही एक है जो अर्थ को प्रधानता देती है।"

"वह तो ठीक है सतीश बाबू। परन्तु नीति भी तो एक बात है। इस समय हम कलकत्ता के मुख्य-मुख्य साहित्यकारों को अपनी ओर खींच रहे हैं। इस सभा में से सब सम्प्रदायवादी, धर्मपंथी भाग गये हैं। केवल विष्णु रह गया है। वह भी दो तीन सभाओं में भगा दिया जायेगा। यदि हमने चटर्जी को निकाला तो यह समझो कि हमारी सभा साहित्य सभा नहीं रह जायेगी। यह नीति नहीं है।"

"मुझे कुछ उलट बात समझ आ रही है। विष्णु अपने सहायक खड़े कर रहा है। अर्चना तो गयी ही है, अब भट्ट जी जाते प्रतीत होते हैं। मुझे संदेह हो रहा है कि विष्णु इस बार भट्ट जी का अध्यक्ष बनकर उन्हें भी अपने अनुकूल कर लेगा।"

"ऐसा हो नहीं सकेगा। मैं भट्ट जी को बहुत भली-भांति जानता हूं। स्त्रियों की रमणीयता में विचरनेवाला कवि धर्मपंथियों में नहीं जा सकता।"

"कुछ न कहो मणीन्द्र। ये हिन्दू वादी बड़े दुष्ट होते हैं। खैर! मैं तुम्हे कहना चाहता हूं। यदि तुमने चट्टोपाध्याय का नाम समालोचक के लिये घोषित न किया तो तुमको इस सभा का संयोजक नहीं रहने दूंगा।"

मणीन्द्र मौन हो गया। कुछ अन्य ने सतीश का समर्थन किया तो मुखर्जी ने कह दिया, "अच्छी बात है। चट्टोपाध्याय को मंच के पास लाकर बैठा देना।"

"और इस बार अध्यक्ष मुझको बनाना है।"

"यह हो जायेगा। इसके लिये अपने लोग कुछ अधिक संख्या में जाने चाहिये। पिछली बार अर्चना को अपनी पार्टी की सदस्या मान ही हम चुप रहे थे।"

"वह पार्टी से बागी हो गयी है।"

"यदि उसने कुछ सक्रिय विरोध किया तो हम उसे श्मशान का मार्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिखा देंगे।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश इतनी दूर तक जाना नहीं चाहता था, परन्तु वह साथियों में अपनी वहिन का पक्ष नहीं ले सका।

इसके उपरान्त यह निश्चय होने लगा कि इस सभा में कौन-कौन बोलेगा। इस पर एक ने पूछ लिया, "यह बेतुकानन्दन कहां से आ पहुंचा था?"

मणीन्द्र ने वताया, "मैंने उसका पता लिया है। वह भागलपुर का रहने वाला है। पार्टी की टिकट होल्डर नहीं। इस पर भी हमारे विचार का व्यक्ति है। उसके विचार में भी चीन के आक्रमण से पार्टी के सिद्धान्तों के प्रचार में बाधा पड़ी है। उसको इस सभा का ज्ञान अपने ही एक कॉमरेड से मिला था। वह किसी निजी काम से कलकत्ता आया था। अब चला गया है।"

इस प्रकार आगामी साहित्यिक सभा के लिये योजना बना कर सतीश मणीन्द्र की बैठक से चला आया। उसके चले आने पर मणीन्द्र ने अपने एक साथी गिरीश कुमार से कहा, "मैं सतीश की तानाशाही से तंग आ गया हूं। अब यह धमकी दे रहा था कि यदि मैंने चट्टोपाध्याय को समालोचक घोषित न किया तो मुझको संयोजक पद से हटवा देगा।"

गिरीश का कहना था, वह अपने आपको बहुत बड़ा साहित्यिक मानता है। वर्ष में एक दो लेख कहीं छप गये और लेखक बन गये। उन लेखों में होता भी क्या है। कितने लोग उनको पढ़ते हैं।"

मणीन्द्र मुस्कुराता हुआ गिरीश की बात सुन रहा था। उसके मन में सतीश की साहित्यिक योग्यता की बात नहीं थी। वह तो अर्चना के विषय में विचार कर रहा था। एक समय वह अर्चना पर अपनी दृष्टि रखे हुए था। परन्तु जब भी वह उससे मिलने जाता था, सतीश उसको आंखों से ओझल होने नहीं देता था और वह अर्चना से अपना अनुराग प्रकट नहीं कर सका था। एक दिन अर्चना ने उसको कहा था कि वह उससे मिलने न आया करे। उसका भाई पसन्द नहीं करता। तब से ही वह सतीश को अपना शत्रु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मानता था। आज सतीश के यह कहने पर कि अर्चना पार्टी से बाग़ी हो गयी है, उसको सतीश की मूर्खता का एक और प्रमाण मिला था। उसने इसको नीचा दिखाने की योजना बना ली।

मणीन्द्र ने अपने मन की बात गिरीश को बतायी नहीं। केवल यह कहा, "मुझे पार्टी सैक्रेटरी से इस विषय में बात करनी होगी।"

"मैं भी बात करूंगा। यह पैसे वाला कॉमरेड अपने स्थान पर बैठा देना चाहिये।"

"ऊंह! पैसा तो हम एक दिन में लूट लेंगे।"

गिरीश हंस पड़ा। हंस कर उसने कहा, "इसकी बहिन अच्छी सुन्दर लड़की है, परन्तु अभी तक उसका किसी के साथ सम्बन्ध नहीं बना। बहुत विचित्र है!"

"मुझको कुछ सन्देह है कि बहिन भाई घर में ही अपनी आवश्यकताएं पूरी कर लेते हैं।"

"परन्तु सतीश की तो बहुत लड़कियों से मैत्री है।"

"इससे क्या होता है। सतीश को और काम ही क्या है। पार्टी के काम में रुचि लेना और लड़कियों को लेकर घूमते फिरना।"

"एक बात और मुखर्जी! सुना है अर्चना सतीश का घर छोड़ विष्णु के घर के ऊपर वाली मंज़िल में जा रहने लगी है।"

"सत्य? तो इसका यह मतलब है कि वह विष्णु से प्रेम करने लगी है।"

"इसीलिये तो सतीश कहता था कि वह पार्टी से बागी हो गयी है।"

"तो इन दोनों बहिन भाइयों को सन्मार्ग दिखाना होगा।"

गिरीश नहीं जानता था कि मणीन्द्र भी अर्चना के विषय में लालसा रखता है। मणीन्द्र ने गिरीश को अपने मन के भाव न बताते हुए अन्य लड़कियों की बातें आरम्भ कर दीं।

: २ :

उसी सायंकाल मणीन्द्र चटर्जी के घर जा पहुंचा। चटर्जी घर पर ही था। मणीन्द्र ने जब अपना नाम भीतर भेजा तो उसको भीतर बुला लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गया । मणीन्द्र के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब वहां पर विष्णु शर्मा, अर्चना और अनिमा देवी भी बैठी मिलीं । मणीन्द्र ने सब को नमस्कार की तो चटर्जी ने उसको अपने समीप बैठा कर पूछा, "बताओ मणीन्द्र, चाय लोगे या कुछ ठण्डा ड्रिंक ।"

"हां, प्यास तो लगी है ।"

अनिमा ने नौकर को बुलाकर ऑरेंज स्क्वेश लाने के लिये कह दिया । मणीन्द्र ने अर्चना से पूछ लिया, "आपको घर पर कभी देखा नहीं । कहां रहती है आप ?"

"मैंने अपना पृथक् मकान ले लिया है ।"

"क्या ? सतीश जी से झगड़ा हो गया है क्या ?"

"झगड़े में कोई कारण नहीं । उनको मेरे वहां रहने से कुछ कष्ट होने लगा था । मैं समझती हूं कि वे अब सुखी होंगे ।

"कब मिले थे आप से ?"

"अभी-अभी यहां थे । आपके आने से दस मिनट पूर्व ही यहां से गये हैं ।"

"चटर्जी साहब ! इन बहिन भाई में सुलह करा दो न ?"

"मुखर्जी ! झगड़ा कुछ नहीं । केवल दोनों के दृष्टिकोण में अन्तर पड़ गया है ।"

"क्या अन्तर पड़ गया है ? क्या मैं समझ सकता हूं कुछ ?"

उत्तर अनिमा ने दिया, "मैं बताती हूं, आपको भी यह जानकर लाभ ही होगा । मैं यह समझी हूं कि किसी व्यक्ति को समाज की कोई न कोई सेवा किये बिना अन्न खाना पाप है ।"

"तो इसमें नवीनता क्या है ?"

"नवीनता यह है कि मैंने एक सेवा कार्य अपने लिए चुन लिया है और उसको करने की योजना बना रही हूं ।" अर्चना ने उत्तर दिया ।

"एक महान् सेवा तो आप पहिले भी करती थीं । साहित्य सृजन कर रही थीं । यह एक महान् सेवा थी ।"

"साहित्य सृजन की मुझ में योग्यता नहीं थी । यही कारण था कि मैं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसमें सफल नहीं हो रही थी ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सफल क्यों नहीं हो रहीं ? आपका पिछले मास की साहित्यिक सभा में गाया गीत दिल्ली की "यमुना" मासिक पत्रिका में छपा है और सबने बहुत पसंद किया है। विशेष रूप में वह पंक्ति 'पपिया जागता-भोर जानकर, है स्वप्न ले रहा निराधार।' यह पंक्ति भारत सरकार के व्यवहार को बहुत अच्छी तरह प्रकट करती है। और फिर 'है कहां बौर अखियां उधार' तो जन-जन के मुख पर चढ़ गया है।"

और आप इसको सफलता समझते हैं ? परन्तु विरोधी समालोचक इसको अकर्मण्यता का प्रेरक मानते हैं। उनका कहना है कि 'सो जा' की प्रेरणा तो मरणासन्न साहित्य की ही होती है। सजीव साहित्य तो कुछ ऐसा होना चाहिये :—

चलने वाले चलते ही हैं, बाधाएं आती जाती हैं।
घटाटोप औ' अन्धेरी भी, चलना रोक नहीं पाती है॥

"मरहबा ! मरहबा !" मणीन्द्र के मुख से निकल गया, "सतीश जी तो कहते थे कि आप प्रगतिशील नहीं रही।"

इस समय नौकर स्क्वेश ले आया था। मुखर्जी पीने लगा तो अनिभा ने कह दिया, "मैं समझती हूं कि यह प्रगतिशील तो अब हुई है। पहिले यह जड़ तुल्य एक स्थान पर खड़ी थी। अब यह अपने लिये एक विशाल तथा लम्बा पथ चलने को पाती है।"

मणीन्द्र ने शर्बत पीते हुए अपने आने का प्रयोजन वर्णन कर दिया, "मैं तो आपको सचेत करने आया हूं। आगामी साहित्यक सभा में एक नया समालोचक बनाये जाने का प्रस्ताव आ रहा है।

"तो इसमें सचेत करने की क्या आवश्यकता है। कौन मुझको फीस मिलती है उस काम की ?"

"यह बात नहीं वकील साहब ! संसार विचार संघर्ष का दूसरा नाम है। आप एक विचार के पोषक हैं और दूसरे आपके विचार को पसन्द नहीं करते। वे आप के विचारों को मतदान से सभा से निकाल देना चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरा विचार क्या है ?" अर्चना ने पूछ लिया।

"आप न्याय का प्रचलन चाहते हैं। सभा में कुछ अन्य भी हैं जो आपके व्यवहार की सराहना करते हैं। वे मतदान का विरोध मतदानसे करना चाहते है, परन्तु कहीं आप ही इस दंगल से बाहर हो गये तो फिर आपको समर्थन करने वाले तो बिना मतदान के ही परास्त हो जाएंगे।"

"तो उनको कह दो कि अपने समर्थन के लिये किसी अन्य को सभा में ले आयें।"

"तो आप एक झटके में ही दम तोड़ गये हैं ?"

"दम तोड़ने की बात नहीं, मणीन्द्र ! मैं साहित्य में राजनीति नहीं लाना चाहता।"

"परन्तु आपके पीछे हट जाने से तो वह पूरे वेग से आयेगी। वकील साहब ! आप डटे रहें तो मैं इस सभा को गन्दी नाली में बह जाने से रोक सकता हूं। मैं इसको विचार स्वातंत्र्य का एक मंच बनाये रखना चाहता हूं।"

इस समय अर्चना ने पूछ लिया, "मणीन्द्र जी ! यह सब कुछ अपने मन से कह रहें हैं या 'हाई कमाण्ड' की आज्ञा से ?"

"हाई-कमाण्ड की आज्ञा तो नहीं, परन्तु मैं समझता हूं हाई-कमाण्ड मेरी इस सम्मति को रद्द नहीं करेगा।"

"तो ऐसा करिये। पहिले हाई कमाण्ड से स्वीकृति ले आइये। सतीश जी अभी कह गये हैं कि वकील साहब इस बार सभा में न आए। उनका अपमान हो जायेगा। वे कह गये हैं कि इनकी पिछली सभा की कार्रवाई की समालोचना किसी ने भी पसन्द नहीं की।"

"इसके विपरीत मेरी सूचना है कि इनकी समालोचना को हमारे 'हाई कमाण्ड' ने बहुत पसन्द किया है।"

"फिर भी वहां से पक्की बात जान कर यहां खबर देंगे तो वकील साहब वहां जाने के विषय में विचार कर लेंगे।"

"मैं कल तक सब समाचार आपको दे दूंगा।"

वकील साहब ने मणीन्द्र को विदा करने के लिये कह दिया, "और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ बात भी है क्या ?"

"मैं अर्चना जी से मिलने के लिये जाने वाला था। यहीं मिल गयी हैं।"

'हां, यहीं बता दीजिये क्या काम है ?" अर्चना ने पूछ लिया।

"मैं यह कहने आया था कि इस बार विष्णु जी को अध्यक्ष बनाने का विचार है, परन्तु यह तब ही सम्भव हो सकेगा जब आप स्त्री सदस्यों को मिला ले।

"पर मैं विष्णु जी के लिए क्यों 'कनवेसिंग' करूं ?"

"यदि 'हाई कमाण्ड' की आज्ञा हुई तब तो करेंगी।"

"मैंने पार्टी छोड़ दी है। पार्टी का टिकट वापिस कर दिया है।"

"तो यह अफवाह सत्य है कि आपका विवाह हो रहा है ?"

"हां। यह ठीक है। परन्तु मेरा पार्टी छोड़ना इस कारण नहीं।"

"तो हमारे जीजा कौन हैं, क्या हैं, कहा हैं ?"

"यह अभी पता नहीं। अभी तो यह ही पता चला है कि मैं विवाह कर रही हूं। यही समाज सेवा की बात मैंने पहले कही थी।"

"तो विवाह करना समाज सेवा है। ऐसा आप मानती है ?"

"हां, हिन्दू विचार धारा के अनुसार।"

"यही बात तो हम मानते हैं।"

"दोनों के मानने में अन्तर है। एक में मनुष्य स्वेच्छा से सेवा करता है। इसको धर्म कहा है और आप इसको समाज की ओर से नियुक्त मनुष्य का एक काम मानते हैं। यह नौकरी है।

"नौकरी भी तो सेवा होती है ?"

"परन्तु एक नौकर की सेवा न तो धर्म होता है न अधर्म। इसके धर्म-अधर्म का निर्णय तो मालिक के विचार पर है। समाज अधर्म युक्त व्यवहार भी रख सकता है।"

"हम यह मानते हैं कि समाज अधर्म कर सकता ही नहीं। इसके सब काम धर्म युक्त ही होते हैं।"

"हिन्दू विचार से यह बात न तो युक्ति-युक्त है और न ही सत्य। समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लूट-खसूट और चोरी भी कर सकता है। उस समय समाज के सब सेवक चोर और डाकू माने जाएंगे।"

"परन्तु समाज किसी की चोरी करेगा ही क्यों? सब का समान अधिकार होने से चोरी डाके की आवश्यकता रहेगी ही नहीं।"

"विचार भेद हो जाने से तो बहुमत अल्पमत का सब कुछ छीन सकता है। यह चोरी ही है।"

चटर्जी ने इस विवाद को बन्द करते हुए कहा, "मणीन्द्र! तुम इस बात को समझ नहीं सकते। कारण यह है किसी भी बात को समझने के लिए निर्मल बुद्धि की आवश्यकता है। वह तुममें है नहीं। अतः यह विवाद व्यर्थ है। एक बात मैं कहता हूं। सुन लो और उस पर विचार कर लेना। वह बात यह है कि सत्य और न्याय मतदान से निश्चय नहीं होते।"

"तो कैसे निश्चय होते हैं?"

"इसके लिए सृष्टि के आदिकाल से कुछ नियम बने हुए हैं। उनको शाश्वत धर्म का नाम दिया जाता है। वे तुम समझ सको तो तुम अपनी युक्ति के थोथापन को स्वयं समझ जाओगे। परन्तु मैं समझता हूं कि तुम्हारी बुद्धि अभी इतनी निर्मल नहीं हुई। फिर किसी समय इसके विषय में विचार करेंगे।"

मणीन्द्र ने उठते हुए कहा, "मैं कल तक अपने हाईकमाण्ड का निश्चय बताऊंगा। तब आप अपने व्यवहार का निश्चय कर मुझे बता दीजिएगा। उसके अनुसार मैं प्रबन्ध कर दूंगा।"

"अच्छी बात है।"

मणीन्द्र गया तो चटर्जी ने कहा, "इस सभा में समालोचक बन सकना तो मैं कोई बहुत बड़ी बात नहीं मानता। हां, यदि इससे कोई लोक सेवा हो सके तो मैं इनसे जूझ भी सकता हूं।"

"मेरी सम्मति है।" विष्णु शर्मा ने कहा, "कि इनसे धक्के दे कर निकाला जाना तो ठीक नहीं। वास्तव में यह साहित्यिक सभा एक बाबू ज्योतिस्वरूप दास की आयोजित है। उन्होंने ही इसका विधान इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदार बनाया था और इसमें सब विचार के साहित्यिकों के की आने लिए स्वीकृति रखी थी। इस सभा की जन-प्रियता देख कम्यूनिस्टों ने इस पर अधिकार जमाने का यत्न किया है। ज्योति बाबू भी इनकी बेहूदगियां देख इसमें रुचि छोड़ बैठे हैं। उनके बहुत से साथी भी अब इसमें नहीं आते।

"अब ये आपको और मुझे निकालने में लीन है। एक बात और है। कदाचित इनके हाई कमाण्ड ने अभी कोई निर्णय नहीं किया। यदि किया है तो मणीन्द्र को पता नहीं। इससे हमको अपना व्यवहार स्वतन्त्रता पूर्वक निश्चय करना चाहिए।"

इससे अर्चना ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा, "हमको अपना व्यवहार स्वतन्त्रता से निश्चय करना चाहिए। हाई कमाण्ड क्या चाहता है और क्या नहीं चाहता, इसका विचार छोड़ कर ही हमें अपने विचार में सफल होने में यत्न करना चाहिए।"

विष्णु ने कह दिया, "मैं समझता हूं हम ज्योति बाबू से मिल लें और उनके सहयोग से क्या किया जा सकता है, इसका निर्णय करें।"

जब विष्णु ने इस विषय में ज्योति बाबू से मिलने को कहा, तो वकील साहब ने उस बात की चर्चा पुनः चला दी जिस पर वे मणीन्द्र के आने से पहले कर रहे थे। चटर्जी ने कहा, "क्या विष्णु! है इच्छा इस कार्य में सम्मलित होने को?"

मेरी प्रवृत्ति तो व्यवसाय की है नहीं, परन्तु यह केवल व्यवसाय है भी नहीं। इसमें कुछ तो लोक सेवा भी सम्मिलित है। यदि अर्चना इसके व्यवसायिक पक्ष को देखने की बात कहती है तो इसके साहित्यिक पक्ष का भार मैं अपने ऊपर ले लूंगा।"

"यही तो अर्चना चाहती है। तो ठीक है। यह पाक्षिक पत्रिका होगी। इसमें कहानियां और कविताएं होगीं। यदि सम्भव हुआ तो साहित्यिक लेख भी होगें। इसके सम्पादक होगें विष्णु शर्मा और व्यवस्थापिका होगीं अर्चना देवी। और अर्चना जी! इस पाक्षिक पत्रिका कानाम क्या होगा?"

"ज्योति"। यदि रजिस्ट्रेशन विभाग ने स्वीकार कर लिया तो हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस का नाम होगा 'ज्योति मुद्रणालय'। यदि विष्णु जी मानें तो कल इसके लिए प्रार्थना पत्र लिख कर रजिस्ट्रार की सेवा में भेज दिया जाए। छापाखाना तो मेरी दृष्टि में एक है। उसको मोल लेने की बात कल से आरम्भ कर दूंगी। पुराना छापाखाना लेने से 'पावर' का झगड़ा नहीं करना होगा।"

"और विष्णुजी का पारिश्रमिक क्या होगा?" अनिमा ने पूछ लिया।

"जितने से ये संतुष्ट हो जाएं।"

इस समय विष्णु ने कह दिया, "मेरे घर का खर्चा तीन सौ रुपया मासिक है जो किसी न किसी प्रकार से पैदा करता हूं। इसमें से सेठजी को गीता पढ़ाने का काम छोड़ नहीं सकता। वे मुझको एक सौ रुपया महीना देते हैं। अन्य काम मैं कर नहीं सकूंगा। उसका प्रबंध तो करना ही होगा।"

"इससे तो कुछ अधिक ही होगा।" अर्चना ने कह दिया, "मैंने मन में यह विचार किया कि मैं मैनेजर का कार्य करूंगी और ये सम्पादक बनेगें। हम बराबर-बराबर के पत्तीदार होंगे। रुपया ब्याज पर मिल जाएगा। इस पर भी कम से कम तो कुछ आरम्भ में निकालना ही होगा। यह तीन-तीन सौ हो सकेगा। प्रति छः मास के उपरान्त कार्य का निरीक्षण कर हम अपने भाग का निर्णय किया करेंगे।

अर्चना ने अपने पिता के देहान्त के उपरान्त अपने मकानों की आय में से अपने भाग का बारह हजार वार्षिक लेना आरम्भ कर दिया था। उसमें से उसका खर्च तो दो हजार वार्षिक से अधिक नहीं होता था। मकान का भाड़ा सतीश देता था। घर का खर्च भी वही करता था। अर्चना को तो अपने भाग में से केवल वस्त्रों के लिए तथा अन्य निजी आवश्यकताओं के लिए ही खर्च करना पड़ता था। इस प्रकार उसके पास पचास हजार नकद जमा था।

अर्चना का अनुमान था कि एक सफल पत्रिका निकालने में एक लाख रुपये की पूंजी चाहिए। उसके लिए वह शेष पचास हजार का प्रबंध करने में लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३ :

इस मास साहित्यिक सभा में आने वाले सदा से दुगने लोग थे। भवन की गैलरी खोल दी गई और वह भी खचा-खच भर गई थी।

मणीन्द्र मुखर्जी को हाई कमाण्ड का यह आदेश था कि सतीश की योजना चलेगी। इस कारण वह चटर्जी साहब से मिलने नहीं गया था। साथ ही उसने स्वयं अपने साथियों को बुलाने के लिए किसी प्रकार का विशेष अभियान नहीं चलाया था। इस पर भी उसके आने से पहिले ही हाल भर चुका था और लोग गैलरी खोलने के लिए कह रहे थे।

वह गैलरी खुलवा कर हाल में मंच के समीप पहुंचा तो वहां ज्योतिस्वरूप दास को बैठा देख समझ गया कि इस दिन की हाज़री विष्णु के प्रयास का फल है। उसने देखा कि विष्णु चटर्जी के समीप बैठा है और अर्चना स्त्रियों में बैठी है। स्त्रियों की संख्या भी सदा से अधिक थी।

मणीन्द्र ने सतीश की ओर देखा तो वह पीत मुख एक कोने में बैठा था। मणीन्द्र ने मंच के समीप जा सतीश को बुलाया। यह आगे आया तो उसने पूछ लिया, "क्यों सतीश बाबू। क्या समझे हो?"

"मैं कान्तिनारायण जी को लेकर तो आया हूं, परन्तु यहां तो रंग कुछ दूसरा ही देख रहा हूं।"

"यह विष्णु और अर्चना ने ही किया है।"

"परन्तु उनको हमारी योजना का पता कैसे चला है?"

"उस दिन अर्चना बता रही थी कि सतीश भैया वकील साहब को कह गए कि वे सभा में न आएं, उनको समालोचक पद से हटाया जा रहा हैं।"

मणीन्द्र ने अपने जाने की बात नहीं बताई। सतीश झेंप गया और बात बदलकर पूछने लगा, "वह कहां मिली थी तुमको?"

"चौरंगी के बस स्टैंड पर। बस की प्रतीक्षा में खड़ी थी।" मणीन्द्र ने झूठ बोल दिया।

सतीश अभी विचार ही कर रहा था कि ज्योतिस्वरूप दास मंच पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ कर सभा को सम्बोधन करने लगा, "साहित्य सेवियो !—"

इस समय मणीन्द्र भी मंच पर आ कर खड़ा हो गया। दास बाबू ने उसको कहा, "अभी सभा आरम्भ नहीं हुई बैठ जाओ।"

" मैं सभा आरम्भ करने जा रहा हूं। समय हो गया है।"

"दो मिनट सभा आरम्भ होने से पूर्व—।"

मणीन्द्र हटा नहीं। उपस्थित गणों से आवाज़ें आने लगी, "बैठ जाओ ! बैठ जाओ !"

मणीन्द्र ने कहा, "सब कह रहे है बैठ जाओ।"

"नहीं। वे तुमको कह रहे हैं।"

इस समय विष्णु अपने स्थान पर खड़ा हो ऊंची आवाज़ में कहने लगा, "सभा अभी आरम्भ नहीं हुई। ज्योति बाबू सभा से पूर्व कुछ कहना चाहते हैं। हम उनको सुनना चाहते हैं।"

इस समय कांतिनारायण मंच पर आ गया और बोला, "यहां कुछ झगड़ा प्रतीत होता है। इस कारण मैं सभा को विसर्जित करता हूं।"

विष्णु अभी बैठा नहीं था। उसने खड़े-खड़े ही पूछ लिया, "और तुम **कौन हो ?"**

"मैं सभा विसर्जन की घोषणा करता हूं।" कांतिनारायण ने मंच पर खड़े-खड़े कह दिया।

ज्योतिस्वरूप ने कहा, "जो जाना चाहते हैं जा सकते हैं। मैं उनको पांच मिनट का समय देता हूं।"

मणीन्द्र कुमार संयोजक ने घोषणा कर दी कि आज सभा नहीं होगी।

लोग उठ-उठकर जाने लगे। विष्णु अपने साथियों को ठहरने का संकेत करने लगा। मणीन्द्र मुखर्जी, कांतिनारायण चट्टोपाध्याय, मणीन्द्र कुमार तथा सतीश के साथी एकदम उठकर यह कहते हुए भवन से निकल गए, "चलो, चलो, सब चलो।"

ज्योतिस्वरूप इत्यादि मंच पर खड़े रहे। अर्चना की साथिनें अर्चना को चारों ओर घेर कर खड़ी रहीं। सतीश के प्रायः साथी भवन से बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले गए और ज्योतिस्वरूप दास के प्रायः साथी भवन में खड़े रहे। दोनों ओर के कुछ लोग तमाशा देखने बाहर और भीतर खड़े थे।

भवन लगभग आधा रिक्त हो गया था। जब कुछ शान्ति हुई तो दास बाबू ने अपना वक्तव्य आरम्भ किया। उसने कहा, "आप सब लोग बैठ जाएं तो मैं आज की इस गड़बड़ का कारण निवेदन करना चाहता हूं।" वे लोग जो दास बाबू के कहने पर आए थे बैठ गए। जो विरोधी पक्ष के लोग थे वे खड़े रहे। ज्योति बाबू ने उनसे कहा, "यदि आप खड़े रहना चाहते है तो दीवार के साथ हो जाएं, जिससे बैठे लोगों को सुनने में सुभीता रहे।"

खड़े हुए लोग हटे नहीं। इस पर विष्णु इत्यादि ने बैठे लोगों को मंच के समीप आ जाने का संकेत कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि खड़े हुए बैठने वालों से धकेले जाने लगे।

ज्योति स्वरूप ने कहा, "इस सभा का विधान यह है कि इस सभा के सस्थापक सदस्य अपने में से एक संयोजक नियुक्त करते हैं और वह सब कार्य सभा की नीति अनुसार चलाने का अधिकार रखता है। संयोजक के साथ-साथ एक समालोचक नियुक्त होता है। यह एक साहित्यकार एवं पक्षपात रहित व्यक्ति होता है, जो स्वतन्त्रतापूर्वक कलाकारों की सभा में पढ़ी गई रचनाओं पर समालोचना करता है। समालोचक संयोजक के आधीन नहीं होता। उसका कार्य सर्वथा स्वतंत्र होता है और उसकी समालोचना सभा का अध्यक्ष चाहे तो पढ़कर सुना करता है।

"सभा का अध्यक्ष सभा में उपस्थित, सभा के दिन के लिये निर्वाचित करते हैं, परन्तु संयोजक और समालोचक संस्थापक सदस्य ही नियुक्त कर सकते हैं।

"इस सभा के संस्थापक सदस्यों ने दो वर्षों से संयोजक मणीन्द्रमुखर्जी को नियुक्त किया हुआ है और समालोचक तो सभा आरम्भ से श्री नरेश चन्द्र चटर्जी चले आ रहे हैं। हमको यह विदित हुआ है कि श्री मुखर्जी, यह समझ कि समालोचक नियुक्त करना उनका अधिकार है, आज चटर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केस्थान पर एक नया समालोचक बनाने वाले हैं। मैं यह उनकी अनधिकार चेष्टा मानता हूं। आज कुछ संस्थापक सदस्यों ने इस मुखर्जी को संयोजक पद से हटा देने का प्रस्ताव किया है, परन्तु संयोजक ने तो सभा विसर्जन की ही आज्ञा दे दी है।

"मैं यह मानता हूं कि संयोजक को सभा बुलाने और सभा को विसर्जन करने का अधिकार तो है, परन्तु संयोजक को भी बदलने का अधिकार संस्थापक सदस्यों को है।

"संस्थापक सदस्यों की संख्या इक्यावन थी। दो वर्ष हुए, पूर्व संयोजक के देहान्त के समय, मणीन्द्र मुखर्जी की नियुक्ति की गई थी। तब सदस्यों की सभा मेरे मकान पर हुई थी। इक्यावन में से चालीस सदस्य उपस्थित थे और मणीन्द्र जी की नियुक्ति सर्वसम्मति से हुई थी।

संस्थापक सदस्यों में से पैंतालीस के हस्ताक्षर से मणीन्द्र जी के स्थान पर अर्चना सोमानी को संयोजक नियुक्त करने का प्रस्ताव है, यह प्रस्ताव नियमित आमंत्रित सभा में पारित नहीं हुआ। इस पर भी आज की परिस्थिति की उपस्थिति में मैं अस्थाई रूप से अर्चना देवी को तब तक सभा का संयोजक घोषित करता हूं, जब तक संस्थापकों की नियमित रूप में आयोजित सभा कोई स्थायी संयोजक नियुक्त नहीं करती।"

इस निर्णय का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। इस समय सतीश तथा मणीन्द्र भवन में आ गये। सतीश ने द्वार के समीप खड़े-खड़े कह दिया "यह नियुक्ति अवैधानिक है। मैं इसको कोर्ट में चेलेंज़ करूंगा।"

"परन्तु सतीश जी, आप तो संस्थापक सदस्य भी नहीं है।"

"कोई संस्थापक सभा है ही नहीं। मैं पिछले दो वर्ष से इसका कहीं अस्तित्व नहीं देखता।"

दास बाबू ने इसका भी उत्तर दिया, "मणीन्द्र जी आपको बता देंगे कि उनको संयोजक किसने बनाया था। यदि पिछले दो वर्षों से इसकी कोइ बैठक नहीं हुई तो वह इस कारण है कि उस द्वारा नियुक्त संयोजक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुचारु रूप से कार्य कर रहा था। आज संयोजक ने कुछ अवैधानिक बात करनी चाही थी। इस कारण सभा को सक्रिय होने की आवश्यकता अनुभव हुई है।

"देखो सतीश बाबू ! तुम्हारी बहिन अब संयोजक नियुक्त है। वह अपना पद ग्रहण कर रही है। तुम भी उसके नियन्त्रण में हो।"

अर्चना होहल्ला में मंच पर आ गई। इस समय तक सतीश के बहुत से साथी भी भवन में लौट आये थे और अर्चना का विरोध करने लगे थे। अर्चना ने मंच पर पहुंचते ही आज्ञा दी, "मैं सभा की कार्रवाई आरम्भ करती हूं।"

एक लड़की चन्द्रिका ने प्रस्ताव किया, "आज की सभा के अध्यक्ष पद के लिये मैं विष्णु शर्मा जी का नाम प्रस्तावित करती हूं।"

अभी विष्णु के नाम का समर्थन नहीं हुआ था कि कान्तिनारायण चट्टोपाध्याय अपने साथ दो दर्जन लठैत पुलिस कान्स्टेबलों को लेकर भवन में पहुंच गया और बिना सूचना के सभा पर लाठी चार्ज कराने लगा।

उपस्थित गरण में भगदड़ मच गई। लगभग पचास लोग घायल हुए। इनमें दस स्त्रियां भी थीं। अर्चना, विष्णु और ज्योति को गहरे घाव आये। चटर्जी भी घायल हो गया।

पुलिस सभा विसर्जित कर चली गई और घायलों की मरहम पट्टी के लिये चटर्जी ने डाक्टर बुलाये। मरहम पट्टी के उपरान्त समीप के थाने में रिपोर्ट लिखवा दी गई।

: ४ :

अगले दिन समाचारपत्रों में यह समाचार छपा कि भवानीपुर सरस्वती भवन में चीन समर्थित कम्यूनिस्टों की एक सभा को विसर्जित करने के लिये पुलिस को लाठी चार्ज करना पड़ा। लगभग पचास लोग घायल हुए। कुछ पुलिस वाले भी घायल हुए। बहुत कठिनाई से सभा विसर्जित की जा सकी।

इसके एक सप्ताह के भीतर ही नरेश चन्द्र चटर्जी ने कलकत्ता के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब जज की अदालत में बंगाल राज्य के गवर्नर, कलकत्ता के कमिश्नर और भवानीपुर थाना के इन्चार्ज पर शारीरिक आघात और मानसिक वेदना तथा मान-हानि के लिये पांच लाख रुपये का एक दावा दायर कर दिया। उसमें उसने अकारण पुलिस द्वारा घायल किये जाने और अपमानित करने का आरोप लगाया था।

दास बाबू और अर्चना ने कलकत्ता के तीन प्रमुख समाचारपत्रों को सभा का पूर्व विवरण भेज कर नोटिस दे दिया कि सभा और उनको चीन समर्थित व्यक्ति लिखकर उन पर देशद्रोह का आरोप लगाकर उनका अपमान किया है। वे सत्य समाचार को अपने पत्रों में प्रकाशित करें और अनृत समाचार के छप जाने पर खेद प्रकट करें। अन्यथा उन पर मान-हानि का दावा किया जायेगा।

दो समाचारपत्रों ने तो इनका पूरा का पूरा पत्र छाप दिया और उस पर अपनी ओर से लिख दिया, "हमको यह समाचार पी० टी० आई० ने भेजा था। इस कारण हम इसके छापने में दोषी नहीं है।"

तीसरे 'कामरेड' नामक समाचारपत्र ने उत्तर नहीं दिया। इस कारण उस पर दास बाबू और अर्चना ने पचास-पचास हज़ार का मान-हानि का मुकदमा दायर कर दिया।

पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की। डिफैन्स ऑफ इण्डिया ऐक्ट के अधीन सरस्वती भवन को चीनी समर्थक कम्यूनिस्टों का अड्डा घोषित कर अपने अधिकार में कर लिया गया।

सरस्वती भवन के संचालकों ने सरकार को वचन दिया कि वे भविष्य में किसी कम्यूनिस्ट दल वाले को भवन नहीं देंगे। इस वचन पर सरस्वती भवन छूट गया।

जब सब जज की अदालत में नरेश चटर्जी, दास बाबू तथा अर्चना ने अपने दावे के समर्थन में गवाह उपस्थित करने आरम्भ किये तो मुकदमों में सुलह कराने के लिये सरकार की ओर से प्रस्ताव आने लगे। वकील साहब को सरकारी एडवोकेट नियुक्त किये जाने का प्रलोभन मिलने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योति बाबू को भारत के राष्ट्रपति से पद्म भूषण का पदक दिये जाने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया। अर्चना को उसकी पत्रिका शिक्षा विभाग से स्वीकार करा कर राज्य के पांच सहस्र से ऊपर स्कूलों के लिये खरीदने का सुझाव दिया गया।

इस पर तीनों दावा करने वालों में विचार विनिमय होने लगा। चटर्जी का कहना था कि मुझको सरकारी मुकदमों की आवश्यकता नहीं हैं। मैं निजी रूप में वकालत करता हुआ भी पर्याप्त आय कर रहा हूं। इस पर भी मैं दावा वापिस ले सकता हूं यदि पुलिस झूठी रिपोर्ट लिखाने वाले का नाम बता कर कहे कि रिपोर्ट लिखाने वाले के एक प्रतिष्ठित अधिकारी होने के कारण हमसे उस झूठी रिपोर्ट पर गलत कार्रवाई हो गई और हमें इसका खेद है।

ज्योतिस्वरूप दास और अर्चना का मुकद्मा तो एक समाचारपत्र के विरुद्ध था। वे विस्मय कर रहे थे कि भला सरकारी विभाग उनको मुकदमा उठाने पर प्रलोभन किसलिये दे रहा है।

शिक्षा विभाग के एक अधिकारी बाबू अवनिकुमार सान्याल अर्चना से उसके प्रेस के कार्यालय में मिलने आये। इस समय अर्चना ने एक मकान बालीगंज में भाड़े पर लेकर ज्योति मुद्रणालय चालू कर दिया था। इसका पहिला नाम 'मैट्रोपोलिटन प्रेस' था। अर्चना ने इसको बीस हज़ार रुपये पर खरीद लिया। पुरानी मशीनों की मरम्मत करवाई। पुराना टाइप पुनः ढलवाया गया और प्रेस का तथा बिजली का नये नाम पर लाइसैंस ले लिया गया। इन सब पर दस हजार रुपया और खर्च हो गया। पत्रिका का डिक्लरेशन अभी नहीं मिला था। इसके लिये यत्न हो रहा था।

अर्चना अपने पैत्रिक स्वभाव के कारण छापाखाना को व्यावसायिक दृष्टि से सफल बनाने में लीन हो गई। छापाखाना को बड़ी-बड़ी फैक्टरियों और व्यावसायिक कम्पनियों से काम मिलने लगा था। अर्चना स्वयं मैनेजर का कार्य करती थी। अपने अधीन उसने एक सहायक मैनेजर रखा हुआ था। वह स्वयं 'पार्टियों' से मिल-मिलाकर काम लाती थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक मैनेजर काम करवाता था। वह सहायक मैनेजर [illegible] का तक-नीकी ज्ञान भी रखता था और काम चलने लगा था। मुद्रणालय को खुले दो महीने हो चुके थे और सबके खर्च छापाखाना निकालने लगा था।

एक दिन शिक्षा विभाग का एक अधिकारी छापाखाना में बिना सूचना के आ पहुंचा। अर्चना अभी आई ही थी कि एक सज्जन अंग्रेजी ढंग के पहिरावे में वहां आ पहुंचे। वह सहायक मैनेजर से अर्चना के बैठने के कमरे को पूछ वहां जा पहुंचा।

"क्षमा करें। मुझे आपसे मिलना है।" कमरे में प्रवेश करते हुए अवनी कुमार सान्याल ने कहा।"

"आइये। परन्तु किससे मिलना है ?"

"अर्चना देवी से।"

"बैठिये। वह मैं ही हूं। बताइये, किस सम्बन्ध में आप मिलना चाहते हैं ?"

"मैं डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन से आया हूं। मेरा नाम अवनी कुमार सान्याल हैं।"

"आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई है। चाय लेंगे या कोल्ड ड्रिंक ?"

"कुछ नहीं। मुझको पता चला है कि आप के यहां से एक पत्रिका 'ज्योति' नाम की निकलने वाली है। डिक्लरेशन तैयार है क्या ?"

"प्राइवेट रूप से पता चलता है कि डिक्लरेशन तैयार हो चुका है। इस पर भी किसी न किसी कारण मिलने में देरी लग रही है।"

"पत्रिका के नमूने का अंक मिला है। बहुत अच्छा है। मैं इसके चल सकने में आपकी सहायता करना चाहता हूं। इस समय पांच हज़ार से ऊपर मिडल और हाई स्कूल हमारे अधीन हैं। इतनी ही प्रतियों का आर्डर आपको मिल सकेगा।"

"हमारी संस्था आपकी बहुत आभारी होगी। सत्य ही आरम्भ में इतनी बड़ी सहायता हमारी बहुत-सी कठिनाइयों को दूर कर देगी।"

देखिये, बंगाल में हमारी नीति यह है कि बंगला के अतिरिक्त किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी भाषा को प्रोत्साहित न किया जाये परन्तु यह आपकी पत्रिका के साथ विशेष रियायत होगी।"

"यद्यपि आप की इस नीति को हम कुछ अच्छा नहीं मानते। इस पर भी आपकी इस कृपा का हम धन्यवाद ही करेंगे।"

"परन्तु एक छोटा-सा काम मेरा भी है।"

"क्या ?"

"यही कि 'कामरेड' के विरुद्ध मुकदमे में 'कम्प्रोमाइज़' कर लिया जाए।"

"मैं तो इसके लिए आरम्भसे ही तैयार हूं। उस सभा की मैं ही संयोजक नियुक्त थी। इस सभा को चीन समर्थक कम्यूनिस्टों की सभा कह कर मुझ को देशद्रोही सिद्ध किया गया है। मैं चाहती थी कि इसका प्रतिवाद कर दिया जाए। बस, इतनी ही तो बात थी।"

"परन्तु अर्चना देवी ! चीन समर्थक कहा जाना अपमानजनक है क्या ?"

"तो क्या आप इसको एक मानयुक्त पदवी मानते हैं ?"

"पदवी तो नहीं। हां, ऐसा कहने वालों को पंडित जवाहरलाल नेहरू का समर्थक समझा जा सकता है।"

"कौन समझता है ? यदि नेहरू जी स्वयं चीन समर्थक होते तो वे चीन के विरोध के लिए अमरीका और इंगलैण्ड से सहायता क्यों मांगते ?"

"वह सब जाने दीजिए। उसमें उनकी कुछ विवशता थी। चीन ने भी तो भूल की थी। नेफा में वे अपनी निश्चित सीमा से आगे निकल आए थे। देखिए अर्चना देवी ! मैं आपको एक रहस्य की बात बताता हूं। चीन ने तिब्बत की रक्षा के लिए कौन-कौन स्थान अपने अधिकार में लेने हैं सब निश्चित थे। भारत की सेना को अतिक्रमण के समय यह आज्ञा जा पहुंची थी कि उस सीमा से पीछे हट आना है। चीन के सेनानायकों ने भूल से निश्चित सीमा का अतिक्रमण कर दिया और जवाहरलाल जी ने हलबुली में अमरीका और इंग्लैण्ड से सहायता मांग ली। जब चीन के केन्द्रीय शासकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को सेना की इस भूल का ज्ञान हुआ तो उन्होंने एकपक्षीय युद्ध विराम की घोषणा कर दी और फिर समय पाकर अपनी सेनाओं को पीछे हटा लिया। जवाहरलाल जी भी इससे सन्तुष्ट हैं और अब चीन से युद्ध की किसी प्रकार की भी आशा नहीं।"

अर्चना कम्यूनिस्ट पार्टी में चीन समर्थकों से यही बात सुना करती थी। वे इतना और कहते थे कि शेष भारत को लाल रंगने के लिए भारत के कम्यूनिस्टों को स्वयं यत्न करना होगा। उनको इसलिए वियतनाम की भांति छापामार सेना तैयार करनी होगी। इस बात का स्मरण कर अर्चना ने पूछा, "श्रीमान् जी ! आप तो कह रहे थे कि आप सरकारी अधिकारी हैं। परन्तु आप बातें तो ऐसी करते हैं जैसे कम्यूनिस्ट पार्टी के टिकट होल्डर हों। कम्यूनिस्टों और चीनियों का यह समर्थन तो आपको कम्यूनिस्ट प्रकट करता है।"

"और अर्चना देवी ! आप भी तो कम्यूनिस्ट पार्टी की टिकट होल्डर रही हैं।"

"ओह ! तो आप यह जानते हैं ?"

"कामरेड के सम्पादक शिशिर कुमार घोष ने सब बताया है। वास्तव में आपके पार्टी छोड़ने के कारण ही उस सभा को बदनाम किया गया था।"

"यह तो मैं जानती हूं। परन्तु मैं विस्मय करती हूं कि एक सरकारी अधिकारी किसलिए एक कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य की रक्षा करने आया है ?"

उपस्थित अधिकारी ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरा आना सरकारी अधिकारी के रूप में नहीं है। मेरे निजी सम्बन्ध शिशिर कुमार जी से ही इसमें कारण है।"

"परन्तु आप हमारी पत्रिका को सहायता तो सरकारी धन से देना चाहते थे।"

"मुझको कुछ सीमा तक निर्णय लेने की स्वतन्त्रता है। मैं उसका ही प्रयोग कर रहा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अर्थात् आप सरकारी काम के लिये दिए अधिकार अपने निजी मित्रों के लाभ के लिए प्रयोग कर रहे हैं ?"

"देखिये अर्चना देवी ! ऐसा तो सर्वत्र और सदा होता ही है। साथ ही मैं यह सब कुछ अपने लाभ के लिए नहीं कर रहा। एक आदर्श के लिए कर रहा हूं। यह देश की निःस्वार्थ सेवा है।"

अर्चना इस सरकारी अधिकारी की निर्लज्जतापूर्ण स्वीकृति से उसके प्रति ग्लानि से भर गई थी। उसने पूछ लिया, "क्या मैं इस भेंट का वृत्तान्त समाचारपत्रों को लिख कर भेज दूं ?"

"यह कैसे हो सकता है। आप पर मैं अपमान करने का दावा कर दूंगा।"

"तब शिशिर कुमार जी के मुकदमें में समझौता सुगमता से हो सकेगा। बराबर के मुकदमें हो जाएंगें।"

"तो कर दीजिए, परन्तु आपको लेने के देने पड़ जाएंगें।

"आप मेरी चिन्ता न करें। अपने विषय में विचार कर लें। हां, यदि आप अपने मित्र की सहायता करना चाहते हैं तो इस भेंट की सत्य रिपोर्ट अभी तैयार कर लेते हैं और दोनों के हस्ताक्षर से प्रेस में अभी भेज देती हूं।"

इस पर मिस्टर सन्याल उठ पड़े और बोले, "आप हंसी कर रही है। मैं तो सत्य ही आपकी सहायता करने आया था।"

"मैं आपकी आभारी हूं।" अर्चना ने भी उठकर हाथ जोड़ दिये।

: ५ :

अभी मुकदमें चल ही रहे थे कि 'ज्योति' मासिक पत्रिका का डैक्लरेशन मिल गया। इसका प्रथम अंक निकला। विष्णु के सम्पादकीय ने जनता में कुछ तो हलचल मचा दी। सम्पादकीय के अतिरिक्त एक कहानी और एक लेख बंगला में था। एक कहानी, एक लेख और समाचार समीक्षा हिन्दी में थी। और एक धारावाहिक उपन्यास दोनों भाषाओं में। पत्रिका का मूल्य केवल तीस पैसा था और पृष्ठ संख्या चवालीस थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय में पत्रिका के इस रूप का कारण बताया था। लिखा था, भाषा समस्या को स्वीकार करते हुए उसके समाधान का एक उपाय यह है। सरकार क्या करती है, और क्या नहीं करती, इसका विचार छोड़कर जनता का हित क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ देश में बहुसंख्यकों की भाषा को जानना है। यह प्रत्येक व्यक्ति के अपने लाभ के लिए है। अत: व्यक्तियों की पहुंच में दोनों भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक सामग्री उपलब्ध कराना इस पत्रिका का ध्येय है।

विचार नीति पर भी प्रकाश डाला गया था—'भारतीय संस्कृति, हिन्दू धर्म और वर्तमान युग की विशिष्ट विचार धाराओं में कहां और कितना मेल तथा विरोध है, इस पर विज्ञ लेखकों के विचार लिए जाएंगे।

अर्चना की व्यावसायिक बुद्धि ने पत्रिकाको भारत के प्राय: सभी एजेन्टों की दुकान पर पहुंचा दिया। प्रथम अंक में विष्णु शर्मा की कहानी, श्री नरेश चटर्जी का बंगला में लेख और कलकत्ता के अन्य साहित्यकारों की कविताएं इत्यादि थीं। अर्चना की कविता भी थी—

'यह मेरा है, वह तेरा है, विपदाओं का है मूल यही।
दिया है भगवान का सब कुछ मैं देता हूं, है नहीं सही ।।
दिया है भगवान ने उसको, जो यत्न से कार्य करता है।
पुरुषार्थ मूल्य मलकीयत को है पाता वह जो भरता है ।।

प्रथम अंक की सजधज और उसका देश भर में पहुंच जाना अर्चना के अपने पुरुषार्थ का ही फल था। पूर्ण तीन मास की भाग दौड़ का ही यह परिणाम था। इन तीन महीनों में एक दिन भी अर्चना को आराम से बैठ कर सहायकों, समर्थकों अथवा विरोधियों से बात करने का अवसर नहीं मिला था।

प्रथम अंक जब भेजा गया तो एक दिन की छुट्टी मनायी गई। वह बालीगंज के अपने कार्यालय में नहीं गई। प्रात: उठ विचार करने लगी, "आज क्या?" उत्तर आया अपने परिचितों से मिलना चाहिए। परिचितों की गणना होने लगी तो सतीश का नाम सबसे प्रथम मन में आया। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बार तो विचार आया कि भाई हुआ तो क्या ? है तो विरोधी। परन्तु मानव स्वभाववश वह सतीश का विचार मन से निकाल नहीं सकी। उसे उससे मिले पांच महीने से अधिक का समय हो चुका था। झगड़े वाली साहित्यिक सभा के उपरान्त दोनों में किसी स्थान पर भेंट नहीं हुई थी।

भाई का विचार आते ही वह स्नानादि से निवृत्त हो भाई के मकान पर जा पहुंची। घर का नौकर चन्दन बाबू के लिए 'बैड टी' बना रहा था। अर्चना रसोई घर में गई। वह भैया को अपने आने की सूचना देना चाहती थी। चन्दन ने उसे देखा तो अवाक् मुख देखता रह गया। "चन्दन! पहिचाना नहीं ?" अर्चना ने पूछा।

"पहिचाना क्यों नहीं बहिनजी ! आज आप आयी हैं। इससे विस्मय कर रहा हूं।"

"इसमें विस्मय की कौन बात है ?"

"मेरा विचार था आप भैया से लड़ पड़ी है।"

"यह विचार क्यों आया ?"

चन्दन कुछ कहना चाहता था, परन्तु बात उसके मुख से निकल नहीं रही थी। अर्चना प्रश्न भरी दृष्टि से उसके मुख को देख रही थी। आखिर चन्दन ने मुख खोला, "तो भैया को सूचना दूं कि आप आयीं हैं ?"

"हां।"

"आप यहीं ठहरें। भैया अकेले नहीं हैं।"

अर्चना इसका अर्थ समझ भौंचक्की हो खड़ी रह गयी। चन्दन सतीश के बैड रूम की घंटी बजाने चला गया। अर्चना मन में अपने आने के औचित्य पर संशय करने लगी थी। इस पर भी स्त्री स्वभाव वश यह जानने की वह इच्छा करने लगी थी कि भैया के साथ कौन हो सकता है ?"

सतीश के सोने के कमरे का द्वार खुला। किसी ने भीतर से कुछ पूछा और चन्दन ने उत्तर दिया। इस पर भीतर के व्यक्ति ने कुछ कहा और चन्दन लौट आया, अर्चना ने चन्दन को किसी से बात करते सुना था, परन्तु न तो उसने बात करने वाले को देखा और न ही सुन सकी कि किसने क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा है। इस कारण वह चन्दन के आने पर उसका मुख देखने लगी।

चन्दन ने कहा, "सूचना भीतर चली गयी है। चाय ले जाने का हुक्म हुआ है। उसी समय पता चलेगा कि वे आपसे मिलते हैं अथवा नहीं।"

अर्चना के मन में विचार आया था कि लौट ही जाये, परन्तु तुरन्त ही यह प्रतिक्रिया हुई कि डरने में क्या कारण हो सकता है। सतीश तो वही है और वैसा ही है, जैसा पांच मास पूर्व था। इससे वह वहीं चन्दन के लिये रखे स्टूल पर बैठ गयी। चन्दन ने दो प्याले चाय बनायी और चार विस्कुट एक प्लेट में रख ट्रे तैयार की और कमरे में चला गया। चन्दन के लौटने में कुछ समय लगा, वह आया तो उसने कहा, "आप को भीतर बुलाया है।"

अर्चना मुख की दृढ़ मुद्रा बना सतीश के कमरे में चली गयी। सोने के कमरे के पहिले ड्राइंग रूम था और सोने के कमरे का द्वार खुला था। अर्चना ने कमरे की ओर देखा। उसमें एक स्त्री पलंग पर बैठी चाय पी रही थी।

अर्चना से सतीश ड्राइंग रूम में ही आकर मिला। उसने कहा, "आओ अर्चना! आज तुम्हारा जी किया है भाई से मिलने को?"

अर्चना ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "हां, जब भाई का चित्त नहीं किया तो बहिन विवश हो गयी और मिलने चली आयी है।"

"सतीश ने इस भावुकतामय बात का उत्तर नहीं दिया और बात बदल दी, "चाय पीओगी?"

"मैं तो ब्रेकफास्ट लेने की आशा से आयी हूं। पांच मास के निरन्तर प्रयत्न के बाद 'ज्योति' का प्रथम अंक निकला तो मन में विचार आया कि एक दिन की छुट्टी मनानी चाहिये। छुट्टी में पहिला काम भैया से मिलने का ही हुआ है।"

"हां, तुम्हारी पत्रिका कल मिली है। पढ़ी है। मेरा विचार है कि तुम्हारा सब रुपया दो तीन महीने में समाप्त हो जायेगा और तब···।" वह कहने से पहिले रुक गया और अर्चना का मुख देखने लगा। अर्चना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुस्कुरा रही थी।

"और तब तुम मेरे पास आना और मैं तुमको किसी बड़े समाचारपत्र में काम पर लगवा दूंगा।"

अर्चना हंस पड़ी। हंस कर बोली, "भैया इस आश्वासन के लिये धन्य-वाद है। परन्तु मैं बताऊं ? इसमें घाटे का प्रश्न निकट भविष्य में तो है नहीं। फिर भी भाई का आश्वासन मिलने से चित्त को शान्ति मिली है।

"देखो भैया ! हमारा छापाखाना लोगों के लिये छपाई का काम भी करता है। उसको चलते हुए चार मास के लगभग हो चले हैं और वह उत्त-रोत्तर उन्नति कर रहा है।

इस समय छापाखाना का सब खर्च दो सौ रुपया नित्य है और आय तीन सवा तीन सौ रुपया नित्य की हो रही है।

छापाखाना की आय से कम खर्चा ही पत्रिका पर होने की सम्भावना है। पत्रिका के इस अंक के लिये तो तीन सहस्र के विज्ञापन भी मिलें हैं। आगे क्या होगा, कह नहीं सकती। दस सहस्र पत्रिका छपी है और सब की सब वितरण हो गयी है। दस सहस्र पर साढ़े चार सहस्र खर्चा बैठा है। इसमें से विज्ञापन की आय निकाल कर डेढ़ सहस्र का घाटा है, परन्तु कुछ तो बिकेगी ही।"

"सब ठीक है। इस पर भी कठिनाई के समय आ सकती हो।"

"धन्यवाद। अच्छा भैया ! ब्रेकफास्ट मिले तो ठहरूं, नहीं तो चलूं।"

"तुमने मेरे विषय में तो कुछ पूछा ही नहीं ?"

"जब भैया ने बताने की इच्छा प्रकट नहीं की तो चुप थी। आंखों ने देखा है और समझ रही हूं।"

"तो उससे मिलोगी ?"

"हां। यदि उसको आपत्ति न हो तो। यूं तो मैं उससे मिली हूं।"

"अच्छा ? कहां ?"

"यहीं कलकत्ता में। अपनी पार्टी की मीटिंग में आयी थी।"

"हां। परन्तु वह तुमको नहीं जानती। अच्छा बुलाता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश ने आवाज़ दे दी, "तिलोत्तमा ! ज़रा आना।"

वही औरत जो भीतर वाले कमरे में बैठी चाय ले रही थी नाइट ड्रेस में ही आ गयी। अर्चना ने हाथ जोड़ नमस्कार की तो तिलोत्तमा ने भी हाथ जोड़ दिये और कहा, "आप को पहिले भी देखा है। कदाचित् पार्टी के कार्यालय में।"

"जी। सतीश मेरे बड़े भाई हैं। आज इनसे मिलने आयी तो आप के दर्शनों का सौभाग्य मिल गया।"

"मैंने इनके साथ रहने का निश्चय किया है।"

"आप यहां कब तक रहने का विचार रखती हैं ?"

"एक अनिश्चित काल के लिये। मेरे पीछे मेरी चिन्ता करने वाला कोई नहीं और यह सुना है कि यह भी अकेले हैं। जब तक पटेगी, चलेगी।"

सतीश ने उसके और कुछ बात कहने से पहिले अर्चना का परिचय दे देना ठीक समझा। उसने कहा, "तिलोत्तमा डीयर ! रात जो ज्योति पत्रिका पढ़ रहे थे उसकी ये व्यवस्थापिका हैं। उस पत्रिका के सम्पादक विख्यात हिन्दू सभाईट विष्णु शर्मा हैं और ये उसके मकान की ऊपर की मंजिल पर रहती है। इन्होंने अब पार्टी छोड़ दी है और पत्रिका पढ़ने से मेरे अनुमान की पुष्टि हो रही है कि ये भी हिन्दू सभाईट हो रही हैं।"

"ओह !" तिलोत्तमा ने विस्मय में पूछा, "यह किसलिये ?"

उत्तर सतीश ने ही दिया, "सब धर्मों में यह माना जाता है जो धर्म पति का होता है, वही उसकी पत्नी का होता है।"

"तो ये विष्णु शर्मा की संगिनी है ?"

"यह तो ये ही बतायेंगीं।"

जब तिलोत्तमा ने अर्चना की ओर देखा तो वह मुस्कुरा रही थी। तिलोत्तमा ने पूछा, "तो यह सत्य है ?"

"इतना तो सत्य ही है कि विष्णु शर्मा जी की मैं व्यवसाय में संगिनी हूं।"

"व्यवसाय ही तो सब कुछ है। महर्षि मार्क्स का यह कहना है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
संसार के सब काम अर्थ की धुरी पर घूमते हैं।"

"यह निर्विवाद सत्य नहीं।" अर्चना ने कहा और हंस पड़ी।"

"कौन विवाद करता है, इसकी सच्चाई पर ?"

"जो मनुष्य को केवल मट्टी का ढेला एक जड़ पदार्थ नहीं मानते। जो इसमें किसी चेतन की सत्ता को स्वीकार करते हैं।"

"कभी देखा भी है उसको ?"

"हां। एक भली औरत ने एक दिन दिखाया था और देख कर मुझको ज्ञान हो गया है।"

"मुझको भी उस औरत से मिला दो अर्चना बहिन !"

"यदि इच्छा हो तो आज सायंकाल भैया के साथ चाय लेने मेरे मकान पर आ जाना। आप उससे मिल सकेंगीं, परन्तु आप अपने में आत्मा को देख सकेंगी, कह नहीं सकती। मैंने तो देखा है। समय-समय पर फिर भी उसके दर्शन होते रहते हैं।"

"बहुत विचित्र है ! कहीं झूठ तो नहीं बोल रहीं ?"

"इसकी आवश्यकता क्या है ? क्या मिलने वाला है झूठ बोलने से ?"

अब सतीश ने कहा, "अच्छा तुम परस्पर इस विषय पर बात करो और मैं ब्रेकफास्ट के लिये तैयार होता हूं। चन्दन को कहला दो कि तुम नाश्ता यहीं लोगी।"

सतीश गया तो चन्दन को आवाज़ दे तिलोत्तमा ने कह दिया, "बहिन जी के लिये भी अल्पाहार बनेगा।"

: ६ :

ग्यारह बजे मध्याह्न पूर्व अर्चना अनिमा चटर्जी से मिलने जा पहुंची। अनिमा के बच्चे स्कूल जा चुके थे। मिस्टर चटर्जी भी कचहरी गये हुए थे। अनिमा ड्राइंग रूम में बैठी मिली। वह अर्चना को देख प्रसन्नता से कूद पड़ी, "ओ अर्चना बेटी ! प्रतीत होता है कि तुम तो मौसी को भूल ही गयी थीं। कहां रही हो इतने दिन ?"

"दिन नहीं मौसी, महीने। जहां तक मुझको स्मरण है मैं मौसी से तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महिने के उपरान्त मिल रही हूं।"

"बहुत याद रखती हो ?"

"हां मौसी ! बहुत कठिनाई से तो एक मौसी मिली है, भला उसे भूल कैसे सकती हूं ? व्यवसाय का प्रथम चरण बहुत कठिनाई का था। उसके लिये बहुत परिश्रम और समय देना पड़ा है। कल पत्रिका का पहिला अंक निकला है तो आज छुट्टी की है।"

"हां, सावित्री के पिता कह रहे थे कि हम को बधाई देने के लिये तुम्हारे घर पहुंचना चाहिये।"

"सत्य ? तो मौसी आज सायं पांच बजे चले आना। कुछ अन्य लोग भी आ रहे हैं।"

"कौन ?"

"दो कॉमरेड हैं। एक पुरुष और दूसरी स्त्री। विष्णु जी की मां और विष्णु जी भी होंगे। तुम भी सब आ जाओ तो बहुत मज़ा रहेगा।"

"मज़ा तो तब मानूंगी जब तुम भी अपने कॉमरेड के साथ हमारा स्वागत करने के लिये तैयार हो। बताओ अर्चना ! तुम विवाह कब कर रही हो ?"

"मौसी ! उसकी ही तैयारी तो कर रही हूं।"

"इस चाय पार्टी द्वारा ?"

"नहीं। अपनी पत्रिका और छापाखाना द्वारा। इनके द्वारा मैं अपना जीवन साथी ढूंड रही हूं।"

"अभी ढूंढ रही हो ? मैं समझती हूं कि तुमको चश्मों की आवश्यकता पड़ रही है। बिना उनके रखे तुमको सामने रखी वस्तु भी दिखाई नहीं देती।"

"पति देखने की बात कह रही हो मौसी ?"

"तो तुम क्या समझ रही थीं। विष्णु जितना हृष्ट-पुष्ट पांच फुट सात इंच ऊंचा और भले विचार का युवक तुमको दिखाई नहीं देता तो जरूर चश्मा लगवाना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मौसी ! विष्णु जी [illegible] देते हैं, परन्तु उनमें पति को अभी देख नहीं पाई। देखो मौसी ! एक दिन माता जी ने मुझसे स्पष्ट शब्दों में पूछ लिया था। वे पूछने लगीं, 'अर्चना ! विवाह क्यों नहीं करती ? मैंने उनको कहा था, 'मैं पति की प्रतीक्षा में हूं।' उन्होंने कहा, 'तो एक मैं बताऊं। मानोगी ?'

मैंने कहा, "आप बताइये। विचार करूंगी ?"

इस पर वे बोलीं, "मैं तुममें एक बहुत ही योग्य अपनी बहू देखना चाहती हूं।"

"मौसी, मैंने कह दिया, आपकी यह कृपा है जो मुझको इस योग्य मानती है; परन्तु मैं तो अपना पति अपने से अधिक धनवान ढूंढ रही हूं। आपकी आकांक्षा दो प्रकार से पूर्ण हो सकती है। या तो विष्णु जी मुझसे अधिक धनवान हो जाएं या मैं दिवाला पिट जाने से उनसे निर्धन हो जाऊं।"

"मौसी ! मैंने उनको यह भी कहा था कि मैं इन दोनों दिशाओं में यत्न कर रही हूं कि विष्णु जी मुझसे अधिक धनवान हो जाएं तब ही एक बनिये की बेटी की दृष्टि में उनका मान बन सकेगा। अन्यथा मैं यत्नकर रही हूं कि मेरी पत्रिका में मेरा दिवाला निकल जाये और मैं उनसे निर्धन हो जाऊं, तब ही मैं उनकी पत्नी का स्थान सुशोभित कर सकती हूं।

"विष्णुजी की माताजी मेरा अभिप्राय समझी अथवा नहीं, कह नहीं सकती। हां, उस दिन के उपरान्त उन्होंने मुझको फिर इस विषय पर कुछ नहीं कहा।"

"तो वह तुमसे अधिक धनवान अभी सिद्ध नहीं हुआ क्या ?"

अर्चना अनिमा के कहने का अभिप्राय अभी नहीं समझी। इस कारण मुख देखती रही।

अनिमा हंस पड़ी। हंसते हुए उसने कहा, "चटर्जी साहब कल पत्रिका पढ़कर कह रहे थे कि विष्णु तो सोने की खान है। भला तुम एक सोने की खान से भी अधिक पैसे वाली हो क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्चना हस पड़ी। हंसते हुए बोली, "उनके सोने की खान का मूल्यांकन करवा रही हूं। मार्केट में रखवा दी है। अभी मूल्य नहीं पड़ा।"

"कब तक मूल्य दिखाई देने लगेगा? चटर्जी साहब को तो वह सोना ही दिखाई दे रहा है। कठिनाई यह है कि वर्तमान सरकार 'चौदह कैरेट' को सोना मानती है और शुद्ध सोने को सरकार ने बेचना खरीदना बन्द कर रखा है। इस पर भी सोना तो ही है। खुलो मार्केट में नहीं तो छुपी मार्केट में विक जायेगा। सम्भव है सरकारी नियन्त्रण के कारण यह असल सोना बाज़ार में न चल सके। परन्तु उसके सोना होने में सन्देह नहीं हो सकता।"

"पर मौसी! उस सोने से क्या किया जा सकता है जो बाजार में चल न सके।"

"अर्चना! तुम छुपी-छुपी अभी भी कम्यूनिस्ट प्रतीत होती हो। कम्यूनिस्ट और सोशलिस्टों के समाज में वस्तुओं का मूल्यांकन राज्य करता है। परन्तु भले लोगों की दृष्टि में वस्तु का मूल्य उसके अपने गुणों में विद्यमान होता है। आज सरकार और सोशलिस्ट समाज विष्णु के साहित्य का मूल्य दो कौड़ी भी न लगाये तब भी उसमें सोने के गुण तो समय व्यतीत होने पर भी बने रहेंगे। जब यह समाजवादी सरकार नहीं रहेगी, तब सोने का मूल्य सोने के समान हो जायेगा।"

"तो क्या कहती हो मौसी?"

"मैं कहती हूं कि तुम दोनों के प्रयास से 'ज्योति' के प्रथम अंक को अपूर्वता के उपलक्ष में आज तुम दोनों के गठबन्धन की घोषणा कर दूं।"

"दूसरे पक्ष की इच्छा जाने बिना?"

"यह तुम मुझ पर छोड़ो।"

"तो मौसी! कर दो यह घोषणा। तब वह सोने की खान अपने घर ले आऊंगी। उसके लिये एक कमरा रिक्त रखा हुआ है।"

सौभाग्यवती रहो बेटी। सौ वर्ष तक जीयो और पुत्र-पौत्र और पर-पौत्रों का मुख देखो। तदुपरान्त इस यज्ञ रूपी जीवन के लिये मोक्ष के द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को प्राप्त हो।

"मौसी ! एक ही स्वर में बहुत कुछ दे डाला है ?"

"देगा तो भगवान्। मैं तो तुम्हारे लिये उससे विनती कर रही हूं। अच्छा, हम सब तुम्हारे घर पर आएंगे। मैं विष्णु को अपने साथ लाऊंगीं और देखो, चाय पार्टी इस अवसर के अनुकूल ही होनी चाहिये कि जीवन-भर स्मरण रहे।"

"तो मौसी ! तुम ही बता दो न कि क्या-क्या मंगवा लूं ?"

"यह मैं नहीं बताऊंगी। यह तो तुम्हारे मन की प्रसन्नता का मापदंड होगी। देखूं तुम इस सम्बन्ध से कितनी खुश हो ?"

अर्चना अपनी सहेली चन्द्रिका के घर जा पहुंची। चन्द्रिका का विवाह हुए तीन वर्ष हो चुके थे। अभी कोई सन्तान नहीं हुई थी। इस पर भी चन्द्रिका अति प्रसन्न रहती थी।

अर्चना गयी तो चन्द्रिका ज्योति का प्रथम अंक पढ़ रही थी। चन्द्रिका ने अर्चना को देखा तो उठकर उससे गले मिली। इस पर अर्चना को विस्मय हुआ। पहिले वह इतने उत्साह से कभी नहीं मिली थी। जब दोनों बैठ गयीं तो अर्चना ने पहिले इस गले मिलने का कारण ही पूछ लिया, "क्या चन्द्रिका ! आज इतनी खुश किसलिये हो ? क्या बधाई लेने की आशा से गले मिली हो ?"

"हां। बधाई लेने की बात तो है ही। मेरी सहेली अर्चना की पहिली सन्तान बहुत सुन्दर बन पायी है।" इतना कहते-कहते उसने ज्योति के अंक की ओर संकेत कर दिया।

"ओह ! तो तुम इसकी बधाई देना चाहती थीं ? मैंने तो समझा था कि तुम सन्तान निर्माण की दिशा में चल पड़ी हो ?"

"उसकी अभी जल्दी क्या है ? जल्दी तो इसकी थी। देखो, मैं अपने समाचारपत्र लाने वाले को कई दिन से कह रही थी कि 'ज्योति' निकलते ही आनी चाहिये। वह सायंकाल दे गया था। मैं पढ़ने बैठी तो बैठी ही रह गयी और यह देखो, तुमने भी एक प्रति डाक द्वारा भेज दी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम इसकी ग्राशा नहीं करती थीं ?"

' करती तो थी, परन्तु तुम्हारी सृष्टि को देखने की उत्कण्ठा को चौदह घण्टे रोककर रखना कठिन था।"

"ग्रौर कैसी लगी है यह ?"

"तुम्हारी कविता को तो कई बार पढ़ चुकी हूं। बहुत सुन्दर लिखा है—

"बाल वृद्ध जवानों को देखा खेलते जग में खिलौनों से।
क्यों झगड़ा करते हो रे मन इस बुद्धि के तुम बौनों से।।
उठ चलो राह पर तुम ग्रपने, खेलोगे कब तक बच्चों से।
ईश्वर से दी प्रभुता को तुम, गंवा मत बैंठो घिनौनो से।।

"ग्रर्चना एक बात कहूं ?"

'हां। कह सकती हो।"

"नाराज न होना ?"

"तुमसे कैसे नाराज़ हो सकती हूं ?"

"कुछ ऐसा लग रहा है कि तुमने विष्णु जी को वर लिया है। कम से कम विचारों में।"

"ग्रच्छा देखो, चन्द्रिका !" ग्रर्चना ने एकदम बात बदल कर कहा, ' ग्राज पांच बजे मेरे घर पर तुम्हारी चाय है।"

"क्या है ग्राज ?"

"यह चाय 'ज्योति' के प्रथम दर्शन के उपलक्ष में है।"

"सत्य ? तब तो ग्राऊंगीं।"

इस प्रकार ग्रपनी एक दो ग्रन्य सहेलियों को ग्रामन्त्रित करके ग्रर्चना दावत का प्रबन्ध करने बाजार में जा पहुंची। क्रौकरी मोल ली ग्रौर फिर मिठाई फल तथा चाय बनाने का सामान। होटल से एक खानसामा ग्रौर एक बैरा भी भाड़े पर साथ लेकर वह ग्रपने घर जा पहुंची। खानसामे को रसोई घर में चाय तथा सामान तैयार करने के लिये ग्रौर बैरे को बैठक घर में पन्द्रह मेहमानों के बैठने का प्रबन्ध करने के लिये कह वह नीचे विष्णु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की मां से मिलने चली गयी।

विष्णु सेठजी को गीता पढ़ाने गया हुआ था। शंकर स्कूल से लौटा ही था। रुक्मिणी उसके लिये नाश्ता तैयार करने रसोई घर में जा रही थी कि अर्चना ने अपनी चाय पार्टी का निमन्त्रण दे दिया।

जब अर्चना ने बताया कि 'ज्योति' के सफल प्रथम अंक के उपलक्ष में वह कुछ परिचितों को चाय दे रही है तो रुक्मिणी ने पूछ लिया, "कितने लोग आ रहे हैं ?"

"लगभग पन्द्रह लोग होंगे।"

"उन सब में मैं भला कसे बैठ खा सकूंगी ?"

"माताजी ! आ तो सकेगीं। बैठ भी सकेगीं। खाना पीना गौण है।"

"विष्णु भी आ रहा है क्या ?"

"ओह ! उनको तो बुलाया ही नहीं। वे सेठजी के यहां से आयेंगे तो बुलाकर ऊपर ले जाऊंगी।"

"वह साढ़े चार बजे आया करता है।"

"मैं उस समय आ जाऊंगी। माताजी ! उनको मेरा निमन्त्रण दे दीजियेगा।"

अर्चना ऊपर गयी ही थी कि विष्णु सेठ जी को पढ़ा कर लौट आया रुक्मिणी ने उसको अर्चना का संदेश दिया तो विष्णु ने कह दिया, "मां ! मुझको पता है।"

"पर वह तो कहती थी कि वह तुमको निमन्त्रण देना भूल गयी है।"

"नहीं मां ! यह नहीं। वह निमन्त्रण देकर भूल गयी प्रतीत होती है। यह काम में व्यस्तता के कारण है।"

"तो तुम जा रहे हो ?"

"क्यों नहीं जाऊंगा मां ! इस चाय पार्टी में मेरा भी तो कुछ भाग है ही।"

मां ने समझा कि ज्योति के प्रकाशन के विषय में कह रहा है। वह इतना ही कह सकी, "पत्रिका कुछ चलने लगती तब पार्टी दी जाती तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ठीक थी।"

"यह अर्चना की इच्छा से ही हो रही है।"

विष्णु बहुत प्रसन्न था। वास्तव में उससे अनिमा देवी ने मिलकर की जाने वाली घोषणा की बात कह दी थी। उसका विचार था कि इस घोषणा के विषय में माताजी से बात कर ली गयी है। इस कारण उसने अपनी सूचना को बताने का यत्न नहीं किया।

: ७ :

चाय पर जब सतीश और तिलोत्तमा आये तो अन्य सब मेहमान उपस्थित थे। चटर्जी, उसकी धर्म पत्नी और चारों बच्चे थे। विष्णु, उसकी मां और भाई था। चन्द्रिका इत्यादि अर्चना की तीन सहेलियां थी और अर्चना स्वयं थी। सतीश और तिलोत्तमा के लिये स्थान खाली पड़े थे। जब ये दोनों आये तो सब स्थान भर गये। अर्चना ने सतीश के साथ अभी आयी स्त्री का परिचय करा दिया ? ये है मेरी भाभी, सतीश जी की पत्नी तिलोत्तमा देवी।"

चटर्जी ने कहा, "ओह ! पर सतीश ! तुमने विवाह के अवसर पर बुलाया ही नहीं ?"

"मैंने किसी को भी नहीं बुलाया था। अर्चना को भी तो आज ही पता चला है।"

"तो यह विवाह कौन मानेगा ?"

सतीश ने अभी उत्तर नहीं दिया था कि अनिमा देवी ने कह दिया, 'परन्तु सतीश क्यों निमन्त्रण देता ? उसने तो विवाह किया नहीं। यह तो उसका तिलोत्तमा देवी से विवाह हो गया है। तिलोत्तमा देवी ने किस-किस को विवाह पर बुलाया था। इसके जानने का हमको क्या अधिकार है ? हमारा तो इससे परिचय था नहीं।"

इस पर सब हंसने लगे। "परन्तु क्या ?" रुक्मिणी ने पूछ लिया, "विवाह एक पक्षीय भी होता है ?"

"हां। मनु भगवान ने आठ प्रकार के विवाह लिखे हैं। उनमें दो प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के विवाह एक पक्षीय होते हैं। क्षत्रिय लोगों के लिए अपहरण कर लेना भी एक प्रकार का विवाह होता है।"

"ओह ! तो तिलोत्तमाजी ने सतीश का अपहरण किया है ?" चटर्जी ने प्रश्न कर दिया।

"हां, बात तो कुछ ऐसी ही है।" सतीश ने स्वीकार किया, "ये मुझको पकड़कर अपने पास रखे हुए है। यदि ये ऐसा न करें तो मैं तो एक स्वच्छन्द विचरने वाला पक्षी हूं।"

"मैं तो यह बात अर्चना से इनका परिचय देते समय ही समझ गई थी।" अनिमा ने कहा, "ये हैं भी तो सतीश से बड़ी आयु की। क्यों तिलो-त्तमाजी क्या आयु है आपकी ?"

"मेरे जन्म का रिकार्ड मेरे माता पिता के पास ही रह गया है और मेरी उनसे बनती नहीं।"

"इसकी आवश्यकता भी क्या है ?" चटर्जी ने कहा, जीवन में माता-पिता की आवश्यकता अधिक से अधिक बीस वर्ष की आयु तक रहती है।"

सब हंसने लगे। केवल चटर्जी के बच्चे मौन थे। वे इस वार्तालाप में छुपे भावों को समझ नहीं रहे थे। चन्द्रिका ने पूछ लिया, सतीश भैया ! आपके पिताजी के देहान्त के समय तो आप बीस वर्ष से बड़े हो चुके थे।"

"हां, तो फिर ?"

"मैं तो केवल यह कह रही हूं कि चटर्जी साहब का कथन कि बच्चों को अधिक से अधिक बीस वर्ष की आयु तक माता-पिता की आवश्यकता होती है, सर्वथा सत्य नहीं।

चटर्जी ने अपने कथन को चुनौती मिली सुन सतर्क हो पूछ लिया, "क्यों सतीशजी, बीस वर्ष की आयु के उपरांत तुमको पिता की आवश्यकता थी अथवा सेठजी को तुम्हारी ?"

"पिताजी की बात तो उनको ही पता होगी। हां, मैं अपनी बात बता सकता हूं कि मुझे तो पन्द्रह वर्ष की आयु के उपरांत जब मैं पढ़ने के लिए इगलैंड गया था, उनकी आवश्यकता नहीं रही थी। उनके धन की आव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्यकता तो आज तक है। अब तो और भी अधिक हो गई है।

"तब तो चन्द्रिकाजी ! मेरा कथन ठीक है। धन की आवश्यकता माता-पिता की आवश्यकता की सूचक नहीं।"

सब हंस रहे थे। सतीश और तिलोत्तमा लज्जा विहीन व्यक्तियों की भांति बैठे सुनते रहे।

इस समय तक बैरा ने चाय के साथ खाने का सामान परस दिया था। जब सब खाने लगे तो तिलोत्तमा ने कहा, "मैं तो इस दावत पर एक विशेष प्रयोजन से आई थी। अर्चना बहिन ने कहा था कि यहां एक माताजी होंगी जिन्होंने उसको आत्मा के दर्शन कराये हैं। मैं भी अपने आत्मा के दर्शन करना चाहती हूं।"

अर्चना ने उत्तर में कहा, "हां, वे माताजी यह हैं।"

उसने रुक्मिणी की ओर संकेत कर आगे कहा, "पहली रात जब मैं इनके घर ठहरी थी इन्होंने मुझको बताया था कि मेरा अमुक कार्य मेरे आत्मा द्वारा किया हुआ है। मैंने सुना, मनन किया और समझ गई कि मुझ में आत्मा है जो मेरे शरीर से पृथक् है।

"बस ? तो तुमने आत्मा को नहीं देखा। केवल उसका कार्य देखा है ?"

उत्तर रुक्मिणी ने दिया, "यह तो सर्वत्र होता है। गुणों से गुणी जाना और पहिचाना जाता है। जब कोई वस्तु दिखाई देती है तब भी तो उसके गुणों का ही ज्ञान होता है। कई पदार्थ हैं जो दिखाई नहीं देते, सुनाई नहीं देते, स्पर्श नहीं किये जा सकते, सूंघकर जाने नहीं जा सकते, परन्तु अपने अन्य गुणों से जाने जाते हैं। उदाहरण के रूप में बिजली है। यह देखी, सुनी अथवा सूंघी नहीं जा सकती। परन्तु अपने अन्य गुणों से इसका होना सिद्ध हो जाता है। यही बात आत्मा-परमात्मा की है। इनमें कुछ गुण होते हैं और उनसे ही इनकी उपस्थिति सिद्ध होती है।"

"पर माताजी ! बिजली के गुण तो हम जानते हैं। आत्मा के भला क्या गुण हैं ?"

"कब से जानने लगी हो बिजली के गुण ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब मैं आठवीं श्रेणी में गई थी। मैंने उसमें एक विषय विज्ञान लिया था। उस समय मास्टर ने विद्युत के गुण बताये थे।"

"ठीक है, परन्तु अध्यात्म विद्या का विषय तुमने लिया नहीं था। इस कारण तुम्हारे मास्टर ने आत्मा-परमात्मा के गुण बताये नहीं और तुम इनको देख नहीं सकती।"

"परन्तु अर्चना ने यह विषय अपनी पढ़ाई में लिए थे क्या?"

"ठीक यही विषय तो लिया प्रतीत नहीं होता, परन्तु इसने एम० ए० दर्शन शास्त्र लेकर पास किया है। दर्शन शास्त्र अध्यात्म विद्या का मार्ग है यह दर्शन पढ़ने के उपरांत भी अभी अध्यात्म के मार्ग पर चली नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अभी भटक रही थी और मेरे संकेत मात्र से यह उस पर चल पड़ी है।"

"क्या संकेत दिया था आपने?"

"यह भाई से रुष्ट होकर घर से निकली थी। एक युवा लड़की एक सुन्दर स्वस्थ और सबल युवक के साथ आधी रात अकेली चल पड़ी थी। ऐसी अवस्था में इसका शरीर इसको एक मार्ग पर चलने के लिए कह रहा था, परन्तु इसके भीतर बैठा कोई इसको युवक से वह प्रस्ताव करने से रोक रहा था। वह भीतर बैठा बलवान सिद्ध हुआ और यह मेरे पास आ गई। मैंने इसके मुख को देखते ही समझ लिया था कि शरीर और आत्मा के संघर्ष में से विजयी आत्मा मेरे पास आई है। मैंने इसको बताया कि वह रोकने वाला आत्मा था। अब यह उस आत्मा के विषय में और अधिक जानने का यत्न कर रही है।"

"हम उसको 'कॉनशन्स' कहते हैं।" सतीश ने कह दिया, "यह संस्कारों से बनती है।"

"और हम इसको आत्मा कहते हैं। यह भी संस्कारों के अधीन काम करता है। संस्कार तो प्रभाव मात्र है। ये स्वयं कुछ नहीं करते। हां, इनके प्रभाव के अधीन कार्य करने वाला एक चेतन तत्व है। वह ही आत्मा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और मन क्या है ?"

"यह एक प्रकार का यन्त्र है जो संस्कारों को ग्रामोफोन के रिकार्ड की भांति संचय करता रहता है। उचित समय पर इन संस्कारों को मन पर से पढ़कर आत्मा कार्य करता है। यह ऐसे ही है, जैसे कोई गाने वाला किसी रिकार्ड को ग्रामोफोन पर बजाकर उसके अनुसार गाने लगे।"

सतीश और तिलोत्तमा इस युक्ति को वाग्जाल मानते थे और अपने को उस जाल में फंस गया समझ बात बदल बैठे। तिलोत्तमा ने पूछ लिया "और माताजी ! आप कौन-सी श्रेणी तक पढ़ी हैं ?"

"मैं, मैं अध्यात्म विद्या की पहली अथवा दूसरी श्रेणी में ही हूं।"

"तब तो आप कुछ नहीं पढ़ीं।" सतीश ने कह दिया।

इस पर चटर्जी विष्णु की मां की सहायता के लिए बोल उठा, "ठीक है सतीश ! परन्तु तुम तो अभी इस स्कूल में दाखिल होने की भी योग्यता नहीं रखते। तुम तो इस स्कूल की प्रवेश परीक्षा में ही अनुत्तीर्ण हो चुके हो ?"

"मैं ? मैं तो इन जाहिलों के स्कूल में दाखिल होने की इच्छा भी नहीं रखता। प्रवेश परीक्षा का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।"

"इस पर भी तुम अनुत्तीर्ण हुए हो। इस संसार में जाने हुए अथवा अनजाने में सब एक न एक दिन इस परीक्षा के लिए उपस्थित होते हैं। विरले ही उसमें पास हो सकते हैं। संसार का प्रत्येक प्राणी शारीरिक सुखों की इच्छा करता है। ज्यों ही वह इसकी इच्छा करता है, वह परीक्षा में उपस्थित होता है। उसकी इच्छाएं उचित अथवा अनुचित हैं, यह प्रश्न-पत्र के रूप में उसके समक्ष उपस्थित होती हैं। तुम इसका उत्तर गलत देने से अनुत्तीर्ण हो चुके हो।"

"परन्तु वकील साहब ! मेरा उत्तर गलत है, यह सिद्ध करना होगा।"

"मैंने कह दिया है कि तुम्हारा उत्तर गलत है। अब फैसला करने वाले जज से पूछ लेना कि उसका क्या फैसला है ?"

"और उसकी अदालत कहां है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जहां परीक्षा हुई थी। वहां ही वह अदालत लगाये बैठा था। उसने फैसला सुना दिया है कि तुम फेल हो।"

"यह सब मज़ाक है वकील साहब ! मैंने कोई परीक्षा नहीं दी। मेरा किसी जज से वास्ता नहीं पड़ा और मैं कभी कहीं फेल नहीं हुआ।"

"क्यों तिलोत्तमाजी ! क्या सतीश सुखों के सामने पराभूत नहीं हुआ।"

"पर मैं तो इनके मुकदमों में जज नहीं हूं।"

"नहीं, तुम जज नहीं हो। परन्तु सतीशजी के फेल होने से लाभ उठाने वाली तो हो।"

"मैं समझता हूं कि यह सब कुछ बदतमीज़ी हो रही है। यह अब असह्य हो गई है।"

इस समय अनिमा बीच में ही बोल उठी, "अच्छा, मेरी एक तमीज़ की बात सुन लो। देखो सतीश ! आज यह दावत तुमको अध्यात्म ज्ञान देने के लिए नहीं की गई। इसका उद्देश्य कुछ और है। मैं इस दावत में एक घोषणा करने के लिए बुलाई गई हूं।"

सब दत्तचित्त होकर सुनने लगे। अनिमा ने कहा, "यह चाय पार्टी अर्चना ने अपनी सगाई के उपलक्ष में दी है। अर्चना और विष्णु ने यह निश्चय कर लिया है कि वे विवाह कर दम्पति जीवन बितायेंगे।

"और मैं इस अवसर पर इनको बधाई देती हूं और इस बधाई के उपलक्ष में यह इनके अर्पण करती हूं।"

उसने अपने थैले में से दो पुष्पमालाएं निकालीं और विष्णु और अर्चना को पहना दीं।

चन्द्रिका अर्चना के पास बैठी थी। उसने उसके गले में बांह डालकर कान में कहा, "अर्चना ! मैं यही तो कह रही थी कि तुम दोनों को सन्तान भी हो गई है।"

अर्चना समझती थी और हंस पड़ी। हंसकर उसके कान में ही उत्तर देने लगी, "यहां तो विवाह के पहले ही सन्तान और तुम्हारे विवाह के पीछे

Central Library
Gurukula Kangri ... Haridwar
168015
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी नहीं ?"

अनिमा ने दोनों सखियों को कानाफूसी करते देख पूछ लिया, "क्या साज़िश कर रही हो लड़कियो ? छुप-छुपकर कुछ नहीं होने दिया जायेगा ?

चन्द्रिका ने हंसते हुए कहा, "मौसी ! मुझको तो इस दावत का उद्देश्य कुछ और बताया गया था ।"

"क्या ?"

"जिस विवाह की अभी सगाई की घोषणा कर रही हो, मैं तो उस विवाह से हुई सन्तान के चिरंजीव होने का आशीर्वाद देने आई थी ।"

"सन्तान ?"

"हां मौसी ! अर्चना और विष्णुजी के साझे-प्रयास से कल एक लड़की उत्पन्न हुई है—'ज्योति' । मैं तो ज्योति के चिरंजीव होने का टोस्ट प्रोपोज़ करने वाली थी ।"

"ओह ! यह बात है । अच्छी बात है । इसके लिए भी शुभकामना कर दीजिए ।"

"और इसके निर्माताओं को शीघ्र ही विवाह करने पर बाध्य किया जाये जिससे यह अवैधानिक शिशु वैधानिक माना जा सके ।"

सब हंसने लगे । परन्तु न तो सतीश के मुख से और न ही तिलोत्तमा के मुख से एक भी शब्द प्रसन्नता अथवा आशीर्वाद का निकला ।

: ८ :

अर्चना और विष्णु शर्मा का साझा-प्रयास एक लम्बे संघर्ष का सूचक सिद्ध हुआ । ज्योति एक निरुद्देश्य साहित्यिक पत्रिका नहीं थी । इस पत्रिका ने साहित्य के उन सब कूड़े करकट की आलोचना आरम्भ कर दी जो मुसलमानी और अंग्रेजी काल में इसमें भर दी गई थी ।

विष्णु साहित्य का अर्थ केवल एक ललित कला ही नहीं लेता था, वह इसमें संसार भर के ज्ञान का लिखा जाना क्षम्य मानता था । जहां शब्द और अर्थ का युक्तियुक्त मेल है, वही साहित्य है अथवा जिससे भी मानव हित सिद्ध हो, वह लेख, कविता इत्यादि साहित्य है । साहित्य का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ललित रूप तो इसका एक बहुत ही छोटा अंश है। साहित्य का विराट् रूप तो पुराणों में मिलता है। यह उसका स्पष्ट मत था।

इस प्रकार के साहित्य का निर्माण और उसको पाठकों के समक्ष उपस्थित करना 'ज्योति' का एक उद्देश्य बना। अनिमा और विष्णु साहित्य जगत में अवतीर्ण हुए।

इस उद्देश्य को व्यर्थ, साम्प्रदायिक, अराष्ट्रवादी, मानवता विहीन, फूहड़, समाचारपत्रों का चिथड़ा इत्यादि विशेषणों से स्मरण किया जाने लगा। इस विरोध में सतीश, मणीन्द्र इत्यादि सब के आगे थे।

इन प्रगतिशील साहित्यकारों ने 'दक्षिण कलकत्ता साहित्य क्लब' के नाम से एक संस्था स्थापित कर कलकत्ता साहित्यिक सभा का स्थान लेने का यत्न आरम्भ कर दिया था।

जब सरस्वती भवन अधिकार से छूटा तो भवन संचालकों ने कलकत्ता साहित्य सभा को वह स्थान सभा करने के लिए देने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि जो सभा रजिस्टर्ड नहीं, उसको हम यह भवन किराए पर नहीं देगें। दक्षिण कलकत्ता साहित्य क्लब ने अपनी सभा को रजिस्टर करा लिया और वे इस भवन का प्रयोग करने लगे।

इस पर विचार होने लगा कि कलकत्ता साहित्य सभा को भी रजिस्टर करा लिया जाए।

इस पर ज्योतिस्वरूप दास और नरेश चटर्जी में इस विषय पर विचार विनिमय हुआ। तदनन्तर इस सभा के संस्थापक सदस्यों की बैठक बुलाई गई। उसमें विचार विनिमय होने लगा। ज्योतिस्वरूप का कहना था कि "हमको इसके लिए किसी से चन्दा नहीं मांगना। इस कारण इसको रजिस्टर कराने की आवश्यकता नहीं।

चटर्जी साहब का कहना था कि रजिस्टर्ड कराने का उद्देश्य चंदा मांगना नहीं, वरन् इसकी रूपरेखा को स्थिर करना है। दोनों प्रकार के विचारों पर वाद-विवाद हुआ और सभा रजिस्टर्ड करा ली गई। इसके मेमोरैण्डम में यह बात स्पष्ट कर दी गई कि यह एक स्थानीय सभा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और इसका उद्देश्य सब प्रकार के साहित्य को पनपने में सहयोग देना है।

इस पर सरस्वती भवन वालों ने इनको भी अपनी सभा करने की स्वीकृति देनी आरम्भ कर दी। अब महीने में दो साहित्य सभाएं इस भवन में होने लगीं। दोनों में प्रतिस्पर्धा चलने लगी। एक कम्यूनिस्ट संचालित थी। दूसरी कुछ साहित्यिक प्रेमियों से जिनमें विचारधारा कोई बाधा नहीं थी।

साहित्य सभा में तो अनेक विचारों के लोग आते थे। बौद्ध, जैन, ईसाई, बंगला, मराठी, तेलेगू, और तमिल तया हिन्दी के लेखक तथा राजनीति के विचार से कम्यूनिस्ट, समाजवादी, हिन्दू विचार के लेखक आचार-विचार की दृष्टि से स्वतन्त्र जीवन के पक्षपाती अथवा संयुक्त जीवन के उपासक। बिरादरियों और जाति-पांति के मानने वाले तथा गुण कर्म स्वभाव के मान-उपाधियों को स्वीकार करने वाले।

इस पर भी केवल कम्यूनिस्ट संचालित सभा में भीड़ अधिक होती थी। उसकी चर्चा समाचारपत्रों में भी होती थी और सभा के नेताओं को सरकार सम्मान भी देती थी।

यह सब कुछ होते-होते एक वर्ष व्यतीत हो गया। मानहानि के दावों में ज्योतिस्वरूप और अर्चना से तो 'कॉमरेड' समाचारपत्र ने क्षमा मांग ली और इन दोनों ने मुकद्दमा वापिस ले लिया। चटर्जी के मुकद्दमें में फैसला पुलिस और सरकार के विपरीत गया। चटर्जी के मान का प्रतिकार पांच सौ रुपया आका गया।

सब जज के इस निर्णय के विपरीत चटर्जी ने सेशन कोर्ट में अपील कर दी। सरकार ने भी अपील की। सरकार का कहना था कि किसी प्रकार की मान-हानि नहीं हुई। चटर्जी का कहना था कि उसको मान-हानि का प्रतिकार कम दिलाया गया है।

"सेशन कोर्ट ने फैसला बहाल रखा और तब दोनों पक्षों ने हाई कोर्ट में अपील की। हाई कोर्ट में दोनों पक्ष की वकीलों का भारी दंगल हुआ। तीन दिन तक बहस होती रही और अंत में हाईकोर्ट की बैंच ने यह निर्णय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया कि अपमान तो हुआ है, शारीरिक कष्ट भी हुआ है। सरकारी वकील का कहना कि यह अपमान करने की नियत से नहीं किया गया, ठीक हो सकता है परन्तु ऐसा अदालत में मान क्यों नहीं लिया गया ? रिपोर्ट करने वाला कौन व्यक्ति था ? उसका नाम क्यों नहीं बताया गया ? गवाहों से सिद्ध हो गया है कि पुलिस लेकर कांतिनारायण चट्टोपाध्याय आया था। वह कम्यूनिस्ट दल के टिकट पर विधान सभा में चुना गया था। पीछे वह कांग्रेस में सम्मिलित हो गया था।

"इससे यह सिद्ध होता है कि रिपोर्ट चाहे किसी ने लिखवाई हो, परन्तु पुलिस लाने वाला कांतिनरायण था और उसके मन में भ्रम नहीं हो सकता कि सभा में कम्यूनिस्ट नहीं हैं। इससे यह अनुमान लगाना अयुक्ति संगत नहीं कि कांतिनारायण ने अपने प्रभाव से पुलिस वालों से लाठी चार्ज कराया था। पुलिस ने विना जांच किए कि रिपोर्ट सत्य है अथवा असत्य एक संशित कम्यूनिस्ट के कहने पर शांतिपूर्वक सभा कर रहे नागरिकों को लाठी से पीटा है, उनका अपमान किया है और उनके शरीर और मन को आघात पहुंचाया है।

"जहां तक प्रश्न प्रतिकार का है। पांच सौ रुपया बंगाल सरकार के मान के अनुसार नहीं। इस मुकद्दमे में छोटी अदालत से लेकर इस अदालत तक पचास पेशियां हो चुकी हैं। उन पचास पेशियों में सरकार का और दावा करने वालों के खर्चे का भी अन्दाज़ लगाया जाए तो पांच सौ नगण्य राशि हो जाएगी।

"यह ठीक है कि यह राशि सांकेतिक है, परन्तु संकेत भी तो ऐसा होना चाहिये जिसका अनुभव अपराधी को हो सके। हम सब बातों का ध्यान रख कर यह राशि पांच हजार ठीक समझते हैं।"

बंगाल सरकार की इस पराजय के प्रतिकार में, भारत सरकार ने सतीश सोमानी को एक श्रेष्ठ साहित्यकार मान पद्म भूषण की उपाधि दे दी। सतीश की एक कहानी 'मां' पर यह मान दिया गया था।

'मां' की कहानी का सारांश था ममता और कर्तव्य में संघर्ष और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अन्त में कर्तव्य की विजय।

इसके विपरीत 'ज्योति' के तीन अंक बंगाल सरकार ने ज़प्त किये। इन अंकों को ज़प्त करके भी विष्णु पर मुकद्दमा नहीं चलाया गया।

विष्णु मुकद्दमा कर सकता था, परन्तु विष्णु ने इसके लिये धन व्यय करना और कचहरी की मिट्टी छानना उचित नहीं समझा।

एक दिन अर्चना एक संसद सदस्य को दिल्ली में बता रही थी कि भारत सरकार पक्षपात पूर्ण व्यवहार रखती है। सदस्य महोदय ने उत्तर में कहा, "इसमें आश्चर्य करने की बात क्या है? दुनिया की सब सरकारें अपने सहायकों से पक्षपात करती ही हैं।"

"अर्चना ने मुस्कराते हुए कहा, "यद्यपि यह कोई अच्छी बात नहीं, परन्तु यहां तो बात इस प्रकार नहीं। भारत सरकार अपने सहायकों की नहीं, वरंच अपने विरोधियों से रियायत करती है।"

"अर्चना देवी! कोई उदाहरण बताइये, एक साहित्यिक को कभी-कभी तो कल्पना से ऊपर उठना चाहिये।" सदस्य महोदय ने चुनौती दे दी।

अर्चना ने गम्भीर हो कहा, "अभी कुछ दिन हुए एक सतीश कुमार को पद्म-भूषण की उपाधि प्रदान की गई है। वह थर्ड रेट लेखक है और कभी छः मास में एक लेख लिख पाता है। उसके लेख ऐसी पत्रिकाओं में छपते हैं जिनकी ग्राहक संख्या एक दो सहस्र से अधिक नहीं होती।

"अब पद्म-भूषण की उपाधि मिलने के उपरान्त उसको रूस, हंगरी, पोलैण्ड तथा रूमानियां से निमन्त्रण आने लगे हैं और सरकार उसको देश के साहित्य एवं संस्कृति का प्रतीक मान भेजने में सहायता दे रही है।

"वह अवश्य कम्यूनिस्ट होगा?" संसद सदस्य ने कहा।

"जी और चीन समर्थक कम्यूनिस्ट।"

"तब तो ठीक है। यह सब कुछ जरूर जवाहरलालजी के संकेतों पर हुआ होगा या हो रहा है।"

"यही तो मैं कह रही हूं कि भारत सरकार अपने विरोधियों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्मान करती है। उनको धन और पदवी देती है।

यह नीति है। गांधी जी जीवन भर विरोधियों से पक्षपात करते रहे। उनकी अहिंसात्मक नीति की यही तो श्रेष्ठता थी और जवाहरलाल जी महात्माजी के पद चिह्नों पर चलने वाले हैं।

"परन्तु यह नीति घातक नहीं क्या ?"

"हमें तो यह फलदायक प्रतीत हो रही है।"

'अर्चना विचार करने लगी कि भगवान ने देश की बाग डोर किन बुद्धिहीन व्यक्तियों के हाथ में दे रखी है।

वह दिल्ली में 'ज्योति' के लिये विज्ञापन लेने आयी हुई थी। विज्ञापन बराबर मिल रहे थे। पत्रिका के एक साधारण पृष्ठ का विज्ञापन एक सहस्र रुपया था। वर्ष भर के लिए विज्ञापनों के कई कन्ट्रेक्ट भी मिल गये थे। इस प्रकार व्यापारियों और उद्योगपतियों की प्रतिक्रिया पर संतुष्ट हो वह संसद सदस्यों से बात करने पहुंची थीं। वह अपनी पत्रिका इन सदस्य महोदय को निरंतर भेजा करती थी और इन सज्जन का यह विचार सुन वह ग्लानि से भर बोली, "आपको हमारी पत्रिका तो मिलती होगी ?"

"हां। मेरी बच्ची और मेरी पत्नी बड़े चाव से उसकी प्रतीक्षा में रहते हैं।"

"आपने भी कभी पढ़ी है ?"

"मेरे पास इतना समय कहां है ? हां, उसको डाक में देखता अवश्य रहता हूं। लड़की नित्य पूछ लेती है 'ज्योति' आयी है या नहीं।"

"कभी पत्नी अथवा लड़की से पूछना तो चाहिये था कि वे उसमें क्या देखती हैं, जिससे वे उसकी इतनी चाव से प्रतीक्षा करती रहती हैं।"

"मैंने आवश्यकता नहीं समझी। अवश्य कुछ सेक्स की बातें रहती होंगी। मैं ऐसी बातें उनसे पूछ नहीं सका और पूछता भी तो वे बताती क्यों ?

"आप की लड़की कितनी बड़ी है ?"

"दसवीं श्रेणी में पढ़ती है। यहां एक पब्लिक स्कूल में है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो इस कुमारी को आप सेक्स सम्बन्धी बातें पढ़ने से मना नहीं करते ?"

वह खिलखिलाकर हंस पड़ा। हंस कर पूछने लगा, "आप के कोई सन्तान है अथवा नहीं है"

"नहीं, अभी नहीं।"

"तो हो लेने दो और उसके कौमार्यावस्था तक आने पर देखियेगा कि उनको किसी ऐसी बात से मना कर सकती हैं ?"

अर्चना समझ गयी कि राज्य के इन कर्णाधारों से मस्तिष्क खराब करना व्यर्थ है। भगवान् इस देश की रक्षा करे।

: ९ :

दिल्ली में कार्य समाप्त कर वह कलकत्ता लौट रही थी। फर्स्ट क्लास के एक जनाना कम्पार्टमैन्ट में उसको स्थान मिल गया था। उसी कम्पार्ट मैन्ट में दो सीटें दो अन्य स्त्रियों के लिए रिज़र्व थीं। अर्चना स्टेशन पर उनसे पहिले पहुंची। उसने डिब्बे के बाहर अपना नाम पढ़ते समय अपने कम्पार्टमैन्ट की साथिनों का भी नाम पढ़ा। वह उनको जानती नहीं थी।

वह अपना सामान सीट के नीचे रखवा ही रही थी कि वही संसद सदस्य महोदय, जिससे पिछले दिन अर्चना की बातचीत हुई थी अपनी लड़की और पत्नी को डिब्बे में चढ़ाने आ पहुंचे। अर्चना समझ गयी कि उसके कम्पार्टमेंट की साथिनें उसकी पत्रिका को चाव से पढ़ने वाली पाठिका ही हैं।

वे लोग कम्पार्टमेंट में आये तो संसद सदस्य महोदय अर्चना को पहिचान गये और अपनी पत्नी से उसका परिचय कराने लगे, "ओह ! अर्चना जी ! आप भी जा रही है ?"

'जी।"

"लो निर्मला ! ये हैं अर्चनादेवी। 'ज्योति' पत्रिका की व्यवस्थापिका।

निर्मला सदस्य महोदय की लड़की का नाम था। इसके उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य ने अपनी पत्नी का परिचय करा दिया, "ये हैं श्रीमती कमल कान्ता।"

"ओह ! आपकी पत्नी ?"

"हां और यह निर्मला मेरी लड़की है।"

गाड़ी का समय हो गया था। इस कारण इस परिचय के अतिरिक्त अन्य बात नहीं हो सकी। गार्ड ने सीटी दे दी थी।

सदस्य महोदय हलबुली में गाड़ी से नीचे उतर कर प्लैटफार्म पर खड़े हो गये और गाड़ी हिल पड़ी। नमस्ते-नमस्ते हुई और गाड़ी चल पड़ी।

जब कमल कान्ता और निर्मला सब सामान ठीक प्रकार रख निश्चिन्त हो बैठीं तो बातें होने लगी। निर्मला ने पूछ लिया, "विष्णु शर्मा जी विवाहित हैं अथवा अविवाहित ?"

इस प्रश्न से अर्चना उसका मुख देखते लग गई। फिर उसने पूछा, "यह किसलिये पूछती हैं निर्मला जी !"

"हमारी अध्यापिका जी कहती हैं कि ये लेखक अविवाहित है। इसी कारण ये इतिहास, राजनीति और धर्म-कर्म आदि शुष्क विषयों में लिखा करते हैं। यदि वे विवाहित होते तो लिखने के लिए पति-पत्नी सम्बन्धी सरस विषय लेते।"

अर्चना की हंसी निकल गई। इस पर निर्मला ने पूछ लिया, "इसमें हंसी की क्या बात है ?"

"हंसी की बात यह है कि कदाचित् तुम्हारी अध्यापिका अविवाहित है। उसको स्वयं पता नहीं कि पति-पत्नी के सम्बन्ध की क्या बातें होती हैं ?"

अब हंसने की बारी निर्मला की थी। साथ ही उसकी मां भी हंसने लगी थी। अर्चना गम्भीर हो रही थी। उत्तर कमल कान्ता ने दिया, "हां, आपका यह अनुमान तो ठीक है कि इसकी वह अध्यापिका अविवाहित है, परन्तु यह बात ठीक नहीं कि वह पति-पत्नी के सम्बन्धों की बात नहीं जानती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्चना इसका अर्थ समझ चकित रह गयी। उसने विस्मय से पूछ लिया, "और उसकी इस बात को यह लड़की भी जानती है ?"

"हमारी श्रेणी की सब लड़कियां जानती हैं।" निर्मला ने उत्तर दिया, "उसका 'लवर' अपनी मोटर में उसको छोड़ने और ले जाने आया करता है।"

"और वह उसके घर में रहती है ?" अर्चना ने निर्मला के ज्ञान की थाह लेने के लिये पूछ लिया।

"यह बात हम कैसे जान सकती हैं। हां, सुना है कि वह पुरुष विवाहित है और उसके अपने बच्चे भी हैं।"

"तो निश्चय जानो कि वह उसके घर में नहीं रहती। इस कारण वह पति-पत्नी के सम्बन्धों के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं रखती। ऐसा प्रतीत होता है कि वह पति-पत्नी के सम्बन्धों को पशुओं के सम्बन्ध के तुल्य समझ रही है और दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है।"

"क्या अन्तर है ?" निर्मला ने पूछ लिया।

अर्चना इस लड़की के इस प्रकार के प्रश्नों पर आश्चर्य अनुभव कर रही थी परन्तु उसकी मां अपनी लड़की की ज्ञान लिप्सा पर मुस्कुरा रही थी। अर्चना ने कुछ विचार कर लड़की को समझाने के लिये कहा, "देखो निर्मला ! पुरुष-स्त्री जो केवल वासनाभिभूत परस्पर मिलते हैं उनको पति-पत्नी के दायित्व का अंशमात्र भी ज्ञान नहीं होता। विवाह से पति-पत्नी बनते हैं और तब वे पांच प्रकार के यज्ञों, मेरा मतलब है कर्तव्यों को करने का भार अपने सिर पर लेते हैं।

"इन कार्यों को करने के लिये धनोपार्जन प्रथम कार्य है। दूसरा कार्य है सन्तान उत्पन्न कर उनके पालन-पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करना। तीसरा कार्य है देश के विद्वानों के सत्कारार्थ अर्थात् उनके पालनार्थ उपाय करना। चौथा है अपने पूर्वजों की प्रतिष्ठा में उनसे निर्मित एवं आविष्कृत पदार्थ सिद्धान्त तथा ज्ञान-विज्ञान की रक्षा करना। पांचवा है अपने आश्रित सेवक तथा पशु-पक्षियों का पालन-पोषण का प्रबन्ध करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और वैसे ही विवाह के बिना मिलने वाले पुरुष-स्त्री तो वासना तृप्ति, जो उक्त कार्यों में दूसरे कार्य का एक अंश मात्र ही है, को ही जानते तथा करते हैं।"

निर्मला तो इन सबको समझ ही नहीं सकी, परन्तु उसकी मां इसका अर्थ कुछ-कुछ समझ सकी थी। अतः उसने कहा, अर्चना देवी! यह ठीक है, परन्तु आज मानव समाज ने समाजवाद का आविष्कार कर मनुष्य के प्रायः सब कार्यों का उत्तरदायित्व अपने हाथ में ले लिया है और गृहस्थ में केवल वासना तृप्ति ही पुरुष-स्त्री के अपने वस में रह गया है।"

"परन्तु अभी तो समाजवाद हुआ नहीं। जब होगा तब भी समाज इनको कर नहीं सकेगी। देखिये! आज भारत सरकार धनोपार्जन पर प्रतिबन्ध लगा रही है। पूर्ण समाजवाद होने पर किसी भी व्यक्ति की आय दो-तीन सौ रुपये से अधिक नहीं रह जायेगी। उसमें पति-पत्नी अपना निर्वाह भी नहीं कर सकेंगे।

"गृहस्थाश्रम के शेष कार्य, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा, विद्वानों का आदर सत्कार, पूर्वजों के ज्ञान की रक्षा तथा उनका सम्मान और पांचवा सेवक तथा पशु-पालन तो समाजवाद में चल सकते ही नहीं।"

"कैसे नहीं चल सकते?" कमल कान्ता का प्रश्न था।

"पहिले शिक्षा-दीक्षा पर ही विचार कीजिये। आप की यह लड़की कहां पढ़ती है?"

"पटेल पब्लिक स्कूल में।"

"कितनी फीस और दूसरे खर्चे हैं वहां के?"

"पचास रुपये प्रतिमास के पड़ जाते हैं।"

"तो समाजवाद में सरकार जाति के दस करोड़ बच्चों के लिये यह प्रबन्ध कर सकेगी क्या? समाजवाद आंशिक रूप में ही अभी हो पाया है और स्कूलों की शिक्षा का स्तर बहुत गिर गया है। भाषा, इतिहास, ज्ञान, विज्ञान, इत्यादि सब विषयों में पढ़ाई का स्तर नीचे ही नीचे जा रहा है। यही तो कारण है कि आप जैसे सम्पन्न व्यक्तियों को अपनी लड़की उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्रहीन अध्यापिका के पास भजन में विवश होना पड़ा है।

"तो क्या पहिले शिक्षा का स्तर इससे ऊंचा था ?"

"निसन्देह। साधारण सरकारी स्कूलों में और धनी मानी लोगों के दान-दक्षिणा में चलने वाले स्कूलों में एक तो ऐसे चरित्र की अध्यापिका को रहने ही नहीं दिया जाता। दूसरे सब विषयों में आज के सरकारी स्कूलों से शिक्षा ऊंची मिलती थी। उस समय की कई प्रकार की बाधाएं विदेशी राज्य के कारण थीं। इस पर भी भाषा और ज्ञान का स्तर ऊंचा था।"

"हम तो इससे उलट समझती है।"

"एक बात तो हमारे शिक्षा मन्त्री दिन-रात उच्च स्वर से चिल्ला-चिल्ला मकान की छत पर चढ़ कर कह रहे हैं कि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान विद्यार्थियों को कम हो रहा है।"

"वह तो स्टंट है। सरकार अंग्रेजी की पढ़ाई पहिली श्रेणी से करना चाहती है और लोगों को इस बात को स्वीकार करने के लिये यह सब कुछ कहा जा रहा है।"

"इस पर भी है यह सत्य है। पहिली श्रेणी से अंग्रेजी पढ़ाने पर भी अंग्रेजी भाषा का ज्ञान उतना नहीं हो सकता, जितना एक अंग्रेज बच्चे का होगा। ज्यों-ज्यों शिक्षा देहातों में फैलेगी त्यों-त्यों अंग्रेजी का स्तर गिरेगा। साथ ही शिक्षा माध्यम अंग्रेजी होने से पूर्ण शिक्षा का स्तर नीचे गिरेगा।"

"सब से बड़ी बात यह है कि समाजवादी सरकार सीमित सन्तान उत्पन्न करने के गुण बताते-बताते जनता में सन्तान पैदा करने से अरुचि उत्पन्न कर देगी। दूसरे शब्दों में गृहस्थाश्रम का दूसरा कर्तव्य सन्तान पैदा करना और उसके पालन-पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करना अरुचि-कर हो जायेगा। शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध तो भला सरकार का शिक्षा-विभाग कर लेगा परन्तु जब सन्तान से अरुचि व्यापक हो गयी तो सरकार बच्चे पैदा करने के कारखाने भी खोलेगी क्या ?"

इस पर तीनों हंसने लगीं। हंसते हुए अर्चना ने कहा, "तीसरा कर्तव्य है विद्वानों को मान देना। क्या आपको विदित है कि कुछ दिन हुए कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के एक सतीश कुमार को पद्मभूषण का पदक दिया गया है। आपने उसकी कोई रचना पढ़ी है ?"

निर्मला बोल उठी, "हां। हमारे स्कूल ने सतीश जी का सम्मान किया था। पद्म भूषण का पदक पाने के दूसरे दिन वे हमारे स्कूल में आये थे। उनका भाषण हुआ था और हमारे स्कूल की ओर से उनको अभिनन्दन पत्र दिया गया था।"

"उनकी किसी रचना की बात भी हुई थी ?"

"हमारी मुख्याधिष्ठात्री ने भाषण में कहा था कि सतीश जी ने एक कहानी रूस की किसी पत्रिका में लिखी है। वह साहित्य की एक अनुपम रचना है। उनको एक उच्चकोटि का साहित्यकार जान यह मान मिला है।

"और उस कहानी में क्या लिखा है ?"

"यह तो बताया नहीं।"

"देखो निर्मला, मैं बताती हूं। कहानी का शीर्षक है 'मां'। अर्थ है कि कम्यूनिज़म जिसको वे वैज्ञानिक समाजवाद कहते हैं, संसार को ग्रहण कर लेना चाहिये और इसी से उसका कल्याण हो सकता है। मां का पुत्र इस वाद का पक्षपाती है और उसके लिये मां को छोड़ जाता है। इस कम्यूनिज़म की प्रशंसा के कारण ही उसको यह पदक मिला है।"

"वैसे सतीश जी का यह लेख उनके अन्य लेखों से अधिक प्रबल भाषा में लिखा गया है, परन्तु वह लेख और उनके अन्य लेख कम्यूनिस्टों की पत्रिकाओं में भी नहीं छप सकते। वे लोग इनको एक छोटे दर्जे का लेखक मानते हैं।"

"इन सतीश जी के स्थान पर संस्कृत के अनेकों विद्वान है जिन्होंने प्राचीन धर्म और शास्त्रों पर अति विद्वत्ता पूर्ण लेख लिखे हैं। उनको पदक मिलना तो दूर उनके लिये एक पुष्प माला भी तो सरकार के पास नहीं है। यह समाजवाद का ही परिणाम है।'

एक बात तो आप ठीक कहती हैं। विष्णु शर्मा जी की कहानियां तो अत्यन्त रुचिकर होती है। पढ़कर समाप्त किये बिना चित्त नहीं मानता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कभी-कभी तो इनकी कहानी को बार-बार पढ़ने को चित्त करता है।"

"और जानती हो कि समाजवादी सरकार ने एक वर्ष में उसकी तीन कहानियां ज़प्त कर ली है। केवल इसलिये कि वे कम्यूनिजम के सख्त खिलाफ है और सरकार पर जनता में धोखे से कम्यूनिज़म का प्रचार करने का आरोप सिद्ध करती है।"

"कौन-कौन से अंक में वे छपी हैं?"

"एक तो मई के दूसरे अंक में। दूसरी जुलाई के प्रथम अंक में और तीसरी नवम्बर के दूसरे अंक में।"

"परन्तु वे अंक तो हमने पढ़े हैं। उनमें क्या आपत्ति हो सकती है सरकार को?"

"बंगाल सरकार को है। उनमें उनके शिक्षा विभाग की धोखाधड़ी खोली गई है।"

"वे तीनों अंक तो मेरे सन्दूक में अभी भी रखे हैं।"

"उनको पुनः पढ़ कर देखना। हमारा तो यह कहना है कि सतीश को पदक मिलना और इस पत्रिका के इन अंकों को जप्त होना समाजवादी सरकार का पक्षपातपूर्ण व्यवहार है।

"मेरा कहना है कि समाजवादी सरकार गृहस्थ आश्रम के इस तीसरे कर्तव्य को भी पालन करने के अयोग्य सिद्ध हुई है।

"सो निर्मला गृहस्थ अर्थात् पति-पत्नी के कर्मों के विषय में तुम्हारी अध्यापिका जानती नहीं। वह जान सकती भी नहीं और विष्णु जी उससे कहीं अधिक जानते हैं।"

"तो वे विवाहित हैं?"

"यह तुम उनको पत्र लिखकर पूछ लेना।"

"पर अब तो मैं कलकत्ता जा रही हूं। विचार है कि एक दिन उनके कार्यालय में जा पहुंचूं और ज़रा देखूं तो कि वे किस मट्टी के घड़े हैं जो इतनी रोचक कहानियां लिख सकते हैं।"

"हां ज़रूर आना। वे कार्यालय में प्रातः ४ वजे से दस वजे तक कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करते हैं।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतनी सुबह ? और दिन भर क्या करते रहते हैं ?"

"फिर सायं ४ बजे से छः बजे तक रहते हैं। इस समय में वे मिलने वालों के लिये रिक्त होते हैं।"

"तो इस समय मिलने आऊं ?"

"हां ! हां ! ज़रूर"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

वास्तव में सतीश को यह पदक मिला था नेहरू जी पर एक कविता लिखने के उपलक्ष में। कविता लिखी थी तिलोत्तमा ने और छपी थी दिल्ली की एक पत्रिका 'जनता' में सतीश के नाम। इस पर भी जब पदक दिया गया तो संसद में विपक्षियों की आलोचना से बचने के लिये रूस में छपी एक कहानी के आधार पर कह दिया गया और सतीश की अन्य कला कृतियों को भी उल्लेख कर दिया गया।

इस पुरस्कार प्राप्ति के प्रयास में तिलोत्तमा का हाथ बहुत था। उसने बंगाल सरकार और भारत सरकार के शिक्षा और सांस्कृतिक विभाग के अधिकारियों से बहुत मेल मुलाकात की थी।

जब पुरस्कार की प्राप्ति के लिये दिल्ली आने का निमन्त्रण सतीश को मिला तो सतीश अपना तब तक का जीवन विवरण तैयार करने लगा। तिलोत्तमा की मांग थी कि उसमें उसको वह अपनी पत्नी घोषित करे। सतीश मान तो गया और उसने उसके सामने लिख भी लिया परन्तु वह जीवन विवरण टाइप करा कर सरकारी विभाग में भेजने लगा तो उसमें से उसने पत्नी का अंश काट दिया। उसने विवाह होने की बात लिखी ही नहीं।

वह दिल्ली में आया तो तिलोत्तमा उसके साथ आयी।

पदक से विभूषित किये जाने के उपरान्त समाचारपत्रों के संवाद-दाताओं से उसकी भेंट हुई। उसने अपने अटैंची केस से निकाल टाइप की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुई जीवन विवरण की प्रतियां उनमें वितरित कर दीं।

उस समय एक प्रति तिलोत्तमा के हाथ भी लग गई। होटल में बैठ जब उसने पढ़ी तो अपने विषय का सब हवाला निकला हुआ देख वह आग बबुला हो गई।

इस समय सतीश इम्पीरियल होटल के लौंज में बैठा कुछ कम्यूनिस्टों से बातचीत कर रहा था। तिलोत्तमा आई और सबके बीच ही उससे पूछने लगी, "इसमें से कुछ विवरण "मिसिंग" है।"

"हां। वह मैंने अपने साथियों के कहने पर निकाल दिया था।"

"कौन है वे आपके साथी ?"

"कलकत्ता चलकर बताऊंगा।"

तिलोत्तमा वहां से उठकर अपने कमरे में चली आई। सायंकाल जब सतीश वहां आया तो तिलोत्तमा कलकत्ता जाने के लिये अपना सूटकेस तथा बिस्तर बांध तैयार खड़ी थी।

"कहां की तैयारी है तिलोत्तमा जी।" सतीश ने पूछा।

"कलकत्ता की।"

"पर हमारा तो कल एक पब्लिक स्कूल में रिसेप्शन है।"

"हमारा नहीं। आपका है और आप उसके पीछे ही कलकत्ता आएंगे। मैं अपना यहां कुछ काम नहीं देखती। इस कारण आज ही जा रही हूं।"

"परन्तु इस समय सीट मिल जायेगी क्या ?"

"मिल जाएगी।"

"और परसों की आपकी सीट ?"

"टिकट कल वापिस कर दीजियेगा।"

"परन्तु वहां कौन-सा आवश्यक कार्य है जो इस प्रकार भागती हुई जा रही हो ?"

"कुछ मणीन्द्र मुखर्जी से काम है।"

"वह तो रूस जा रहा है।"

"मुझको विदित है। परसों उससे मिल सकूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मेरे तो यहां 'ऐंगेजमैंट्स' हैं। परसों सायंकाल तक ही अवकाश पा सकूंगा।"

"और फिर वाराणसी और पटना भी तो आपको ठहरना है ?"

"वहां तो तुम्हारी वहुत आवश्यकता थी।"

"वाराणसी नहीं। हां यदि कहें तो पटना आपके पास लौट सकती हूं।"

"यह ठीक है। पटना जरूर पहुंचना। हो सके तो हवाई जहाज से आ जाना।"

"हो क्यों नहीं सकेगा। जिसमें भी सीट मिल गई उसी से आ जाऊंगी।'

यद्यपि सतीश समझ नहीं सका कि कौनसा आवश्यक काम है तिलोत्तमा को मुखर्जी से। परन्तु तिलोत्तमा ने सब बात सामान्य रूप में की।

तिलोत्तमा गई तो सतीश ने अपने को कुछ स्वतन्त्र अनुभव किया। दूसरे दिन वह पटेल स्कूल के समारोह में गया। वहां उसका भव्य स्वागत हुआ। उसके अगले दिन उसके कुछ अन्य मित्रों ने उसको 'इम्पीरियल होटल' में चाय पार्टी दी हुई थी। इस चाय पार्टी में कई मित्रों ने पूछा, "कॉमरेड तिलोतमा दिखाई नहीं दे रहीं ?"

"वे किसी आवश्यक काम से कलकत्ता चली गई हैं।"

"इससे तो चाय पार्टी फीकी-फीकी लग रही है।

"कितनी ही स्त्रियां तो पार्टी में हैं। क्या उनसे रंग नहीं चढ़ रहा चाय पार्टी को ?"

"अबे सतीश ! नहीं। उसका रंग अपना ही है।"

"भाई ! वह तो गयी। फिर कभी दिल्ली आऊंगा तो उसको साथ लेकर आऊंगा।"

उसी सायंकाल वह वाराणसी और फिर वहां से पटना पहुंच गया। वहां वह तिलोत्तमा की प्रतीक्षा करने लगा, परन्तु वह नहीं आयी।

तिलोत्तमा के दिल्ली से आने के बारह दिन उपरान्त सतीश कलकत्ता पहुंचा। उसके स्वागत के लिए उसके बहुत से मित्र स्टेशन पर आये हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुष्पमालाओं से उसका स्वागत किया गया और उसकी जय जयकार बुलायी गई। ये मित्र साहित्य क्लब के लोग थे। मणीन्द्र मुखर्जी भी उनमें था। उसने सतीश को गाड़ी से अकेले उतरते देखा तो पूछ लिया, "तिलोत्तमा नहीं आयी ?"

"वह तो पहिले ही चली आई थी। कह रहा था कि तुमसे बहुत आवश्यक कार्य है ?"

"मुझसे ? मुझे वह नहीं मिली।"

सतीश कुछ चिन्ता तो अनुभव करने लगा, परन्तु मित्रों की जय जयकार से वह उसे विस्मरण कर बैठा।

"जब घर पहुंचा तो घरको ताला लगा देख वह स्तब्ध खड़ा रह गया। चन्दन घर पर होना चाहिए था। वह घर को बन्द कर क्यों और कहां चला गया है।

कुछ देर तक वह अपने फ्लैट के बाहर खड़ा प्रतीक्षा करता रहा। उसने ताले को हाथ लगाया तो वह खुल गया। वह साधारण रूप में ही अटका हुआ था। बंद नहीं था। सतीश ने द्वार खोला तो सब कमरे तथा रसोई घर सामान से सर्वथा रिक्त थे। एकदम उसके मन में विचार आया कि तिलोत्तमा उसको लूट कर ले गयी है। उसका सिर चकराने लगा। वहां बैठने को एक कुर्सी भी नहीं थी। इस कारण वह दीवार का आश्रय ले खड़ा-खड़ा ही विचार करने लगा।

अब उसको स्मरण हो आया कि उसनें बैंक के सब खातों में उसके साथ औपरेटर बनने के लिए हठ किया था। इस बात से तो उसकी टांगे शिथिल पड़ गईं। वह वहीं भूमि पर बैठ दीवार से ढासना लगा विचार करने लगा कि क्या वह सब धन भी ले गई होगी ?

वह मन में विचार करने लगा कि कितना रुपया था उसका बैंकों में। इन दिनों उसने बहुत रुपया निकाला था। इस कारण ठीक-ठीक तो गिन नहीं सका। इस पर भी एक लाख रुपए से ऊपर था। कुछ चालू खातों में था और कुछ सेविंग्स खातों में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब से तिलोत्तमा के हस्ताक्षर से बैंकों से रुपया मिलने लगा था, प्रायः वह ही बैंकों में जाया करती थी। रुपया जमा करना और निकालना उसका काम हो गया था।

इस पर उसको स्मरण हो आया कि उसने अपने मकान का स्वामित्व भी तो तिलोत्तमा के नाम लिख रखा है। इस विचार के आते ही वह घबरा कर सीधा खड़ा हो गया। उसने घड़ी में समय देखा। साढ़े बारह बज रहे थे।

उसका अपना सामान अभी बाहर सीढ़ियों के ऊपर ही रखा था। वह आया और उसने सामान उठा कर भीतर कमरे में रखा और द्वार को भींच कर नीचे उतर आया। एक टैक्सी पकड़ अपने बैंक में जा पहुंचा। वहां मैनेजर से बात करने पर पता चला कि उसकी पत्नी तिलोत्तमा सब खातों में प्रायः सब रुपया निकलवा कर ले गई है।

वह अपने मकान पर पहुंचा। वहां के किरायेदारों से पता चला कि एक मारवाड़ी सेठ मकान का कब्जा ले गया है। वह उस मारवाड़ी सेठ के पास पहुंचा। उसने बताया कि तिलोत्तमा देवी मकान ढाई लाख रुपए पर बेच गयी हैं।"

वह समझ नहीं सका था कि क्या करे। उसकी जेब में अभी भी दो सौ रुपए से अधिक था। बैंक के खातों में भी सौ रुपये के लगभग बचा था। परन्तु जिस ढंग से वह रहता था, उससे तो ये दो-तीन सौ रुपया तीन चार दिन तक ही चल सकता था।

वह विक्टोरिया पार्क में जा पहुंचा और वहां एक खाली बैंच में बैठ विचार करने लगा कि क्या करें?

उसके मस्तिष्क में रक्त चाप के बढ़ जाने से भन्नाहट मच रही थी और कोई भी योजना बन नहीं रही थी। कितनी ही देर तक वह वहां बैठा रहा। सूर्यास्त होने जा रहा था। मध्याह्न का भोजन किया नहीं था और वह भूख तथा प्यास अनुभव करने लगा था।

वह पार्क की बैंच से उठा और पैदल ही ग्रीन होटल के रैस्टोरा में जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहुंचा।

वहां एक कोने में विष्णु, अर्चना, चटर्जी दम्पति और रुक्मिणी बैंठी थीं। सतीश ने उनको देखा तो खड़ा हो वहां से लौट जाने का विचार करने लगा। उसे भूख से अधिक प्यास लग रही थी। इस कारण वह रैंस्टोरा से बाहर जा नहीं सका और देखने लगा कि किसी ऐसे स्थान पर बैठ जाएं जहां उसे अर्चना इत्यादि देख न सकें, परन्तु वह चटर्जी की दृष्टि से बच नहीं सका। चटर्जी ने उसे देखा तो हाथ उठा कर उसको अपनी ओर आने का संकेत करने लगा।

: २ :

'ज्योति' का वर्ष समाप्त हुआ था। प्रथम वर्ष का अंन्तिम अंक विशेषांक था। आगामी वर्ष के लिए विज्ञापन आ चुके थे। विज्ञापनों से लगभग दो लाख की प्राप्ति होने वाली थी। इस सफलता पर अर्चना बहुत प्रसन्न थी। उसने दिल्ली से लौटते ही ग्रीन होटल में इस चाय पार्टी का आयोजन किया था।

अर्चना का विचार था कि सतीश कलकत्ता लौट आया है। इस कारण उसने सतीश और तिलोत्तमा को इस पारिवारिक चाय में आमन्त्रित करने का विचार बना लिया।

श्रीमती चटर्जी तो अर्चना की मौसी थी और चटर्जी ज्योति पत्रिका में साझीदार। उसने इसमें रुपया लगाया था और स्वयं पत्रिका में लिखता भी था। वैंसे सतीश को निमन्त्रण तो केवल अर्चना का भाई होने के नाते था और तिलोत्तमा को सही अर्थों में भावज होने के नाते।

अर्चना का विचार था कि तिलोत्तमा एक ही महीने में भाग जाएगी, परन्तु अब एक वर्ष होने जा रहा था और वह सतीश के साथ थी। इससे वह विचार करने लगी थी कि दोनों में समन्वय बन गया है और अब उसका साथ जीवन भर चलेगा। इस कारण वह भी उसे भावजके स्थान पर आसीन करने के लिए मन को तैंयार कर चुकी थी।

चाय पार्टी के दिन वह मध्याह्नोत्तर दो बजे के लगभग सतीश के फ्लैट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पहुंची। नित्य के प्रतिकूल घण्टी बजाने पर चन्दन बाहर नहीं आया। उसने द्वार को हाथ लगाया तो वह खुल गया। केवल भीचा हुआ था। वह भीतर गई तो विस्मय में स्तब्ध खड़ी रह गई। मकान फरनीचर से खाली था, परन्तु बैठक के एक तरफ दीवार के साथ एक अटैची केस और विस्तर रखा था। वह सब कमरों में घूम गई। फिर रसोई घर में भी गयी और घर को बिल्कुल खाली देख वह समझ नहीं सकी। वह विस्तर और सूटकेस वहां लावारिस पड़ा देख कुछ न समझती हुई वहां से लौट आई।

चाय के समय वह सतीश को बुलाने के लिए जाने और वहां कुछ भी न पाने की बात बता रही थी कि एकाएक चटर्जी बोल उठा, "पर सतीश तो खड़ा है?"

सब सतीश की ओर देखने लगे। चटर्जी ने सतीश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हाथ खड़ा कर दिया। साथ ही हाथ से अपनी ओर आने का संकेत करने लगा।

सतीश ने समझा कि वह उनसे भाग नहीं सकता। इस पर भी वह तिलोत्तमा की बात न बताने का निश्चय कर उनकी मेज पर जा पहुंचा।

अर्चना ने कहा, "मैं आज आपको और भाभी को इस चाय पार्टी का निमन्त्रण देने के लिए आपके घर गयी थी।"

सतीश के मुख का रंग फीका पड़ने लगा। जिस बात को वह यत्न से छुपाने का निश्चय कर चुका था, वह प्रकट हो रही प्रतीत हुई थी।

अर्चना और सबसे अधिक चटर्जी ने सतीश की अवस्था को देखा। अर्चना ने आगे कह दिया, "पर भैया! तुम वहां नहीं थे और भाभी कहां है?"

सतीश मौन रहा। वह यदि कुछ कहने का यत्न भी करता तो कह न सकता। उसका गला सर्वथा शुष्क हो रहा था। बैरा लैमन सक्वैश लाया। वह सतीश के लिए नहीं लाया था। परन्तु चटर्जी ने अपना गिलास उठाकर सतीश को देते हुए कहा, "सतीश, पीयो। क्या बात है? बहुत घबराये हुए प्रतीत होते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सतीश ने भराई हुई आवाज़ में कहा, "कुछ नहीं चटर्जी साहब।"

"वाह ! कुछ तो है। तुम्हारा गला सूख रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि कई दिन के भूखे हो।"

इस पर सतीश ने लेमन सक्वैश का गिलास लिया और सुरकी लगा गला साफ करने लगा। धीरे-धीरे वह सारा गिलास पी गया। इस समय बैएरा एक और गिलास सक्वैश ले आया। चटर्जी ने वह भी सतीश को देते हुए कहा, "कब से पानी नहीं पीआ सतीश ! किसी रेगिस्तान से आ रहे हो क्या ?"

सतीश ने वह गिलास भी पी डाला। गला साफ किया और अर्चना से पूछने लगा, "तुम किस समय वहां गयी थी ?"

"दो बज चुके थे।"

"और क्या देखा था वहां ?"

"शून्य, हां, एक बिस्तर और सूटकेस लावारिस वहां रखे थे। द्वार खुले थे। मैं तो भयभीत वहां से चली आयी थी।"

इस समय सतीश के होश ठिकाने आने लगे थे। उसने कह दिया, "हां। मेरी अनुपस्थिति में तिलोत्तमा ने मकान बदल लिया है। मैं वहां गया तो फ्लैट को खाली देख अपना सामान वहां रख उसका नया पता जानने मुखर्जी के घर गया था।"

चटर्जी ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "तो पता मिल गया है रानी जी का?"

"जी।"

"और अपना सामान वहां पहुंचा आये हो ? सतीश ! कलकत्ता में चोरियां अधिक होने लगी है और तुम अपना सूटकेस तथा बिस्तर वहां खुले में छोड़ गये थे।"

"हां। उसे अपने नये मकान में रख आया हूं।"

चटर्जी अभी भी मुस्कराता हुआ उसके मुख को देख रहा था। फिर एकाएक बोल उठा, "यदि तुम अपराधी के कटहरे में खड़े होते और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम पर जिरह कर रहा होता तो सतीश ! तुम्हारा यह सब कथन तुमको अपराधी सिद्ध करने के लिये पर्याप्त होता।

"तुम झूठ बोल रहे हो और कदाचित् उस बदकार औरत की छलना को छुपाने के लिये। बताओ। वह तुम्हारे साथ दिल्ली में नहीं थी क्या ?"

"चटर्जी साहब ! न मैं अपराधी हूं और न झूठ बोल रहा हूं। तिलोत्तमा ने अपना मकान बदल लिया है। मैं पता पा गया हूं कि वह कहां है ?"

"कहां है वह भैया ?" अर्चना ने पूछ लिया।

"जहन्नुम में और मैं अपना सामान भी जहन्नुम में भेजने के लिये अपने फ्लैट में खुला छोड़ आया हूं। बताइये। इसमें क्या झूठ है और मैं किस बात का अपराधी हूं ?"

"तो वह गई ?" विष्णु ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया।

"हां, विष्णु और मुझको खाक शाह कर गयी है। मेरा सब नकद धन मेरा मकान और घर का साजो समान और साथ ही वर्षों के वफादार नौकर चन्दन को भी ले गयी है।"

बातों का सूत्र चटर्जी ने पुनः अपने हाथों में लेते हुए कहा. "फिर भी खुदा का शुक्र है सतीश। तुम घोड़े पर सवार नहीं थे, वरना वह तुम को भी ले गयी होती। तुम तो अभी सही सलामत हो। बताओ। उस पर मुकद्दमा करोगे ?"

"क्या होगा मुकद्दमा करने से ?"

"कम से कम उसकी बकदारी जनता में प्रगट हो जायेगी।"

सतीश भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर बोला "मेरे पास मुकद्दमा लड़ने को भी तो कुछ नहीं रहा।"

"वह मैं मुफ्त में लड़ दूंगा। हाई कोर्ट तक उसको रगड़ डालूंगा, परन्तु तुमको कुछ मिल सकेगा अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। यह तो तुम्हारे पहिले सत्य-सत्य बयान लिखूंगा और पीछे बताऊंगा।"

"अच्छी बात है। मैं आप से कल मिलूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय तक चाय मेज पर आ गयी थी, सतीश चाय बना पीने लगा था। उसके मन में साहस भर आया था कि इस प्रकार एक औरत के पीछे गम में वह जाने की आवश्यकता नहीं। वह समझता था कि उसने अपनी पार्टी का इतना काम किया है कि वह उसकी एहसानमन्द होगी और इस भीर के समय उसकी सहायता करेगी।

इस प्रकार वह विचार कर निश्चिन्त हो चाय पीने लगा। एकाएक उसने पूछ लिया, "पर अर्चना ! यह चाय का आयोजन भी क्या किसी विशेष बात के उपलक्ष में है ?"

"हां भैया ! 'ज्योति' को निकलते हुए एक वर्ष हो चुका है। उसका विशेषांक निकले एक सप्ताह हो चुका है। इस पखवारे की हमने छुट्टी की है। आगामी सोमवार से इसके द्वितीय वर्ष का प्रथम अंक निकलेगा।"

"और कितना घाटा भर चुकी हो ?"

"घाटा ? नहीं ! इसकी तुमको चिन्ता नहीं करनी चाहिये। इसमें लाभ हुआ है। सब प्रकार के खर्चे निकाल कर, रुपये का ब्याज निकालकर भी पन्द्रह हजार के लगभग लाभ हुआ है। इसमें हम तीन पत्तीदार हैं। मैं हूं, विष्णु जी हैं और हैं चटर्जी साहब। पचास हजार रुपया मेरा लगता है। इतना ही चटर्जी साहब का। मैं मैनेजर हूं और विष्णु जी सम्पादक हैं। हम पांच-पांच सौ रुपया वेतन पाते हैं। हम रुपये का सूद लेते हैं। ये सब कुछ खच में जाता है। लाभ इसके अतिरिक्त है।"

"तब तो सत्य ही तुम बधाई की पात्र हो। कितना बड़ा अमला (स्टाफ) रखा हुआ है ?"

"बहुत बड़ा नहीं। इस पर भी ढाई हजार रुपये महीने का है। एक सहस्र तो हम दोनों लेते हैं। छापेखाने का मैंनेजर है। तीस कम्पोजीटर दो, मशीनमैंन है। एक चपरासी और एक प्रूफ रीडर है। तीन सौ रुपये के लगभग ऊपर का खर्चा है। मकान हमने मोल ले लिया है। उसका भाड़ा पूंजी के ब्याज में जाता है।"

"तुम तो बहुत हिसाब-किताब करने लगी हो अर्चना ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो अब । आखिर एक व्यापारी की लड़की जो हूं।"

"और ब्राह्मण की भार्या नहीं ?"

"वह बनने का यत्न कर रही हूं ।"

"मैं तो समझ रहा था कि तुम्हारे घर कोई लड़का हुआ है ?"

"वह भी होगा ही । उस अवसर पर इससे भी बड़ी दावत दूंगी ।"

"कब तक आशा करें ?'

इस समय चटर्जी ने पुनः बात बदल दी, "परन्तु तिलोत्तमा के कोई बच्चा-वच्चा नहीं हुआ ?"

"हम सन्तान निरोध उपाय करते रहे हैं ।"

"तो देश का कल्याण करते रहे हो सतीश ! तुम ठीक अर्थों में समाजवादी हो ।" चटर्जी व्यंग पर व्यंग कस रहा था ।

जब चाय समाप्त हुई तो अर्चना ने कहा, "अब हमारा कार्यालय प्रकाशन विभाग भी खोलने वाला है। उस विभाग का प्रथम प्रकाशन विष्णु जी की 'अन्तरिक्ष की यात्रा' नामक उपन्यास होगा ।"

"ओह ! चांद की यात्रा अथवा शनि की ?"

उत्तर विष्णु ने दिया, "त्रिशंकु की भांति बीचोबीच की !"

"और आप उस यात्रा से लौटे हैं अथवा अभी अन्तरिक्ष में ही टंगे हैं ।"

"लौट आया हूं, परन्तु मेरी पुस्तक का मुख्य पात्र तो अभी अन्तरिक्ष में टंगा है। उसको नीचे धरातल पर लाने वाला अभी कोई मिला नहीं ।"

"यह तो अति दयनीय अवस्था है ।"

"हां, है तो । परन्तु……

इस समय रुक्मिणी ने बातों का सूत्र अपने हाथ में ले कह दिया, "बेटा सतीश ! तुम त्रिशंकु न बने रहना । तुमको नीचे वाले तो मिल गये है ।"

"मिल गये हैं ? कौन मां जी ?"

"चटर्जी साहब । उनकी आराधना करो । वे तुमको पुनः धरातल पर ले आवगे ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सब लोग होटल के बाहर निकल रहे थे तो सतीश के साथ चलते हुए अर्चना ने पूछ लिया, "भैया ! अब किधर जा रहे हो ?"

"जहां सींग समायेंगे।"

"तो मेरे घर ही चले आओ।"

"नहीं अर्चना ! तुम्हारा घर विष्णु का घर है। मैं उसके घर में नहीं रहूंगा। अभी तो अपने फ्लैट में जा रहा हूं। वहां से अपना सामान, यदि अभी तक वह जहन्नुम में नहीं पहुंचा तो, लेकर किसी होटल में ठहरूंगा।"

"और कभी कुछ धन की आवश्यकता पड़े तो कुछ तो मैं दे ही सकूंगी।"

"पर तुम क्यों दोगी ?"

"तुम भाई हो न। बड़े भाई। मैं तुमको किसी से भिक्षा मांगते नहीं देखना चाहती।"

"मैं पार्टी से सहायता लेने की बात विचार कर रहा हूं।"

"यही मैं कह रही हूं कि सेठ धनंजय जी के लड़के को दान-दक्षिणा का धन नहीं लेना चाहिये।"

"पार्टी का धन मैं दान-दक्षिणा का नहीं समझता।"

"इस पर भी है वह यही। पार्टी के पास दो स्रोतों से रुपया आता हैं। कम्यूनिस्ट देशों से कम्यूनिज़म के प्रचार के लिये। यह तो ऐसे ही है जैसे कोई सेठ सनातन धर्म सभा को धर्म प्रचार के लिये दे। यह तो दान-दक्षिणा के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता।"

"पार्टी के धन का दूसरा स्रोत है कर्मचारियों के वेतन से आना-आना दो-दो आना चन्दा। यह तो दान-दक्षिणा से भी बुरा है। यह भीख है।"

"नहीं अर्चना ! मैं पार्टी का कुछ काम तो करता ही हूं। पहिले निःशुल्क करता था। अब वेतन लेकर करूंगा।"

"यह ठीक नहीं होगा।"

"इस विषय में हम दोनों के दृष्टिकोण में भेद है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हां, है तो। स्मरण रखना कि आपकी छोटी बहिन अर्चना कलकत्ता में रहती है और पार्टी से अधिक वेतन देने की सामर्थ्य रखती है।"

"स्मरण रखूंगा।" सतीश पैदल ही अपने फ्लैट की ओर चल पड़ा। विष्णु ने एक सैकण्ड हैण्ड कार खरीद ली थी। वह अर्चना, अपने भाई और मां को उसमें बैठाकर मानकतल्ला को चला गया और चटर्जी अपनी पत्नी के साथ अपने मकान को।

सतीश अपने फ्लैट पर पहुंचा तो उसने देखा कि उसके फ्लैट के सब कमरों के द्वार खुले हैं और उसका सूटकेस तथा बिस्तर वहां नहीं है। वह समझ गया कि कोई उठाकर ले गया है।

अब तो उसकी जेब में रुपये ही उसकी सम्पत्ति थे और केवल वह कपड़े ही उसके पास रह गये थे जो वह पहिने हुए था।

वहां से पार्टी का कार्यालय दो मील के अन्तर पर था। वह थका हुआ तो अनुभव करता था, परन्तु वह धन को समझ-समझकर व्यय करना चाहता था। इस कारण पैदल ही पार्टी के कार्यालय में जा पहुंचा।

जब उसको पता चला कि पार्टी का मन्त्री और कुछ अन्य कार्यकर्ता ऊपर बैठे हैं तो वह प्रसन्नता अनुभव करता हुआ वहां जा पहुंचा। वह समझता था कि दुःख सागर में वह थाह पा गया है। उसके पांव भूमि पर जा लगे।

ज्योंही वह कमरे में प्रविष्ट हुआ उसे देख सब उपस्थित जन हंसने लगे।

सतीश भी हंस पड़ा। पार्टी का मन्त्री निर्मल चन्द्र दास बैठा था और उसके साथ मणीन्द्र मुखर्जी और चार अन्य सदस्य थे। पार्टी कार्यालय के नीचे मुसलमानी तन्दूर था। वहां से उन्होंने नान और मोटा मांस खाने के लिये मंगवाया हुआ था। एक बहुत बड़े तसले में मांस और उसका शोर्बा पड़ा था और समीप ही नानों का ढेर लगा था। प्रत्येक के सामने एक-एक प्लेट। कलुछी से मांस और शोर्बा अपनी प्लेट में डाल और हाथ में नान पकड़े खा रहे थे।

"आओ, आओ सतीश!" मन्त्री ने कह दिया, "वहां से एक प्लेट ले लो और बठ जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश अर्चना की पार्टी से जो कुछ खाकर आया था, तीन साढ़े तीन मील की यात्रा में वह प्रायः हजम हो चुका था। अतः उसने एक भी शब्द कहे बिना सामने रैंक पर रखी हुई प्लेटों में से एक ले ली और कलुछी से दो टुकड़े मांस और कुछ शोरवा डाल अपने सामने रख बैठ गया। बाएं हाथ में एक नान पकड़ दाहिने हाथ से तोड़-तोड़ शोरबे में भिगो कर खाने लगा।

मुखर्जी ने खाते हुए पूछ लिया, "कहां थे सतीश! हम तुम्हारे घर गये थे।"

"कितने बजे ?"

"चार बजे के लगभग। विचार था कि वहां पर चाय पीयेंगे, परन्तु वहां तो कोई नहीं था।"

"और वहां क्या देखा था ?"

"खाली कमरों में एक सूटकेस और बिस्तर।"

"और वह सूटकेस और बिस्तर उठाकर चम्पत हो गये ?"

"चम्पत नहीं सतीश। वहां मकान के नीचे कुछ आवारा लोगों को घूमते देख हमने उनको वहां सुरक्षित नहीं समझा। बस, उसे उठा यहां कार्यालय में जमा करा दिया है।"

"ओह! खैर कुछ तो किया है तुम लोगों ने। उसकी तलाशी नहीं ली क्या ?"

"यह आशा थी कि उनका मालिक सायंकाल तक आ जायेगा और तुम्हें आता देख बरबस हमारी हंसी निकल गयी।"

"हां। हंसने की बात तो थी। सब कुछ लुट जाने के उपरान्त यदि भले मनुष्य की लंगोटी बच जाये तो गनीमत ही समझो।"

इस पर मणीन्द्र ने पूछ लिया, "क्यों क्या हुआ है? लुट कहां गये हो ?"

"तो यह तुम नहीं जानते? दिल्ली से तो वह यह कहकर आयी थी कि तुमसे एक आवश्यक काम है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओह ! अब समझा । पर सतीश ! मैं सच कहता हूं कि मैं उसकी इस योजना से सर्वथा अनभिज्ञ था और हूं । दस दिन हुए वह मेरे पास आयी थी और बोली, "किसी मारवाड़ी सेठ का पता बताओ जो कोई मूल्यवान वस्तु सस्ते दाम में खरीदना चाहता हो । मुझको एक सेठ घनश्याम दास का पता था। मैं उसको उसके पास ले गया । इस पर वह सेठजी से पिछले कमरे में जा पृथक् में कुछ बातचीत करने लगी । दस मिनट के उपरान्त वे बाहर आये । दोनों प्रसन्न थे । आते ही वह कहने लगी, 'मुखर्जी ! बहुत-बहुत धन्यवाद । चलो चलें ।'

"मैंने पूछा भी । 'तो काम हो गया ?' उसने कहा, 'हां ।'

"मैं समझा था कि वह कोई हीरे जवाहरात का भूषण बेचने आयी है। मैंने और पूछा नहीं और उसने कुछ बताया नहीं । न ही उस दिन के उपरांत वह मुझसे मिली है । क्या हुआ है ?"

"हुआ यह है कि मैं अब सर्वथा कंगाल हो गया हूं। मेरी जेब में दो सौ रुपया है और यदि तुम लोग कृपा कर मेरा सूटकेस इत्यादि न लौटा दो तो यह पहने हुए कपड़े ही रह गये हैं ।"

इस पर मन्त्री ने कह दिया, "तब तो तुमको कुछ भी लौटाना नहीं चाहिये, जिससे तुम और हम समान हो जाएं । मेरे पास भी इन पहने हुए कपड़ों के अतिरिक्त कुछ नहीं है । ये भी पार्टी फंड से बनवाये हैं । रहे दो सौ रुपये, वह तुम पार्टी फंड में जमा करा दो जिससे पूर्ण साम्यवाद हो जाये ।"

"और खाना पीना ?"

"जहां से हम खाते-पीते हैं वहां से तुमको भी मिल सकेगा ।"

"मैं स्वीकार करता हूं ।"

"तो निकालो रुपये ?"

सतीश चुपचाप प्लेट से हड्डी उठा उससे लगे मांस को दांतों से नोच रहा था । उसे चुप देख मुखर्जी ने कह दिया, "सतीश दा ! आज तुम असल के साम्यवादी हुए हो ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश ने मांस चबाते हुए कहा, "वह तिलोत्तमा ने बना दिया है।"

"जो कुछ शेष पूंजीपना रह गया था वह हम निकाल देंगे।"

सतीश रात वहां ही सोया। अगले दिन उसके जेब से रुपये ले लिये गये और उसको अपने धोबी से आये कुर्ते धोतियों में से पहिनने को दे दिये। सतीश 'होल टाइमर' के रूप में पार्टी का काम करने लगा।

सतीश को कम्यूनिस्ट देशों से निमन्त्रण आया था और पार्टी ने उसके विदेश भ्रमण का प्रबन्ध कर दिया। यात्रा के लिए उपयोगी सामान और वस्त्र तथा आवश्यक धन मिल गया और वह एक दिन हवाई जहाज में सवार हो बम्बई, वहां से करांची तथा मास्को जा पहुंचा।

: ४ :

विष्णु 'ज्योति' के कार्यालय में बैठा अपनी पत्रिका की सामग्री तैयार कर रहा था कि चपरासी ने आकर कहा, "पंडित जी! एक लड़की मिलने आई है।"

"कौन है?"

"नाम निर्मला कुमारी बताया है।"

"ओह! भीतर ले आओ!" अर्चना ने एक संसद सदस्य की पत्नी और लड़की निर्मल की कथा उसको बता रखी थी। विष्णु समझ गया कि वही निर्मला हो सकती है।

एक पन्द्रह वर्ष की कुमारी, गौर वर्णीय सुन्दर शरीर और ऊंचे कद वाली सामने आई तो विष्णु ने सामने रखी कहानी जिसे वह ठीक कर रहा था, बन्द कर लड़की को देख कह दिया, "बैठिए! किनसे मिलना चाहती हैं?"

"'ज्योति' के सम्पादक विष्णु शर्माजी से।"

"मैं उपस्थित हूं। बताइए क्या काम है?"

"मैं व्यवस्थापिका अर्चना देवी जी से रेल में कलकत्ता को आती हुई मिली थी। उनसे बहुत बातें हुई थीं। इससे आप से भेंट करने की इच्छा उग्र हो उठी थी। मुझे कलकत्ता आए आज़ पद्रह दिन हो चुके हैं। इतने दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तक इस ओर आने का अवसर नहीं मिला। कल मम्मी के साथ में लौट रही हूं। इस कारण आज यत्न कर यहां पहुंच पाई हूं।"

"बहुत धन्यवाद है निर्मला जी! अर्चना ने आपके विषय में बताया था। उन्होंने यह भी कहा था कि आप की एक अध्यापिका है जो मुझे अविवाहित और स्त्रियों के विषय में अज्ञ मानती है।"

"स्त्रियों के विषय में तो नहीं; हां, उनका कहना था कि पति-पत्नी के सम्बन्धों के विषय में आप कुछ नहीं जानते। इस कारण आप भी अभी अविवाहित प्रतीत होते हैं। परन्तु अर्चना जी ने एक और ही बात बताई थी। मैं उस दिन से उनके कथन पर विचार कर रही हूं। यद्यपि उनको मैं कुछ उत्तर नहीं दे सकी, और मुझको उनकी बातें समझ नहीं आयीं।"

"ठीक है। निर्मला जी! वह आनी भी नहीं चाहिए। अभी आप की आयु बहुत कम प्रतीत होती है। इस प्रकार की बातें आप समझ सकती ही नहीं, कौन सी श्रेणी में पढ़ती हैं आप?"

"इस वर्ष हायर सैकेण्डरी की परीक्षा दूंगी। आशा है फर्स्ट डिवीजन में पास करूंगी।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है। देखिए, कम से कम आप एम० ए० तक पढ़ेंगी। अर्थात् पांच वर्ष की पढ़ाई के उपरान्त आपका विवाह होगा। तब यदि सम्भव हुआ तो मिल लीजिएगा और मैं आपको अपने ज्ञान की बात बता सकूंगा।"

"यह तो बहुत दूर की बात है। मैं तो उससे पहिले आप से मिलना चाहती हूं। मैंने कलकत्ता पहुंचते ही अपनी उसी अध्यापिका को लिखा था कि स्कूल की ओर से आपको दिल्ली बुलाकर आपका अभिनदन्न करना चाहिए।

"वे इस विषय में स्कूल की कमेटी से बातचीत कर आपको निमन्त्रण दे सकती हैं। तब आपसे परिचय बढ़ाने का अवसर मिलेगा। यों भी मेरे मामा कलकत्ता में बहुत बड़े ठेकेदार हैं। मैं परीक्षा देने के उपरान्त यहां आऊंगी। कदाचित् कलकत्ता यूनिवर्सिटी में ही प्रवेश पा सकूं। तब तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आपसे प्रायः मिलने का अवसर मिलेगा।"

"परन्तु निर्मला जी ! बिना किसी काम के आपका यहां आना मुझे बहुत अखरेगा। मैं एक बहुत ही व्यस्त व्यक्ति हूं। मेरे पास केवल औपचारिक बातचीत के लिए समय ही नहीं है।"

"पर मैं तो काम से ही आया करूंगी।"

"अच्छा। तो आज मैं आपका क्या काम कर सकता हूं ?"

"यदि आप आधा घण्टा समय दें तो मैं आपको कहीं चल कर चाय पीने का निमन्त्रण देती हूं।"

"वहां आपकी माता जी भी होंगीं ?"

"ओह नो ! चलिए। चाय का समय तो है ही।"

विष्णु शर्मा विचार करने लगा था कि इस लड़की के आने का प्रयोजन पता करना चाहिए और फिर इसको सख्त शब्दों में कुछ शिक्षा भी दे देनी चाहिए, जिससे वह पुनः मिलने के लिए आने का साहस न कर सके इतना विचार उसने कहा, " मैं एक अति आवश्यक कार्य में लगा था। इस पर भी आप के निमन्त्रण का अनादर करना नहीं चाहता, परन्तु आधा घण्टा का ही अवकाश होगा। यदि आप ने अधिक समय लिया तो यह एक सार्वजनिक चोरी हो जाएगी। इससे पत्रिका पढ़ने वाले सब पाठकों का समय ही आप खराब करेंगी।"

कुमारी निर्मला 'फिअट' कार को स्वयं चलाती हुई वहां आई थी। जब वह गाड़ी के स्टीयरिंग पर बैठी तो विष्णुजी ने कह दिया, "यह गाड़ी आप चलाएगीं ?"

"हां। आप चिन्ता न करें। मैं अच्छी ड्राइवर हूं।"

"यह तो तो आप जानें, परन्तु क्या आपके पास लाइसेंस है ?"

"हां जी। यह रखा है।" उसने मोटर में बने डिब्बे में से अपना लाइसेंस निकाल कर दिखाया। विष्णु को संदेह हो गया था कि लाइसेंस किसी और के नाम का है और यह लड़की उसे उठा लायी है। इस कारण उसने लाइसेंस पकड़ देखना आरम्भ कर दिया। लाइसेंस कुमारी निर्मला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के नाम ही था। परन्तु उसमें आयु बीस वर्ष लिखी थी।

"तो आप निरंजन मिश्र जी की लड़की है?"

"जी। आप उनको जानते हैं?"

"हां। उनसे परिचय है। परन्तु यहां निर्मला कुमारी की आयु बीस वर्ष की लिखी है और आप पन्द्रह-सोलह से अधिक प्रतीत नहीं होतीं।"

"इस पर भी यह लाइसेंस मेरा है। मेरी परीक्षा लेकर ही मुझको दिया गया हैं।"

"परन्तु यह आयु—?"

"थोड़ा झूठ बोलना पड़ा था। वैसे लड़कियों की आयु में भ्रम तो हो ही जाता है।"

"परन्तु निर्मला जी! झूठ बोलना तो पाप है। मैं तो आपके गाड़ी चलाते समय सवारी नहीं करूंगा। इससे आपके झूठ में मैं भी भागीदार हो जाऊंगा।"

"कौन देखता है? मैं विश्वास दिलाती हूं कि किसी प्रकार का 'ऐक्सिडेण्ट' नहीं होगा।"

"पर मैं 'ऐक्सिडेण्ट' की तो बात ही नहीं कर रहा। न ही किसी से पकड़े जाने की बात कर रहा हूं। झूठ तो झूठ है। पकड़ा जाए अथवा न पकड़ा जाए। पाप तो हो ही गया है।

"देखिए। मैं इस गाड़ी में नहीं चढ़ूंगा। या तो आप ठहरिए। मेरी अपनी गाड़ी आ ले। अन्यथा चाय कार्यालय में ही मंगवा लेता हूं।"

"आपकी गाड़ी आने में कितनी देर लगेगी?"

"कह नहीं सकता। अर्चना जी उसमें किसी काम से गई हुई है।"

"वे गाड़ी स्वयं चलाती है?"

"उनके पास लाइसेंस तो है। लाइसेंस तो मेरे पास भी है, परन्तु हम साधारण रूप में स्वयं नहीं चलाते। एक ड्राइवर रखा हुआ है।"

"आप तो मुझे निराश कर रहे है।"

"बस। इस छोटी-सी बात से निराश हो रही है। आइए, हम चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहीं प[illegible] आप ले सकती है। साथ ही हमारा ड्राइवर आ जाए तो मैं उसको आपकी गाड़ी में आपके घर छोड़ आने के लिए भेज दूंगा और मेरी बात मानिए, तो यह अधर्माचरण द्वारा अर्थात् झूठ बोल कर प्राप्त लाइसेंस का प्रयोग तब तक न करें जब तक आप इतनी आयु की नहीं हो जाती।

निर्मला विचार कर रही थी कि यह विचित्र मिट्टी का घड़ा युवक है एक लड़की से एकान्त में बैठ चाय पीने का आनन्द एक साधारण-सी बात पर न्यौछावर कर रहा है, परन्तु विष्णु के मुख की दृढ़ मुद्रा देख वह गाड़ी से निकलकर आई और विष्णु के साथ कार्यालय में लौट आई।

विष्णु ने चपरासी को तीन व्यक्तियों के लिए चाय केक-पेस्टरी और कुछ नमकीन लाने के लिए कह दिया। एक दस रुपए का नोट उसको देते हुए कहा, "रसीद लेते आना।"

चपरासी गया तो निर्मला ने पूछ लिया, "तीसरा कौन व्यक्ति है?"

"अर्चना जी के आने की आशा कर रहा हूं।"

"ओह! पर मैं तो उनसे पृथक ही बात करना चहती थी।"

"परन्तु वह कौन-सी बात है जिस पर आप उनसे छिपा कर कुछ कहना अथवा सुनना चाहती है?"

"मैं आपसे अपने विषय में कुछ पृथक में कहने आई थी।"

"तो अभी कह दीजिए। सम्भव है कि आपकी बात अर्चना जी के आने से पहले ही समाप्त हो जाए।"

इस पर निर्मला कुछ विचार कर बोली, "बात बहुत लम्बी तो नहीं है। इस पर भी आपको कुछ चित्त लगाकर सुननी होगी।"

"उस दिन अर्चना जी ने कहा था कि विवाहित जीवन में पति-पत्नी को संसर्ग के अतिरिक्त बहुत से काम करने होते हैं। मैं इन्हीं कामों के विषय में आपसे पूछना चाहती हूं।"

"उन्होंने पांच यज्ञों के विषय में बताया होगा। देखो निर्मला पति-पत्नी संसर्ग चौबीस घण्टा रहता है। दोनों मिलकर ही जीवन के इन पांचों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञों का प्रबन्ध करते हैं। दिन छोटा होता है और काम बहुत अधिक। बहुत कठिनाई से वे दोनों सतत यत्न करते हुए ही अपना कर्तव्य पालन कर पाते हैं।"

"भला सिनेमा देखने जाना भी इन यज्ञों में आता है ?"

"हां। जैसे स्नान करना, भोजन करना और छः घंटा सोना भी इन पांच यज्ञों में मानें जाते हैं। इसी प्रकार सिनेमा जाना अथवा भ्रमण के लिये जाना भी इन यज्ञों का अंग ही है।"

"तब तो ये यज्ञ बहुत मज़ेदार है ?"

"हां ! परन्तु चौबीस घंटे न भोजन किया जा सकता है, न संसार भर के बजाजे की दुकान उठा कर पहिनी जा सकती है। अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार ही प्रत्येक व्यक्ति भोजन करता है और भ्रमण करता है। अपने शरीर के उपयोगी और नाप के कपड़े पहिनता है इसी प्रकार मनोरंजन भी अपनी बुद्धि तथा मन के विकास के अनुसार ही किया जा सकता है।"

"यह कैसे पता चले कि अमुक पिक्चर किसी के मानसिक विकास के अनुसार है अथवा नहीं ?"

"मन और बुद्धि पृथक्-पृथक् वस्तुएं हैं। इनके काम भी पृथक-पृथक हैं। बुद्धि और मन का विकास, वातावरण, शिक्षा. आयु और पूर्व जन्म के कर्मों के अधीन होता है। इसका अनुमान लगाने के लिये व्यक्तियों को कर्म और इच्छाओं का ज्ञान प्राप्त करना होता है। इसके लिये विद्यार्थी जीवन में तो अध्यापक उपयुक्त व्यक्ति हैं और प्रौढ़ों के लिये सरकार का सैंसर विभाग।"

"तो इस विषय में आप सरकारी नियन्त्रण की आवश्यकता अनुभव करते हैं।"

"नियन्त्रण की आवश्यकता इस प्रकार है कि सार्वजनिक प्रदर्शन के लिये पिक्चर की स्वीकृति देने के लिये योग्य विद्वानों की एक सभा होनी चाहिये। उदाहरण के रूप में कोई भी पिक्चर जो धर्म विपरीत हो, जिसके देखने से धर्म के उल्लंघन की प्रेरणा मिले सरकार उसका प्रदर्शन रोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सकता है। धर्म पालन कराना सरकार का उत्तरदायित्व है।"

"यह तो हमारी सरकार करती ही है।"

"मैं इस नियन्त्रण के विरुद्ध नहीं। मेरा विचार है कि सरकारी नियन्त्रण के होने पर भी बहुत से चित्र बहुत भद्दे और अश्लील पास हो जाते हैं।"

"अशलील क्या होते हैं?"

"जिन बातों को मनुष्य अपनी प्रकृति से विवश हो करता है और जिसको समाज खुले आम में करने की स्वीकृति नहीं देता वे अशलील कहाते हैं।"

"समाज ने इन विषयों के नियम ऐसे नहीं बना रखे क्या जो अयुक्ति सँगत और स्वास्थ्य के नियमों के विपरीत है।"

"हां। कहीं-कहीं समाज ने इस विषय में सीमोल्लंघन कर रखा है। कई स्थानों पर तो नियम इतने कठोर हैं कि व्यक्ति को पनपने का अवसर ही नहीं रह जाता और कई स्थलों पर ये इतने ढीले हो गये हैं कि समाज में अधर्माचरण में प्रोत्साहन देते हैं।

"आप यह बताइये कि पर्दा, जैसा मुसलमानों में था और अभी भी कहीं कहीं है, क्या स्त्री जाति के साथ अन्याय सूचक नहीं?"

"मैं पर्दे की रस्म को समाज के नियमों की कठोरता का सूचक मानता हूं, परन्तु सर्वथा नग्न स्नानागारों तथा तालावों में लड़के-लड़कियों का विचरना समाज के नियमों का सीमा से अधिक ढीलापन हैं।"

"क्यों इसमें क्या खरावी है?"

"जब वे वासना को प्रोत्साहन देते हैं तो इन्द्रिय निग्रह धर्म के उल्लंघन को प्रोत्साहन मिलता है।"

"यह तो......।" इस समय चपरासी ट्रे में चाय लगवा कर ले आया। वार्त्तालाप बन्द हो गया।

चपरासी मेज पर ट्रे रख ही रहा था कि बाहर मोटर आ कर खड़ी होने का शब्द सुनायी दिया। विष्णु ने कह दिया, "अर्चना जी आ गयीं हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैंने तो अभी असल बातें पूछी ही नहीं। यह तो उसकी भूमिका मात्र ही थी।"

"परन्तु इन बातों का समाधान तो अर्चना जी मुझ से भी अच्छी प्रकार कर सकेंगी।"

"मैं तो आपसे समाधान चाहती थी।"

"क्यों ? इसमें क्या अन्तर पड़ जाता है ?"

"अंतर तो है। आप पुरुष हैं। वह एक स्त्री हैं। जो समाधान आप कर सकेंगे वह एक स्त्री नहीं कर सकती।"

"मैं इसमें अन्तर नहीं समझा......।" इस समय अर्चना कार्यालय में प्रवेश करती करती रूक गयी। वह द्वार पर खड़ी खड़ी ही हंसने लगी। निर्मला का मुख द्वार की ओर था। निर्मला भी अर्चना को देख हंस पड़ी। दोनों ने एक दूसरे को पहिचान लिया था।

अर्चना भीतर चली आयी और मेज के समीप खड़ी हो पूछने लगी, "तो निर्मला तुम आ गयी हो ?"

"जी।" निर्मला ने एक शब्द में ही उत्तर दिया।

"बैठो अर्चना ! तुम्हारे लिये भी चाय आ गयी है।"

"मैं विचार कर रही हूं कि कहीं मैं आपकी प्राइवेट बात में विघ्न तो नहीं बन रही।"

"मैं......।" विष्णु कहने ही लगा था कि वह उसे विघ्न नहीं मानता, परन्तु निर्मला ने बात बीच में ही रोक कर कहा, "हां। मैं एक गम्भीर विषय पर बात कर रही थी।"

"तो वह मेरे चाय पीने के उपरान्त कर सकती हो।"

विष्णु हंस कर कहने लगा, "इसके गम्भीर विषय पर तो हम नित्य ही चर्चा किया करते हैं। यह पूछ रही थी कि लड़के-लड़कियां नग्न एक ही स्थान पर स्नान करें तो क्या खराबी हो सकती है ?"

इस पर निर्मला ने कुछ घबरा कर कह दिया, "परन्तु अर्चना ज़ी, यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो मेरी असल बात की भूमिका मात्र है।

"पर हम लेखक लोग" अर्चना ने बात स्पष्ट कर दी "तो पुस्तक की भूमिका पढ़ कर पुस्तक में लिखे विषय को समझ जाते हैं।"

"तो आप मेरी असल बात समझ गयी हैं क्या ?"

अर्चना तीनों के प्याले में चाय बना रही थी। निर्मला चित्त स्थिर करने के लिये एक केक का टुकड़ा उठा कर खाने लगी। विष्णु मुस्कुराता हुआ चुप था। वह अर्चना को ही निर्मला के प्रश्न का उत्तर देने का अवसर देना चाहता था। परन्तु अर्चना उत्तर देने से अधिक आवश्यक चाय बना कर पीना समझती थी।

अर्चना को मौन देख निर्मला बोल उठी, "तो आप नहीं समझी न ?"

अर्चना अपना प्याला उठा मुख से लगाने लगी थी कि उसकी हंसी निकल गयी और उसने प्याला पुनः सासर में रख दिया। हंसते हुए वह कहने लगी, "मैं निर्मला की मानस पुस्तक का पूर्ण आशय जान गयी हूं, परन्तु मैं अपने मुख से बताना नहीं चाहती थी। यदि निर्मला चाहती है कि बता दूं तो मैं उसको पृथक में बता सकती हूं। एक बात तो यहीं बता सकती हूं कि मैं अब तेईस वर्ष की हो रही हूं और इस अवस्था तक पहुंचने से पहिले ग्यारह, तेरह, पन्द्रह, सत्रह, इत्यादि आयु के वर्ष पार कर चुकी हूं। जो कुछ निर्मला आज मन में विचार करती है, मैं आज से आठ वर्ष पूर्व विचार किया करती थी। यह शरीर भी निर्मला के शरीर की भांति पुष्टता को प्राप्त हुआ है।"

निर्मला अर्चना के कथन का अर्थ समझने में लीन हो गयी और फिर चुपचाप अपना प्याला उठा कर चाय की चुसकियां लेने लगी।

अर्चना ने दो घूंट चाय पीकर विष्णु जी से कहा, "मैं जिस कार्य के लिये गयी थी, उसमें सफल हो आयी हूं।"

"तो कोटा मिल गया है ?"

"पूरा का पूरा। हमको सीधा 'नारवे' से मंगवाना होगा। इसके लिये धन की स्वीकृति मिल जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अर्चना जी। यह तो आपने चमत्कार पूर्ण कार्य किया है।"

"इसमें कोई चमत्कार नहीं। यह समाजवाद के कारण ही है।"

"भला इसमें समाजवाद की क्या बात है ?" निर्मला ने पूछ लिया "आप को न्यूज़ पेपर का कोटा मिलना चाहिये था, सो मिल गया है। आप स्वयं मंगवायेंगीं और उसके लिये 'विदेशी मुद्रा' मिल जायेगी।"

"हां, बात तो सरल ही है, परन्तु सब के लिये नहीं। बात यह है कि ऑफिसर हमारी पत्रिका का पाठक है और जब उसने मेरा प्रार्थना पत्र पढ़ा तो विस्मय में मेरा मुख देखने लगा। देख कर बोला, 'तो यह कागज़ 'ज्योति' के लिये चाहिये ?"

"मैंने कहा, 'जी हां।' इस पर वह बोला, 'आपकी मांग क्या है ?"

"मैंने प्रार्थना पत्र की ओर संकेत किया तो वह उठा और बोला, 'आप बैठिये। मैं देखता हूं कि आपके लिये क्या कर सकता हूं।' यह कह वह सचिव के कार्यालय में चला गया। दस मिनट के उपरान्त वह निकला और बोला आपकी प्रार्थना स्वीकार हो गयी है।"

"मैंने कहा, 'यह आशातीत है।' इस पर वह बोला, 'यह साधारण सी बात है। आपकी पत्रिका सचिव महोदय की पत्नी पढ़ती है और सचिव महोदय हस्ताक्षर करते हुए कहने लगे, 'मैं नहीं चाहता कि मेरी पत्नी की प्रिय पत्रिका 'नेपा' के गन्दे कागज़ों पर छपे।' बस उन्होंने हस्ताक्षर किये और मुहर लगायी और मैं आ गया।"

"वह महाशय बोले, 'अर्चना जी ! आप कल आकर परमिट ले जाइयेगा। वह तैयार रहेगी। देखिये, कल ग्यारह बजे। देरी न करियेगा। कहीं मार्ग में ही कोई चील झपट्टा मार कर न ले जाये।"

"मैंने पूछ लिया, 'तो ऐसा भी हो सकता है यहां ?"

'वह बोला, 'इस समाजवादी सरकार में क्या कुछ नहीं हो सकता ?"

"मैं मुस्कुराई, धन्यवाद किया और चली आयी।"

"तुम्हें देरी तो बहुत लग गयी" विष्णु ने कहा।

"हां। मार्ग में कम्यूनिस्टों का जलूस निकल रहा है। आज पहली मई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। एक घंटा भर मार्ग रुका रहा है।"

चाय समाप्त हुई तो अर्चना उठते हुए निर्मला से कहने लगी, "लो मैं चली। अब तुम अपनी मानस पुस्तक के गम्भीर विषय पर इनसे बात कर सकती हो।"

"जी नहीं। पहले तो मैं आपको गलत सिद्ध करना चाहती थी। मैं जानती हूं कि आप मेरी बात समझी ही नहीं।"

"तो मेरे कमरे में आ जाओ मैं तुमको समझा देती हूं।"

अर्चना निर्मला को लेकर अपने कमरे में चली गई और विष्णु पुनः कहानी ठीक करने लगा। आधा घण्टा के उपरान्त निर्मला और अर्चना दोनों व्यवस्थापक के कमरे से निकलीं और विष्णु के पास आकर खड़ी हो गईं। जब विष्णु ने उनकी ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा तो निर्मला ने कहा, "अर्चना जी मेरी बात जान गई है। वे आपकी विवाहिता है। यह मुझको आज ही पता चला है। इस पर भी उन्होंने उदारता से मेरे आपसे मिलने पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया। इसके लिए मैं इनकी आभारी हूं।

"विष्णु जी ! मैं अब चलती हूं। फिर मिलूंगी। कदाचित् आपको दिल्ली आना पड़े। शेष बातें वहीं होगीं।"

इतना कह निर्मला बाहर चली आई। उसके जाने पर पति-पत्नी दोनों हंसने लगे।

रात भोजन के समय अर्चना ने निर्मला की बात बता दी, "उसने कहा वह समझती थी कि आप अभी अविवाहित हैं और वह आपकी पत्नी बनने की अभिलाषा से आई थी। जब उसको मैंने बताया कि आपका विवाह हो चुका है, तो वह आपकी पत्नी से मिलने की उत्सुकता प्रकट करने लगी। मैंने उसको आपकी पत्नी से भेंट कराई तो वह बहुत घबराई। इस पर वह कहने लगी कि वह मुझसे अधिक सुन्दर और स्वस्थ है। अब वह अपने सौन्दर्य और स्वास्थ्य का प्रयोग आपको अपने जाल में फंसाने के लिए करने वाली है। मैंने उसको अपनी तरफ से आप पर अपने काम बाण चलाने की स्वीकृति दे दी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम मेरी परीक्षा लेना चाहती हो ?" विष्णु का प्रश्न था।

"इसमें मुझको रुचि नहीं। मेरी रुचि तो अपनी परीक्षा में है। मैं देखना चाहती हूं कि मैं ईर्षा और द्वेष से ऊपर उठ सकती हूं या नहीं।"

"यह तो तुम मुझसे अन्याय करोगी अर्चना ! मनुष्य ने अपने संरक्षण के लिए विवाह पद्धति का आविष्कार किया है और तुम उसके शुभ प्रभाव को निःशेष करना चाहती हो ?"

"मैं समझती हूं कि हमको ऐसी परीक्षाओं में बैठने में संकोच नहीं करना चाहिए। इसी में जीवन है।"

निर्मला का प्रयास विष्णु जी को स्कूल की ओर से दिल्ली बुलाने का सफल नहीं हो सका और निर्मला की विष्णु से आगामी भेंट उसकी परीक्षा के उपरान्त ही जब वह अपने मामा के पास रहने आई थी, हो सकी। वह कलकत्ता अपने मामा जी के पास आई तो एक दिन विष्णु जी से मिलने कार्यालय को चल पड़ी।

: ६ :

सतीश योरुप के भ्रमण से लौट आया था। कलकत्ता में पहुंचते ही उसको नई दिल्ली से एक सभा में आमान्त्रित किया गया। नई दिल्ली में उसका अभिनन्दन किया और उसको देश के प्रधान मन्त्री से भेंट का अवसर मिला।

सतीश अपने योरुप भ्रमण के अनुभवों को बताने के लिए दिल्ली बुलाया गया था। वहां उसने एक साहित्यकारों की सभा में इस भ्रमण से मन में उत्पन्न संशयों का वर्णन किया था। ये संशय उसको हंगरी और पोलेण्ड के लेखकों से वार्तालाप पर उत्पन्न हुए थे। उसने दिल्ली कीं सभा में बताया, "साहित्यकार जहां स्वयं विचारक होता है वहां दूसरे विचारकों के विचारों को सुनने के लिए उत्सुक होता है। इस कारण उसका अपनी विचारित बात सुनाने और दूसरों से विचारित बात सुनने का पूर्ण अवसर होना चाहिए और कम्यूनिस्ट देशों के लेखक इस विषय में भूखे-प्यासे ही प्रतीत होते हैं। वे बेचारे मुझे ऐसे व्याकुल प्रतीत हुए, जैसे जल के बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मछली होती है अथवा मनुष्य आक्सीजन के बिना दम घुटता अनुभव करता है। विचार स्वतन्त्रता ही लेखकों का प्राण है।"

सतीश के इस वक्तव्य को कई समाचार पत्रों ने खूब उछाला। कइयों ने इस वक्तव्य की निन्दा की और कइयों ने इसको सतीश के साहस का प्रतीक समझा। इस वक्तव्य की गूंज कलकत्ता में भी पहुंची और सतीश को यहां अपने वक्तव्य की प्रतिक्रिया दृष्टिगोचर हुई।

दक्षिण कलकत्ता साहित्य क्लब में सतीश को उसको आशा के विपरीत एक पीछे की बैंच पर ही स्थान मिला और उस दिन की सभा का अध्यक्ष तिलोत्तमा को बनाया गया।

सतीश को तिलोत्तमा के दर्शन एक वर्ष के उपरान्त हुए थे। वह उससे पिछली बार दिल्ली में तब मिला था जब वह पद्य भूषण का पदक लेने वहां गया हुआ था और वह उसे वहां ही छोड़ चली आई थी।

सतीश को किसी ने आगे आकर बैठने को नहीं कहा। और इस व्यवहार की पराकाष्ठा तब हुई, जब उसके नाम से छपी जवाहरलाल नेहरू पर कविता तिलोत्तमा ने अपने अध्यक्षीय आसन पर से ही सुनाई। कविता का अभिवादन किया गया तालियां बजा कर। सतीश मौन हो सुन रहा था, परन्तु उसके सहन करने की सीमा पहुंच गई, जब मुखर्जी ने तिलोत्तमा को इस शानदार कविता पर बधाई दी। सतीश को विदित था कि मुखर्जी इस कविता को उससे लिखी गई जानता था। इस समय श्रोतागणों में से किसी ने कह दिया, "यह अध्यक्ष महोदया की अपनी कृति नहीं।"

मुखर्जी ने प्रश्न भरी दृष्टि से तिलोत्तमा की ओर देखा तो उसने खड़े होकर श्रोताओं के कथन का उत्तर दे दिया, "मैं दावा करती हूं कि यह मेरी कृति है।"

"परन्तु यह पिछले वर्ष किसी अन्य के नाम से छपी थी।"

"तो उसने इसकी चोरी का होगी।"

इस पर 'शेम ! शेम !! की आवाज़ें आने लगीं।

"किस पत्रिका में छपी थी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुखर्जी ने पूछ लिया।

"दिल्ली की 'जनता' नाम की पत्रिका में सतीशजी के नाम से। वे यहां उपस्थित हैं। मैं चाहती हूं कि वे इस पर प्रकाश डालें।"

सतीश समझ रहा था कि मणीन्द्र ने यह शरारत की है। वह वहां से उठकर चला जाना चाहता था। वह उठा तो मंच पर से ही मणीन्द्र ने कह दिया, "सतीशजी स्वयं इसका उत्तर देने के लिए खड़े हुए हैं। वे अपने स्थान पर से ही इस पर प्रकाश डाल सकते हैं।"

विवश सतीश को कुछ कहना पड़ा। सतीश ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, "जब से मुझको पद्म-भूषण का पदक मिला है, बहुत-से लोग अपनी थर्ड रेट रचनाओं को मेरे नाम से छपवा रहे हैं। मैं नहीं जानता कि यह कब, कहां और किसने छपवाई थी।"

इस पर तो सब हंसने लगे। तिलोत्तमा का मुख क्रोध से लाल हो गया। उस समय तो वह चुप रही, परन्तु सभा के अन्त में उसने पुनः कविता के विषय में यह वक्तव्य दे दिया। उसने कहा, "यह कविता 'विश्व-विभूति नेहरू' मैंने आज से कई वर्ष पूर्व लिखी थी। मैं कुछ समय के लिए श्री सतीश जी के घर में मेहमान बनकर ठहरी थी तब यह कविता मेरी फाइल में से चोरी हो गई थी। यह बात तो श्री सतीशजी को पद्म-भूषण का पदक मिलने से पहले की है। मुझे तो कविता कण्ठस्थ थी। मैंने फिर लिख ली है। अब यह काम उस व्यक्ति का है, जिसके नाम से यह छपी है, कि वह इसको बोल कर सुनाये।"

इस पर तो पहले से भी जोर की तालियां बजने लगीं। सतीश बिना एक भी शब्द कहे भवन से निकल गया।

वह जब से पार्टी का 'होल टाइमर' बना था, पार्टी के कार्यालय में ही रहता था। एक दिन वह कार्यालय में पहुंचा तो मन्त्री ने उसको कह दिया, "सतीशजी! कलकत्ता में अपने रहने का स्थान आपको कहीं अन्यत्र बनाना होगा।"

"बहुत महगा स्थान मिलेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हमने तुम्हारे लिए एक मकान टालीगंज में स्ट्रीट नम्बर पांच में निश्चय किया है।"

"वह तो बहुत गन्दा स्थान हैं।"

"हम तो मज़दूर लोग हैं। उनमें ही हमको रहना भला लगना चाहिए। वहां रहते हुए ही हम उनको साफ सुथरा रहने का ढंग सिखा सकते हैं।"

सतीश चुप रहा। अगले दिन सतीश को उसकी कोठरी मज़दूरों के मुहल्ले में दिला दी गई और सतीश को उनमें संगठन बनाने का आदेश मिल गया। सतीश इतने दिन तक नेतागिरी करता रहा था। अब उसको कार्यक्षेत्र में भेज दिया गया।

सतीश को समझ आने लगा था कि उसको दिल्ली में अपने मन की बात कहने के कारण ही एक नेता के पद से हटाकर एक कार्यकर्ता बना दिया गया है। इस पर भी वह कार्य में लग गया।

उसने अपने आस-पास के रहने वालों से मेल-मुलाकात करनी आरम्भ कर दी। उसको पता चला कि उस मुहल्ले में कुछ तो जेबकतरे हैं, जो दिनभर कलकत्ता की सड़कों, ट्रामों, बसों इत्यादि पर घूमते थे और रात को मुहल्ले में पहुंच कर जूआ खेला करते थे। कुछ और थे जो कलकत्ता में औरतों की दलाली करते थे। जब से कलकत्ता में वेश्यावृत्ति कानून से वर्जित हुई थी, ऐसा काम करने वालों की मांग बढ़ गई थी। ये लोग रात को काम करते थे और दिन को अपनी कोठरियों में सोया करते थे।

कुछ ही दिनों में सतीश को अपने मुहल्ले में रहने वालों के ये कार्य विदित हो गए।

उसे मुहल्ले में आए अभी दो सप्ताह ही हुए थे कि उसकी अपनी बगल वाली कोठरी में एक प्रफुल्लचन्द्र रस्तोगी से भेंट हो गई।

वह रातभर उस गन्दी बस्ती में सोने से उत्पन्न मन की ग्लानि को दूर करने के लिए बहुत प्रातः उठ, स्नानादि से अवकाश पा घूमने निकल गया था। लौटते हुए वह एक चाय के स्टाल से चाय का एक प्याला पीकर अपनी कोठरी को लौटा था कि उसको साथ वाली कोठरी में रहनेवाला हाथ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोटा ले शौचालय को जाता मिला। सतीश ने देखा कि कोई भला पुरुष प्रतीत होता है। उसने उसको नमस्कार कर दी।

"तो आप आए हैं इस कोठरी में?" पड़ोसी ने पूछ लिया।

"जी।"

"क्या नाम है?"

"सतीश कुमार।"

"कहां के रहने वाले हो?"

"राजस्थान के।"

"और यहां क्या करते हो?"

"एक दुकान पर वहीखाता लिखता हूं।"

"क्या वेतन पाते हो?"

अब सतीश से नहीं रहा गया। उसने कहा, "आप तो शौच जा रहे हैं न। हो आइए। फिर आराम से बैठकर बात करेंगे।"

पड़ोसी गया तो सतीश अब अपने विषय में कहानी बनाने लगा। वह कुछ आराम कर पार्टी के कार्यालय में चला गया। वहां अपने पिछले दिन के कार्य का विवरण बताकर भोजन कर मध्याह्नोत्तर अपनी कोठरी में लौटा तो पड़ोसी को अपनी कोठरी के बाहर खड़े देख वह भी खड़ा हो गया। इस बार सतीश ने पुन: बात आरम्भ की। उसने पूछा, "आपका शुभ नाम क्या है?"

"मैं प्रफुल्लचन्द्र रस्तोगी हूं। लखनऊ का रहने वाला हूं।"

"यहां क्या काम करते हो?"

"एक बहुत ही आवश्यक जीवनोपयोगी काम में लगा हुआ हूं, परन्तु भीतर बैठकर ही बात करना चाहता हूं। यहां खड़े-खड़े नहीं।"

सतीश विचार कर रहा था कि उसे अपनी कोठरी में निमन्त्रण दे अथवा स्वयं उसकी कोठरी में जाकर परिचय बढ़ाए।

रस्तोगी उसकी झिझक का अर्थ समझ बोला, "आइए। इस गरीब-खाने में पधारिए। इसमें कुछ लाभ ही होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सतीश उसकी कोठरी में चला गया। एक लकड़ी के तख्तपोश पर चटाई बिछी थी और एक मैला-सा तकिया एक ओर तथा एक अति मैली चादर दूसरी ओर रखी थी।"

प्रफुल्लचन्द्र खुला पायजामा और कुर्ता पहिने था। वह चालीस-बयालीस वर्ष की आयु का व्यक्ति प्रतीत होता था। सतीश तो धोती कुर्ता, पांव में चप्पल और सिर से नंगा था। सतीश के कपड़े धुले, अति साफ और लोहा किये हुए थे।

प्रफुल्ल ने मैली चादर से चटाई झाड़ दी और सतीश को बैठ जाने को कह स्वयं तकिये की ओर बैठ गया।

"हां, तो बताओ बाबू। क्या वेतन पाते हो?"

"सवा सौ रुपया महीना।"

"बस? उसमें तो इतने अच्छे कपड़े नहीं पहने जा सकते।"

"देखो रस्तोगी साहब! रहने का ढंग है। तुम कितना पैदा कर लेते हो?"

"कुछ न पूछो। चार सौ से पांच सौ महीना तो होता ही है। कभी इससे भी अधिक बन जाता है।"

"बहुत खूब। परन्तु मैं समझता हूं कि तुमको रहना नहीं आता। इतने में कुछ तो अधिक सफाई से रहा जा सकता है।"

"आजकल महंगाई बहुत है। फिर बहुत कुछ ब्लैक मार्केट में चले जाने से दाम और भी अधिक देने पड़ते हैं।"

सतीश ने कोठरी की गन्दी हालत देखी तो पूछ लिया, "क्या वस्तु ब्लैक मार्केटमें खरीदते हो?"

"मैं व्यापारी हूं एक स्थान से माल खरीदकर दूसरे स्थान पर ले जाकर बेचता हूं। पहले माल मंडियों में मिलता था और उनके मूल्य निश्चित से ही रहते थे। अब मंडियां बन्द कर दी गई हैं और हमको माल गली-गली और मुहल्लों-मुहल्लों में घूम-घूमकर ढूंढना पड़ता है। वहां दाम अधिक देना पड़ता है। मैं इसको ब्लैक मार्केट कहता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाई, क्या माल घूम-घूमकर एकत्रित करते हो और फिर उसको किनके पास बेचते हो ?"

"माल तो वह है जिसकी नगरों में बहुत आवश्यकता रहती है। मेरा मतलब है 'स्त्री'। नगरों में लोग अपनी बीवियों को साथ ला नहीं सकते। इस कारण उनको स्त्रियों की आवश्यकता रहती है। मैं बिकाऊ माल की खोज करता हूं और उसको खरीदारों के पास ले जाता हूं।"

"और तुम इसको व्यापार कहते हो तथा मुहल्ले और गलियों को ब्लैक मार्केट कहते हो !"

"बिल्कुल, पहले इसकी मंडी थी। सरकार ने उसे बंद कर दिया है। इसलिए ब्लैक मार्किट में माल खरीदना पड़ता है। इसमें खर्च अधिक बैठता है। माल खरीदने में पकड़े जाने का खतरा भी है। एक बात और हो गई है। वह यह कि अब मेरे इस काम में बहुत-से सफेदपोश भी आ गए हैं।"

"भला वह क्यों ?" सतीश को कुछ नई बातें पता चलने लगी थीं।

"कुछ बड़े-बड़े अफसरों का अपने बड़े-बड़े मतलब पूरे करने के लिए यह माल सप्लाई करना पड़ता है।"

"तब तो तुम्हारा काम और भी वृद्धि पा गया होगा।"

"हां, परन्तु वहां मैं झगड़ा नहीं कर सकता। जो मिल जाये वही स्वीकार करना पड़ता है। इससे आय अनिश्चित हो गई है। साथ ही माल मेरा मतलब है, उन अफसरों के काम में आने वाली स्त्रियां स्वयं भावताव करने लगी हैं।"

सतीश इस रस्तोगी का पेशा और युक्ति सुन अपनी मास्को की यात्रा में एक घटना को स्मरण कर गम्भीर विचार में लीन हो गया।

: ७ :

घटना इस प्रकार हुई थी कि मास्को से लेनिनग्राड जाते समय वह रेलगाड़ी के एक कूपे में सवार कर दिया गया था। उसकी गाइड एक युवती उस कूपे की दूसरी सीट पर सवार थी। रात को सोने के समय युवती ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सतीश के बिस्तर में ही सोने का प्रस्ताव कर दिया। सतीश को इस पर विस्मय हुआ था। परन्तु वह उस युवती की भूरी चमकदार आंखों को देख चुप रहा। बिस्तर में लेटे-लेटे सतीश ने इस घनिष्टता से लाभ उठाकर उस युवती का पूर्व इतिहास जानने के यत्न किया। इस पर वह युवती रो पड़ी। उसने जो कथा बताई उससे प्रफुल्लचन्द्र की कथा का मिलान कर सतीश स्तब्ध रह गया।

स्त्री अन्ना ज़िवटस्की सेना के एक कर्नल की विवाहिता थी। उसको सुन्दर देख मेज़र जनरल ने उसे एक काम के लिए मास्को से भेजा। मेज़र जनरल यह समझता था कि इतनी सुन्दर स्त्री यदि उसका पटीशन लेकर जायेगी तो वह अवश्य स्वीकार हो जायेगा। अन्ना मास्को को सैर के लिए उत्सुक थी। इस कारण वह जाने के लिए तैयार हो गई।

मास्को में कमाण्डर इन चीफ से उसने भेंट का और अपने मेज़र जनरल का पटीशन उपस्थित कर दिया। कमाण्डर इन चीफ ने अन्ना से मेजर के सम्बन्ध के विषय में पूछा तो उसने वास्तविक स्थिति का वर्णन कर दिया। कमाण्डर इन चीफ ने पूछा, "तो तुम मास्को की सैर करने आई हो?"

"जी।"

"तो मास्को पसन्द आया है?"

"बहुत।"

"तो यहां रहना पसन्द करोगी?"

"सोवियत सरकार की सेवा करके मुझको बहुत प्रसन्नता होगी।"

"तब ठीक है। सायंकाल मेरे होटल में मुझसे मिलने आना। मैं तुमको सोवियत सरकार की सेवा का एक अति उत्तम कार्य करने को दूंगा।"

अन्ना सायंकाल कमाण्डर इन चीफ से मिलने गई तो उसकी मिस्ट्रेस बन गई। इसके उपरांत उसे अपने पति के पास जाने नहीं दिया गया उसको अथवा किसी को भी विदित नहीं कि वह कहां है। कमांडर इन चीफ की रखेल रहते हुए उसे विदेशी पर्यटकों के 'गाइड' का काम दिया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और उसका आदेश था कि उनको प्रसन्न रखे। प्राय: पर्यटक जब भी उस अकेले मिलते थे, उससे संगत की अभिलाषा करते थे।

अन्ना ने आगे यह भी बताया, "आप सबसे विलक्षण रहे। तीन दिन से मैं आपके साथ हूं। मास्को के होटलों में कई अवसरों पर मैं आपके कमरे में अकेली रही हूं, परन्तु आपने मुझसे संगत की इच्छा नहीं की।"

"मुझे आपसे पूर्ण वार्तालाप और आपके व्यवहार की पूर्ण रिपोर्ट नित्य भेजनी होती है। पिछले तीन दिन तक आपके व्यवहार की बात मैंने लिखी तो आज रेल में यह कुपे का प्रबन्ध आपके लिए किया गया है। आपके विषय में यह सूचना है कि आप स्त्रियों के प्रिय हैं। इस कारण मुझे आपकी परीक्षा लेने का आदेश है।

उस समय सतीश ने इसको एक साधारण जासूसी घटना मात्र समझा था. परन्तु प्रफुल्लचन्द्र के कथन पर बड़े-बड़े अफसरों को बड़े-बड़े कार्य कराने के लिए यह माल सप्लाई करना पड़ता है, उस रात की घटना और अन्ना के कथन में गम्भीर अर्थ समझ आने लगे थे। उसे गम्भीर विचार में लीन देख प्रफुल्लचन्द्र ने पूछ लिया, "क्यों साहब ! विश्वास नहीं आ रहा न ? परीक्षा कर देख लो ?"

"कैसे परीक्षा लूं !" सतीश ने सचेत हो पूछ लिया।

"कोई बढ़िया माल हो तो बताइये। मैं उसके द्वारा आपको कोई बढ़िया काम करा दूंगा।"

सतीश को इस पर रोमांच हो आया। उसके पूर्ण शरीर पर कंप-कंपी हो उठी। प्रफुल्लचन्द्र ने देखा तो हंस पड़ा। आप मुझको 'गपोड़-शंख' समझते हैं ?"

"नहीं भाई रस्तोगी ! मैं कुछ और ही विचार कर रहा था।"

"क्या विचार कर रहे थे ?"

"यही कि सरकार ने वेश्यावृति तो बन्द की है और तुम सरकार के इस काम से भी लाभ उठा रहे हो।"

"यह तो है ही साहब ! भला प्रतिबन्धों और नियन्त्रणों से भी सुधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं ? समाजवाद का भला हो। सरकारी नियन्त्रण बढ़ते जायें और मेरे जैसे लोगों का भला होता रहे।"

सतीश को यह बात अति घृणित प्रतीत हुई थी। अभी तक वह समझता था कि स्त्री पुरुष का सम्बन्ध एक शारीरिक आवश्यकता का विषय है। इस आवश्यकता का मूल्य प्राप्त करने वाले को अपने सामने बैठा देख वह उसे एक छूत की बीमारी समझ उठ कर अपनी कोठरी में चला गया।

परन्तु इस घटना के कुछ ही दिन पीछे वह मणीन्द्र मुखर्जी तथा तिलोत्तमा से मिल गया। वह पार्टी कार्यालय से अपने रहने के स्थान को जा रहा था। ट्राम में सवार हुआ तो मुखर्जी और तिलोत्तमा भी उसी ट्राम में कहीं जा रहे थे। सतीश उनके पीछे एक सीट खाली देख जा बैठा। मुखर्जी ने सतीश का अभिवादन मुस्कराकर किया तो सतीश ने तिलोत्तमा को व्यंगात्मक भाव में हाथ जोड़ कह दिया, "कवयित्री देवी को सतीश का नमस्कार हो।"

तिलोत्तमा ने भी व्यंग कस दिया, "भगवती सरस्वती के भक्त को आशीर्वाद मिले।"

"धन्यवाद, इस वरदान के लिए।"

इस पर तीनों हंस पड़े। हंसते हुए तिलोत्तमा ने पूछ लिया, "किधर जा रहे हैं ? सतीश जी।"

"किसी ढाबे पर पेट भरने के लिये।"

"ओह ! अब ढाबों पर जाने तक की नौबत आ गई है ?"

"यह सब देवी की कृपा का फल है।"

तिलोत्तमा ने कुछ विचार किया तो कह दिया, "अच्छा आज मध्याह्न के भोजन का निमन्त्रण मैं अपने होटल में देती हूं।"

"देवी की इस कृपा के लिये मैं उसका आभारी रहूंगा।"

"तो हमारे साथ ही आ जाइये। मैं आज ग्रीन होटल नम्बर वन में ठहरी हुई हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश विचार कर रहा था कि क्या यह केवल उसके चोरी किये धन से ही सुख भोग रही है अथवा किसी अन्य पर भी हाथ साफ किया जा रहा है।

मणीन्द्र ने कह दिया, "मुझको भी तिलोत्तमा जी निमन्त्रण दे कर ले जा रही है।"

"ओह! पर आज क्या बात है जो देवी इतनी दयालु हो रही हैं?"

"आज मेरा जन्म-दिवस है।" तिलोत्तमा का उत्तर था।

"तब तो बधाई भोजनोपरान्त ही दूंगा।"

इस पर तीनों फिर हंसने लगे। मणीन्द्र ने कहा, "हां बधाई भोजन के अनुरूप ही होगी।"

तीनों उतर गये और ग्रीन होटल में जा पहुंचे। तिलोत्तमा ने तीन के लिये लंच का आर्डर दे दिया। सतीश ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ कर कह दिया "मास्को से लौटे मुझको तीन मास होने जा रहा है और तब से आज यह पहला दिन है कि किसी सभ्य स्थान पर बैठ कर भोजन करने का अवसर मिल रहा है।"

"तिलोत्तमा ने पूछ लिया, "आज कल कहां रहते हो?"

"एक जेबकतरों और औरतों के दलालों के मुहल्ले में।"

"वहां क्या करने के लिये रह रहे हैं?"

"पार्टी का काम करने के लिये।"

"भला उन चोरों और ठगों में पार्टी का क्या काम होगा?"

"मुझे उनको संगठित करने की आज्ञा है। उनसे काम तो पार्टी लेगी।"

भोजन कहां होता है?"

"टी स्टालों पर। सस्ते ढाबों पर अथवा सड़कों पर चलते-फिरते जेब में रखे चनों से।"

मणीन्द्र हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "भाई! त्याग और तपस्या से ही 'डिक्टेटरशिप ऑफ दि प्रोलिटेरियेट' स्थापित हो सकेगी।"

"हां भाई! त्याग-तपस्या तो ग्रीन होटलके 'एयर कन्डीशण्ड' कमरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रह कर ही हो सकती है। हम लोग गन्दी नाली के किनारे रहते हुए, और ढाबों की टूटी हुई तथा गन्दी प्लेटों में खाकर भला क्या तपस्या कर सकते थे।"

इस पर तिलोत्तमा और मुखर्जी हंसने लगे। तिलोत्तमा ने केवल इतना कहा, "समय-समय की बात है सतीश जी !"

बैरा ने सूप की प्लेटें लाकर रख दीं। तीनों सूप लेने लगे थे। सूप लेते हुए मुखर्जी ने कहा, "सतीश तुम कभी कभी भूल जाते हो कि तुम एक महान् संगठन का एक नगण्य अंग हो। वह संगठन तुमको आसमान र चढ़ा सकता है और रसातल में भी पहुंचा सकता है।"

"सत्य ?" सतीश ने विस्मय करते हम पूछ लिया, "मुझे ज्ञात नहीं कि मैंने कभी ऐसी भूल की हो ?'

"यदि मित्रता की सौगन्ध खाओ तो स्मरण करा सकता हूं। किसी को बताना नहीं होगा ?"

"परन्तु एक तो सुनने वाला यहां पहिले ही बैठा है।"

"वह इस बात को जानता है और तुम्हारे पतन पर पश्चात्ताप कर रहा है।"

"यह तिलोत्तमा जी की बात कर रहे हो मुखर्जी ?"

"हां। ऐसा प्रतीत होता है कि इसके अन्तरात्मा में और, कुछ कुछ, मेरे में भी बूर्जुआ मनोवृत्ति छुपी पड़ी है। इससे हम तुमसे सहानुभूति रखते हैं।"

"देखो सतीश ! तुमने दिल्ली में पौलेण्ड तथा हंगरी को विचार-स्वतन्त्रता विहीन होने से व्याकुल कहा था। यह पार्टी के साथ विद्रोह था और पार्टी ने तुमको टालीगंज की गन्दी नाली में जा पटका है।"

"और तिलोत्तमा के किस गुण के कारण उसको इस स्वर्ग भूमि पर ला बैठाया है ?"

"यह तो तिलोत्तमा जी ही बतायेंगीं। कुछ तो गुण होगा ही इनमें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश तिलोत्तमा का मुख देखने लगा। तिलोत्तमा ने बात बदल दी। उसने कहा, "यहां इस होटल में सोवियत दल का मास्को से एक प्राइवेट आयोग आया हुआ है। मैं दल की ओर से उनकी सेवा में हूं।"

"ओह !" सतीश को अन्ना ज़िब्रटस्की के काम की बात याद आ गई। वह मन में विचार कर रहा था कि क्या अन्ना का बदल ही भारत में तिलोत्तमा तो नहीं? उसके मन में ईर्षा उत्पन्न होने लगी थी। उसने पूछ लिया, "तो क्या वह मिशन भी इसी होटल में उपस्थित है ?"

"हां। इस समय वे अपने प्राइवेट काम से गये हुए हैं। सायंकाल तक लौटने वाले हैं।"

"कितने लोग हैं ?"

"तीन पुरुष और दो स्त्रियां हैं।"

"और उनमें तीसरी स्त्री तुम सम्मिलित कर दी गई हो ?"

"हां, परन्तु वे मुझे अपने प्राइवेट काम में सम्मिलित नहीं करते।"

"ओह ! तो तुम सायंकाल तक अवकाश में हो ?"

"हां, उस अवकाश में मैं 'रिलेक्स' कर रही हूं।"

सतीश काम और 'रिलेक्स' का अर्थ समझता था। इस पर वह अपने मुहल्ले के प्रफुल्लचन्द्र की बातें सुनाने लगा। मणीन्द्र और तिलोत्तमा प्रफुल्लचन्द्र की बातें सुन हंसते रहे।

: ८ :

भोजन समाप्त होते ही मणीन्द्र ने तिलोत्तमा से कह दिया, "मुझे छुट्टी दे तिलोत्तमा ! मुझे एक आवश्यक काम से जाना है।"

"मैंने तो आपको दिन भर साथ रहने का निमन्त्रण दिया था।"

"ठीक है। अब सतीश जी मिल गये हैं और मुझे एक आवश्यक कार्य स्मरण हो आया है।"

पूर्व इसके कि तिलोत्तमा कुछ कहे, उसने सतीश से हाथ मिलाया और चल दिया। सतीश को हाथ मिलाते हुए कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि वह उसके हाथ को उचित से अधिक दबा रहा है। कदाचित् वह उसको तिलो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
त्तमा से सुलह कर लेने के लिये प्रेरणा दे रहा है।

तिलोत्तमा ने बैरा के बिल पर हस्ताक्षर कर दिये और सतीश से कहा, "यदि अवकाश हो तो मेरे कमरे में आइये।"

"एक शर्त पर। वह यह कि तुम मुझसे सत्यवादन करोगी। मैं तुम्हारे व्यवहार के विषय में जानना चाहता हूं।"

"किस व्यवहार के विषय में ?" पूछते हुए तिलोत्तमा उठी और कमरे की ओर चल पड़ी।

सतीश ने तिलोत्तमा के साथ चलते-चलते कहा, "जो तुमने मेरे साथ किया है।"

"कब से कब तक के व्यवहार की बात जानना चाहते हैं ?"

"उस दिन से जब मैंने आपको पटना में दवाई बेचने वाले का दुकान पर देखा था।"

"तो सब सत्य बता दूं ?"

"हां मैं यह ही चाहता हूं। यदि अब भी तुम मेरे साथ सत्य का व्यवहार करोगी तो मुझे अपना सब कुछ खो देने का शोक नहीं होगा।"

"तो आप का कुछ खो गया है ?"

इस समय वे कमरे के बाहर पहुंच गये। तिलोत्तमा अपने पर्स में से चाबी निकाल कर दरवाजा खोलने लगी। उसने दरवाजा खोला और द्वार में खड़े होकर कहा, "आइये, पिछली बात भूल कर कुछ घंटे वर्तमान में व्यतीत करें।"

सतीश ने द्वार के बाहर खड़े खड़े ही कहा, "मेरा वर्तमान अति लज्जास्पद एवं अवांछनीय है। इस पर भी तुम यदि अपने व्यवहार में कुछ युक्ति युक्त कारण बता सको तो मेरे चित्त को शान्ति मिलेगी।"

"अब आओ न।" तिलोत्तमा ने कहा, "मणीन्द्र जी से मेरी एक बात हुई है और हमने अपने मन के रहस्यों को अपने में ही सीमित रखने का वचन दिया है। यदि आप भी हममें सम्मलित होना चाहें तो हम आपको भी अपने रहस्यों में सम्मलित कर सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो उस रहस्य के जानने से सुख मिलेगा ?"

"यह सुख दुःख की बात तो मैं नहीं बता सकती। यह अपने-अपने मन की भावना पर निर्भर है। कोई किसी बात में सुख समझता है। दूसरा उसी में दुःख अनुभव करता है। हां, एक बात है। एक मार्ग पर चलते हुए किसी साथी के मिल जाने से आराम मिलता है। परस्पर आश्रय हो जाता है।"

सतीश कमरे में दाखिल हुआ तो तिलोत्तमा ने द्वार भीतर से बन्द कर लिया। दोनों एक कोच पर बैठ गये।

"अच्छी बात है। यदि मैं आपके मार्ग का राही हुआ तो मैं भी आश्रय पा सुखी हो सकूंगा। अब बताओ कि तुमने मुझसे किस कारण सम्बन्ध बनाया था और फिर किस कारण वह सम्बन्ध तोड़ दिया है।"

"एक ही वाक्य में इसका उत्तर यह है कि मैं एक अति प्रबल सार्व-भौमिक पार्टी की सदस्या हूं। उस दल में एक सदस्य एक महान् यन्त्र का एक नगण्य अंग होता है। उसको मशीन के साथ-साथ चलना पड़ता है। मेरे आपसे पूर्ण व्यवहार की, जो आज तक रहा है यही विवेचना है।"

"तो तुम इस समय जो कह तथा कर रही हो वह भी उस मशीन के एक पुर्जे के रूप में ही समझूं।"

"हां, मुझको यह भी आदेश है कि आपसे पुनः मित्रवत् सम्बन्ध स्थापित करूं; परन्तु मैं यह सब कुछ बता कर सीमोल्लंघन कर रही हूं। इसमें मेरे मन की भावना ही है। मैं मशीन का अंग मात्र बना रहने से ऊब गई हूं।"

"कब से ?"

"जब से मेरी मित्रता एक रूसी स्त्री से हुई है। उसका नाम है अन्ना ज़िबटस्की। उसने रूस में एक सतीश नाम के हिन्दुस्तानी का परिचय दिया था और उसकी प्रशंसा भी की है।"

सतीश अन्ना का नाम सुन अवाक् रह गया। बहुत देर तक दोनों एक दूसरे के मनोभावों को जानने की इच्छा से परस्पर मुख देखते रहे। आखिर सतीश ने मुख खोला, "वह तुमको कहां मिली है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस [illegible] है। उसका कहना है कि उसको निरन्तर अपने यौन आकर्षण को पार्टी के हितों के लिए प्रयोग करने के लिए कहा जा रहा है और मैं भी अपने को ऐसा ही अनुभव करती हूं इस कारण जब हम दोनों ने परस्पर अपने मन की बात बतायी तो हम मित्र हो गये।

"मणीन्द्र से मेरी बात पहिले ही हो चुकी थी। आज आपको भी अपने पथ का राही समझ अपना साथी बना रही हूं।"

"पर साथी तो हम पहिले भी थे।"

"वह भ्रम था। उस समय हम कॉमरेड नहीं थे। एक मशीन के पुर्जे होने से साथ-साथ चलने के लिये विवश थे। वास्तविक साथीपन तो स्वेच्छा से साथ-साथ चलने में है।"

सतीश के मन में अन्ना से मिलने की इच्छा उत्पन्न हो गयी। उसने कहा, "मैं अन्ना से मिलने की इच्छा कर रहा हूं।"

"मिल सकेंगे। मैं उससे पता करूंगी। आप कहां रहते हैं। कदाचित वह आपसे वहां मिलना चाहेगी।"

"परन्तु वह स्थान तो बहुत गन्दा है।"

"बता दूंगी। परन्तु यहां तो उसके साथी सदा उसको घेरे रहते हैं।"

सतीश ने अपनी कोठरी का पता बता दिया। वह मन में प्रफुल्लचन्द्र की बात को दुहरा रहा था, 'बड़े-बड़े अफसरों को अपने बड़े-बड़े मतलब पूरे करने के लिये यह माल सप्लाई करना पड़ता है।' इस बात के मन में आ जाने से वह विचार कर रहा था कि क्या यह सर्वत्र होता है? क्या यह सदा होता रहा है? उसको कम्यूनिस्ट पार्टी में सम्मलित होते समय बताया गया था कि वेश्यावृत्ति पूंजीवाद की देन है। आज वह इसका व्यापक प्रयोग अपने दल में भी देख रहा था। वह विचार करता था कि यदि यह है ता फिर दोनों वादों में अन्तर ही क्या है?

तिलोत्तमा ने इस पर एक बात और बता दी। उसने कहा, "जब मैं पटना में नौकरी करती थी तब मालिक ने मेरा वह प्रयोग कभी नहीं किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जो यहां पार्टी के नेता ने किया है इसके विपरीत वह मुझको सदा कहता रहता था, सरल सादा जीवन रखने से मनुष्य सदा सुखी रहता है।

"सतीश जी ! एक बात और बताती हूं। वह मालिक विचार से आर्य समाजी था। उसको उसके किसी मित्र ने बताया कि मैं कम्यूनिस्ट हूं तो वह कहने लगा कि विचार-स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है। मेरी नौकरी मेरे विचारों से सम्बन्ध नहीं रखती।

"परन्तु यहां तो यह है कि आपने रूस के कुछ लेखकों की विचार नियन्त्रण में व्याकुलता बतायी औरआप को पदच्युत कर दिया गया और जानते हैं कि मणीन्द्र क्या कहता था ? वह कह रहा था कि हाई कमाण्ड का यह निर्णय है कि यदि इस दंड से आपके होश ठिकाने न हुए तो आपके जीवन का पत्ता कट जायेगा।

"ये सब बातें हैं जिन्होंने मुझको अपने जीवन पर विचार करने पर विवश किया है। जब अन्ना ने आपकी प्रशंसा की तो मुझको आपके साथ किये व्यवहार पर पश्चात्ताप लगने लगा।"

उस दिन सतीश ग्रीन होटल के रूम नम्बर १० से निकला तो वह सर्वथा बदल चुका था। उसको अपने विषय में विचार करने पर विवश होना पड़ा था। आज पुनः वह विक्टोरिया मेमोरियल के बाहर पार्क में एक मेज़ पर बैठ अपनी अवस्था पर विचार करने लगा। वह अनुभव करता था कि तिलोत्तमा से लूटे जाने के उपरान्त वह वहीं बैठा पार्टी की ओर मुख किये भागा जा रहा था। तिलोत्तमा के व्यवहार ने उसको पार्टी का आश्रय लेने के लिये विवश किया था। आज तिलोत्तमा ने अपने व्यवहार में कारण बता कर उसको पार्टी से विमुख कर दिया है। वह अब पार्टी की ओर पीठ किये हुए उससे दूर भागता हुआ अनुभव करने लगा था।

विचार्य विषय था कि वह किधर जाये। उसे समझ नहीं आ रहा था। जब अन्धेरा होने लगा तो वह अपने निवास स्थान की ओर चल पड़ा। अपने उन दिनों के कार्यक्रम के अनुसार उसने अपनी गली के बाहर एक ढाबे में से भोजन किया और अपनी कोठरी में सोने के लिये जा पहुंचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वहां प्रफुल्लचन्द्र अपनी और उसकी कोठरी के बाहर टहलता हुआ मिला। प्रफुल्लचन्द्र ने सतीश को आया देख प्रसन्नता से आगे बढ़कर कहा, "ओह सतीश भैया ! कहां थे तुम ?"

"क्यों ? क्या बात है ?"

"तुम तो छुपे रुस्तम निकले। पहिले क्यों नहीं बताया कि तुम भी वही व्यवसाय करते हो जो मैं करता हूं।"

"वही व्यवसाय ? कौन व्यवसाय ?"

"अरे भाई। जो मैं करता हूं। देखो यह क्या है ?"

प्रफुल्लचन्द्र ने एक कार्ड उसको देते हुए कहा, "यह तुमसे मिलने आई थी। वह कहती थी कि इस पर लिखा पढ़ लेना।"

कोठरी के बाहर अन्धेरा था। इस कारण सतीश ने अपनी कोठरी का द्वार खोला। लैम्प जलाया और कार्ड को देखने लगा।

एक खाली विज़िटिंग कार्ड पर हाथ से लिखा था, "ग्रीन होटल, रात के खाने के समय-ए।

'ए' से सतीश समझा कि यह अन्ना होगी। प्रफुल्लचन्द्र उसकी कोठरी की सफाई तथा सफेद धुला बिस्तर और एक बढ़िया सूटकेस देख विस्मय कर रहा था। सतीश ने उसके मुख पर देखा तो उसने कह दिया, "मैं विस्मय किया करता था कि तुम कैसे इस शान-शौकत से रह सकते हो। सो आज समझ गया। बहुत बढ़िया माल था।"

"क्या माल था ?"

"वही जो आयी थीं। दो थीं। एक हिन्दुस्तानी थी और दूसरी कोई मेम थी। दोनों एक-एक सौ रुपये के मूल्य की थीं।"

"बकवास बन्द करो, रस्तोगी ! वे बिकाऊ माल नहीं थीं।

"तो हमसे भी लुकाव-छिपाव ? भाई वे बिकाऊ थीं। मुझको यह काम करते हुए बीस वर्ष हो गये हैं और फिर ग्रीन होटल……।"

"अच्छा अब तुम जाओ।" सतीश ने कलाई पर बंधी घड़ी में समय देखा और पुनः ग्रीन होटल को जाने के लिये तैयार हो गया। उसने प्रफुल्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को लगभग ढकेलते हुए बाहर निकाला। कोठरी को ताला लगाया और ट्राम में सवार हो ग्रीन होटल को चल पड़ा।

: ९ :

ग्रीन होटल में तिलोत्तमा नहीं थी। न ही सोवियत आयोग के दूसरे सदस्य थे। अन्ना अकेली एक कोने में बैठी सतीश की प्रतीक्षा कर रही थी।

सतीश उसके सामने जाकर खड़ा हुआ तो वह लपककर उठी और उससे हाथ मिला उसको अपने सामने बैठा बैरा से खाना लाने के लिये कहने लगी। सतीश ने कह दिया, 'मैं भोजन कर चुका हूं।"

"अब तो दोनों के लिये आयेगा ही। आप जितना आवश्यक होगा लीजियेगा। मैं जब से कलकत्ता में आयी हूं, आपके विषय में पूछ रही थी। कोई बताता ही नहीं था। आज कॉमरेड टी० ने बताया कि आपका पता चल गया है और वह मुझको लेकर आपके रहने के स्थान पर ले गयीं। परन्तु सतीश डीयर ! वह तो बहुत ही गन्दा स्थान है।"

"हां। पार्टी ने मुझको एक उच्छृंखलता का दण्ड दिया है जो मुझको इस होटल समान सुन्दर स्थान से निकाल उस गन्दी नाली में फेंक रखा है।"

"क्या उच्छृंखलता की थी ?"

"एक सार्वजनिक सभा में कह दिया था कि रूस में भी साहित्यकार विचार स्वतन्त्रता पाने के लिये व्याकुल हैं।"

"ओह ! तो फिर ?"

"मैं आज अपने को पार्टी से विमुख हो उससे दूर भागता हुआ अनुभव कर रहा हूं।"

"सत्य ?"

"बिलकुल।"

बैरा ने दोनों के सामने खाना लगा दिया। सतीश खाने का बहाना मात्र करता हुआ बैठा रहा। अन्ना कुछ देर तक सूप पीती हुई विचार करती रही। एकाएक उसने सतीश से पूछ लिया, "आप विवाहित हैं। जब रूस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये थे। विवाहित तो नहीं थे ?"

"अब भी नहीं हूं।"

"तो मुझसे विवाह कर लो ?"

"यह कैसे हो सकेगा ?"

"मैं एक दो दिन में अपने साथियों को छोड़ भाग रही हूं।"

"कहां और कैसे ?"

"मैं कल अमेरिकन कौंसुलेट के कार्यालय में गयी थी और अपने भागने के विषय में बातचीत कर आयी हूं। उनका कहना है कि मैं स्वतन्त्रता से उनके कार्यालय में अपने को उपस्थित कर अपने बयान दे दूं और उसमें कारण बता दूं तो वे मेरी रक्षा का प्रबन्ध कर देंगे।"

"मैं उनको कल प्रातः अपने बयान देने का वचन दे आयी हूं। जब कॉमरेड टी० ने आपका पता बताया तो मेरे मन में एक योजना आयी थी। कहें तो बताऊं ?"

"हां, बताइये।"

"यही कि मैं आपसे प्रेम करती हूं, परन्तु रूसी सरकार मेरा आपसे विवाह स्वीकार नहीं करती। इसको मैं अपनी निजी स्वतन्त्रता पर आघात मानती हूं। इस कारण मैं रूस की नागरिकता छोड़ अमेरिका की नागरिकता चाहती हूं। मैं कम्यूनिस्ट व्यापक नियन्त्रण से ऊब गयी हूं।"

"इसमें मुझको क्या करना होगा ?"

"कुछ नहीं। मेरे साथ अमेरिका चलना होगा।"

"वहां तो वे तुम्हारी और कदाचित् मेरी भी हत्या कर देंगे।"

"परन्तु हम वहां गुमनाम रहेंगे।"

"वह तो यहां भी कर सकते हैं।"

"कैसे ?"

"आप मेरे साथ विवाह कर लीजिये। तब मैं भारत सरकार से आपकी रक्षा के लिये प्रार्थना करूंगा। तुम्हारा पति होने से मैं तुम्हारा सरक्षक मान लिया जाऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या अमरीका सरकार से भारत सरकार अधिक रक्षा कर सकेगी ?"

,'यह मैं नहीं कह सकता। इतना जानता हूं कि मैं कम्यूनिस्ट हूं और भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी हमारे विवाह का पक्ष लेगी। अभी कम्यूनिज़म छोड़ने की आवश्यकता नहीं। जब तुम यहां रह सकोगी तब पार्टी से पृथक होने की बात पर विचार कर लेंगे।"

"मुझको यह सम्भव प्रतीत नहीं होता।"

"मुझको अमरीका वालों का ढंग पसन्द नहीं। वे दुनिया भर में हल्ला कर देंगे और फिर भारत सरकार उनका विरोध करने पर विवश हो जायेगी।"

अन्ना खाती हुई विचार करती रही। भोजन समाप्त हो गया और उसके मस्तिष्क में बात स्पष्ट नहीं हुई थी। इस सब समय सतीश मन में एक योजना बना रहा था। उसने खाना समाप्त होने पर अपनी योजना अन्ना को बता दी। उसने कहा, "आप कलकत्ता में कितने दिन तक और हैं ?"

"हमें यहां आये पांच दिन हुए है। अभी दो-तीन दिन और लगेंगे।"

"तो मैं कल सायंकाल ही तुमसे विवाह का प्रबन्ध करता हूं। हिन्दू रीति से विवाह हो सकेगा।"

"वह कैसे होता है ?"

"तुम चुपकर बैठी रहना। सब कुछ पुजारी कहता और करता जायेगा। बस हमारा विवाह हो जायेगा। मैं यह यत्न करूंगा कि तुम्हारे आयोग के साथियों को भी उस समय आमन्त्रित कर लूं।"

"यह हो सकेगा क्या ?"

"यह असम्भव नहीं है। कहो तो यत्न करूं ?"

"तो मैं आपके साथ अभी चलूं ?"

सतीश ने कुछ काल तक विचार किया और पूछा, "कब तक तुम रिक्त हो ?"

"आज रात और कल तथा उसके एक दिन उपरान्त मध्याह्न तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरे साथी खड़गपुर गये हैं। मैं बीमार होने के कारण उनके साथ जा नहीं सकी। वे परसों मध्याह्नोत्तर लौटेंगे।"

सतीश ने कुछ विचार कर पूछ लिया, "कॉमरेड टी० कहां है?"

"वह कॉमरेड एम० के साथ सिनेमा देखने गयी हुई है।"

"तो चलो। मैं एक अन्य व्यक्ति से राय करना चाहता हूं।"

"वह कौन है?"

"मेरी बहिन और उसका पति है।"

"तो आपकी बहिन भी है? क्या वह भी पार्टी की सदस्या है?"

"नहीं। उसका अपना क्षेत्र है। यदि वे मान गये तो कल एक बहुत बड़ा तमाशा होगा।"

दोनों मानकतल्ला में विष्णु के मकान को चल पड़े। मार्ग में सतीश ने अन्ना को बताया, "मेरी बहिन और बहनोई एक ख्याति प्राप्त लेखक हैं। उनकी नगर में बहुत जान-पहिचान है। इस कारण यदि उनका सहयोग प्राप्त हो गया तो हमारा विवाह हिन्दू समाज में मान्य हो जायेगा। तब तुम कम्यूनिस्ट रहती हुई हिन्दू मान ली जाओगी और तुम रूसी समाज की सेवा छोड़ने में सफल हो सकोगी।"

"जिस प्रकार हो सके करो। मैं सोवियत तानाशाही से मुक्ति पाना चाहती हूं।"

सतीश के विचारों में भी क्रान्तिकारी हलचल उत्पन्न हो रही थी। इस हलचल को पैदा करने में प्रथम कारण यह अन्ना ही हुई थी, परन्तु उस समय सतीश का मन कम्यूनिस्ट दर्शन शास्त्र के दूषित प्रभाव से जड़वत् हो चुका था और उसने अन्ना के कथन को एक राजनयिक की बात मान अवहेलना की दृष्टि से देखा था। परन्तु जब प्रफुल्लचन्द्र ने अपने व्यवसाय की महिमा वर्णन करते हुए कहा कि बड़े-बड़े लोग अपना मतलब पूरा करने के लिये औरतों की सप्लाई करते हैं और वह इसमें सहायक होता है तो उसके मन में क्रान्तिकारी हलचल उत्पन्न होने लगी थी। जब तिलोत्तमा ने बताया कि उसका पूर्ण व्यवहार सतीश के साथ पार्टी के आदेशानुसार ही था, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो वह एकदम विचारों के भंवर में फंस बौखला उठा था। भंवर से निकलने का उपाय तो अन्ना ने सुझाया था। वह कम्यूनिस्ट पार्टी छोड़ने के लिये जी-जान की बाजी लगा बैठी थी।

सतीश ने उसकी योजना में यह संशोधन किया था कि वे पहिले विवाह कर लें। पीछे वह अपने पति के साथ रहने के लिये हिन्दुस्तान में रहने का यत्न करे और फिर वे ऐसे ही पार्टी छोड़ दे जैसे अर्चना ने छोड़ दी है। इसी योजना के अनुरूप वे मिलने चल पड़े।

इस समय रात के साढ़े नौ बज रहे थे। अर्चना और विष्णु सोने की तैयारी में लगे थे। अर्चना एक पुत्र की मां बन चुकी थी और बच्चा दो मास का हो चुका था। अर्चना बच्चे को बोतल से दूध पिला रही थी। विष्णु अपने कमरे में जा सोने के कपड़े पहिन रहा था कि वाहर द्वार खटखटाया गया। विष्णु ने द्वार खोला और सतीश को एक योरुपियन महिला के साथ खड़े देख विस्मय में पूछने लगा, "सतीश जी ! आइये। कैसे आना हुआ है?"

"अर्चना कहां है?"

"आओ तो।" विष्णु उनको ड्राइंग रूम में ले गया। वहां उनको बैठा कर बोला, "अर्चना बच्चे को दूध पिला रही है। दो तीन मिनट में वह सो जायेगा और तब वह आ सकेगी।"

"बच्चा?" सतीश ने विस्मय में पूछ लिया, "तो उसके बच्चा हो गया है क्या?"

विष्णु उसके सामने कुर्सी पर बैठ गया और कहने लगा, सतीश इसमें विस्मय करने की क्या बात है? विवाह का प्रथम उद्देश्य यही तो था।"

सतीश ने बात बदल दी, "इस समय, जब आप सोने की तैयारी में थे, यहां आकर कष्ट ही दिया है। परन्तु विष्णु ! हम एक आवश्यक कार्य से आये हैं। मैं जानना चाहता था कि अर्चना उस कार्य में मेरी कितनी सहायता कर सकती है? कार्य का निर्णय रात-रात में ही होगा और वह शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न होना आवश्यक है। इसी कारण इस समय आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कष्ट दिया है।

"अर्चना आ रही है। बताइये, इस समय कॉफी इत्यादि कुछ लेंगे ?"

"कुछ नहीं। हम अभी-अभी पेट भर खा कर आये हैं।"

इसके अनन्तर वे बैठ अर्चना की प्रतीक्षा करने लगे। बच्चे को सुलाने में अर्चना को पांच मिनट लगे।

: ९ :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

निर्मला विष्णु शर्मा को अपने स्कूल की ओर से आमन्त्रित कराने में सफल नहीं हो सकी। यह था तो पब्लिक स्कूल, परन्तु सरकारी सहायता से चलता था। यद्यपि सरकार की ओर से विष्णु शर्मा जैसे लेखकों का अभिनन्दन करने में किसी प्रकार का प्रतिवन्ध नहीं लगा था, परन्तु निर्मला की अध्यापिका ने जव यह प्रस्ताव मुख्याध्यापिका के सामने रखा था तो वह इस प्रस्ताव के अनुसार कार्य करने से पहले स्कूल के मैंनेजर मिस्टर चड्ढा से वात कर लेना ठीक समझती थीं। वह भी 'ज्योति' की पाठिका थीं और जानती थीं कि विष्णु शर्मा वहुत रोचक कहानियां लिखता हुआ भी सरकार की राजनीतिक तथा आर्थिक विचार धारा का घोर विरोधी है। वह पंडित नेहरू की नीतियों की आलोचना करने में भी निर्भीकता से लिखता था। इस कारण इस प्रकार के व्यक्ति के स्कूल में अभिनन्दन किये जाने से पूर्व मैंनेजर से राय करना उचित समझा गया। मिस्टर चड्ढा एक सफल उद्योगपति था। वह न तो साहित्यकार था न ही साहित्य में रुचि रखता था। उसने तो विष्णु शर्मा का नाम भी नहीं सुना था। जव यह प्रस्ताव उसके सामने आया तो विष्णु शर्मा के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये पूछने लगा।

"यह महाशय क्या हैं?"

"एक हिन्दी के विख्यात लेखक हैं।"

"कभी नाम नहीं सुना। प्रेमचन्द का नाम तो सुना है "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"परन्तु लाला जी ! प्रेमचन्द जी का देहान्त हुए कई वर्ष हो चुके हैं। ये नये लेखकों में से हैं।"

"क्या लिखते हैं ?"

"कहानियां, उपन्यास और धर्मशास्त्र के विषय में।"

"इस पर भी यह विख्यात हैं ? आज भी भारत में कोई है जो शास्त्र के विषय में लिखता पढ़ता है ?"

"ये राजनीति और अर्थ व्यवस्था पर भी लिखा करते हैं।"

"तब तो ठीक है। इसका अभिनन्दन स्कूल की ओर से कर सकती हो।"

"परन्तु एक बात और है। ये पंडित नेहरू जी की नीति के घोर विरोधी हैं।"

"तो फिर अभिनन्दन किस लिये कर रही हैं ?"

"उनकी साहित्य कला के लिये।"

"भला नेहरू विरोधी कला भी कोई कला हो सकती है ?"

"मैंने आपसे इसलिये पूछ लिया है, जिससे आप यह न कह सकें कि आप को सब बात बतायी नहीं गई थी।"

"तब तो मैं इसकी स्वीकृति दे नहीं सकता।"

मुख्याध्यापिका चुप रहीं तो चड्ढा साहब ने कह दिया, "नहीं। इसके अभिनन्दन करने का कोई प्रश्न ही उपस्थित नहीं हो सकता।"

निर्मला कलकत्ता से लौटी तो उसकी अंग्रेज़ी की अध्यापिका ने उसे बता दिया कि विष्णु का अभिनन्दन इस स्कूल से नहीं किया जा सकता।

"क्यों ?" निर्मला ने पूछा।

"क्योंकि वह सरकार विरोधी है।"

"तो एक साहित्यकार को सरकार का विरोधी नहीं होना चाहिये ?"

"कम से कम पं० नेहरू का विरोधी नहीं होना चाहिए। पं० नेहरू भारत में समाजवाद लाना चाहते हैं और यह आ नहीं सकता जब तक विरोध को निस्तेज न कर दिया जाये। समाजहित व्यक्तिगत स्वतन्त्रता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ऊपर है।"

निर्मला अपनी अध्यापिका को उत्तर नहीं दे सकी। वह चुप रही। परन्तु उसके मन में यह बात हलचल मचाती रही कि समाजवाद चल नहीं सकता जब तक इसके विरोध को निस्तेज न किया जाये।

वह मन ही मन विचार करती थी कि विरोध को निस्तेज करने का क्या यह उपाय है कि विरोधी को न तो सुना जाये, न उसे सुनने दिया जाये।

जिस दिन सतीश जी का स्कूल की ओर से अभिनन्दन किया गया था कानो-कान यह बात विख्यात हो रही थी कि सतीश जी की एक कविता 'जनता' में छपी है। कविता थी, विश्व विभूति नेहरू। इस कविता के छपने के उपरान्त ही सतीश जी की ख्याति बढ़ने लगी थी और यद्यपि पद्मभूषण के पदक की घोषणा करते समय इस कविता का उल्लेख नहीं हुआ था, इस पर भी इस कविता से ही सतीश जी प्रकाश में आये थे।

निर्मला को रेल में यात्रा करते हुए अर्चना का यह कहना स्मरण हो आया कि सतीश जी के लेख को तो कम्यूनिस्ट पत्र तथा पत्रिकाएं भी नहीं छापतीं। वे उसको एक छोटे दर्जे का लेखक मानते हैं। संस्कृत के अनेकों लेखक हैं जिन्होंने अति विद्वत्ता पूर्ण लेख लिखे हैं। उनके लिये पदक तो दूर एक पुष्पमाला भी सरकार के पास नहीं। यह समाजवाद का ही परिणाम है।

आज एक स्वतन्त्र विचारवाली अध्यापिका ने भी यह कहा था कि विष्णु शर्मा का अभिनन्दन नहीं किया जा सकता क्योंकि वह नेहरू विरोधी है और नेहरू जी को समाजवाद लाना है।

अर्चना के मत का समर्थन सुन वह अपनी अध्यापिका से पूछने लगी, "बहिन जी! आप तो स्वतन्त्र विचार की पोषक थीं।"

"वह तो अब भी हूं, परन्तु अभिनन्दन मैं नहीं कर रही थी। यह तो स्कूल कर रहा था। स्कूल स्वतन्त्र नहीं है।"

"तो हम यह आयोजन प्राइवेट रूप से नहीं कर सकते क्या?"

"परन्तु मैं नौकरी जो करती हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आपकी स्वतन्त्रता आपकी नौकरी से सीमित है।"

"हां।"

निर्मला चुप कर रही। उसका विचार था कि इस अभिनन्दन से उसके और विष्णु जी में पत्र व्यवहार का मार्ग खुल जायेगा। अब वह इस आयोजन में असफल हुई तो वह विष्णु जी को लिख नहीं सकी।

परीक्षा भी समीप आ रही थी और उसको अपनी पढ़ाई में अपना पूर्ण ध्यान लगाना ठीक समझ आया परीक्षा मार्च मास में होने वाली थी। इस समय जनवरी मास जा रहा था।

परीक्षा हुई और वह अपने मामा के पास कलकत्ता जाने का हठ करने लगी। उसकी मां ने कहा भी, "निर्मला! इस समय संसद में बजट सैशन चल रहा है। तुम्हारे पिता दिल्ली से बाहर नहीं जा सकते और मैं भी उनके साथ यहां रहना ठीक समझती हूं।"

"तो मां! मैं अकेली नहीं जा सकती क्या?"

"पर वहां क्या है?"

"मैं लेखिका बनना चाहती हूं और वहां विष्णु जी हैं।"

"तो क्या लेखिका का कार्य कोई मुनीमी का काम है जो तुम उनसे सीखने जा रही हो?"

"नहीं मां। यह कला है, परन्तु कला भी तो गुरु परम्परा से चलती है।"

मां इसका उत्तर तो नहीं दे सकी, परन्तु उसके मन में भय था, कुमारी कन्या का एक युवक के सम्पर्क में आकर बिगड़ जाने का। उसने पूछ लिया, "किसी पुरुष को गुरु बनाने के स्थान किसी स्त्री को गुरु बना लो तो ठीक नहीं क्या?"

"पुरुष स्त्री में क्या अन्तर पड़ सकता है। जो योग्य हो उसको ही तो गुरु बनाना चाहिये।"

"देखो निर्मला! तुम अब सज्ञान हो रही हो। तुम यह जानती हो कि पुरुष और स्त्री में सम्बन्ध बहुत ही गम्भीर विचार का विषय है। पुरुष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पति भी बन सकता है। वह गुरु बन कर पति बनने का यत्न भी कर सकता है।"

"तो फिर क्या हुआ, मां ? यदि हमने परस्पर पसन्द किया तो यह भी हो सकता है। मैं अपनी इच्छा से विवाह करूंगी।"

"ठीक है, पर क्या हमारी सम्मति भी नहीं लोगी।"

"जब समय आयेगा, मैं सम्मति भी ले लूंगी। अभी तो उनको गुरु ही बनाना चाहती हूं।"

"परन्तु जब समय आयेगा तो तुमको सम्मति लेने का न तो अवकाश होगा न ही इच्छा।"

"मां ! तुम व्यर्थ में चिन्ता करती हो। मैं उनको पति नहीं गुरु बनाने जा रही हूं।"

मां ने बात टालने के लिये कह दिया, "अपने पिता से पूछ लो। वे स्वीकृति देंगे तो चली जाना। मुझे तुम्हारे साथ जाने को कहेंगे तो मैं चल पड़ूंगी।"

: २ :

निरंजन मिश्र एम० पी० अपनी पत्नी से अधिक चतुर सिद्ध हुआ। जब निर्मला के कलकत्ता जाने की बात उसके समक्ष कही गयी तो उसने निर्मला को बुलाकर पूछा, "कलकत्ता किस बात से जाना चाहती हो।"

"वहां एक विख्यात लेखक है विष्णु शर्मा। उनकी एक पत्रिका ज्योति लाखों की संख्या में छपती है। मैं उनसे लेखन कला सीखने के लिये जाना चाहती हूं।"

"ओह ! ज्योति। वही पत्रिका जो हमको नियमित रूप से आती है। उसकी व्यवस्थापिका पिछले वर्ष मिलने आयीं थी। देखो ! उसका नाम मैं भूल गया हूं।"

"अर्चना देवी !" निर्मला ने कह दिया।

"हां, वह तो कोई सुन्दर स्त्री प्रतीत नहीं हुई।"

"पर डैडी, मैं उससे सुन्दर बनने की कला सीखने नहीं जा रही, मैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विष्णुजी से लेखन कला सीखने जा रही हूं।"

"ठीक है, परन्तु वह कलाकार ही कैसा है जो अपनी पत्रिका के लिए एक सुन्दर व्यवस्थापिका भी नहीं ढूंढ सका।"

इस पर निर्मला ने मुस्करा कर कहा, "डैडी! मैं समझती हूं कि यह लेखक ने अपनी व्यवस्थापिका नहीं ढूंढी, बल्कि व्यवस्थापिका ने अपनी पत्रिका का सम्पादक ढूंढा है।"

"ओह! तो वह एक सुन्दर युवक होगा?"

"डैडी, वह एक कुशल लेखक है।"

"तो तुम उससे मिली हो?"

"जी, वे कहते थे कि वे आपको जानते हैं।"

"मुझको जानते हैं? हो सकता है। मुझको मेरे विधान क्षेत्र के लाखों लोग जानते हैं। क्या नाम बताया है उसका?"

"विष्णु शर्मा।"

निरंजन मिश्र स्मरण करने के लिए सिर खुजलाने लगा। एकाएक स्मरण कर बोल उठा, "ओ हां, भगवती पांडे का लड़का? जौनपुर का रहने वाला? समझा, लड़का संस्कृत पढ़ता था तो मुझसे बीस रुपये मासिक गुज़ारे के लिए लिया करता था। फिर एक दिन वह अपने पिता के देहान्त के उपरांत जौनपुर से चला गया था। तो वह कलकत्ता में है।"

"जी," वह यह सब कुछ नहीं जानती थी। इस पर भी उसने व्यर्थ की बात पर वाद-विवाद करने के स्थान मतलब की बात कह दी, "तो मैं जाऊं, डैडी?"

"हां," अब निरंजन मिश्र में उसकी राजनयिक प्रतिभा जागृत हो उठी। उसने कह दिया, "हां जाना चाहिये। मैं समझता हूं कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूं और तुमको उसके हवाले कर आऊं। मेरे जाने से वह तुम्हारा मान करेगा। मैं उसका अन्नदाता रहा हूं।"

"तो कब चलेंगे?"

"अगले सप्ताह संसद का सत्र समाप्त होने वाला है। बस हम सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चलेंगे। तुम्हारे मामा ने तुम्हारे लिए एक काम का प्रस्ताव भेजा है। उस पर भी विचार करना है।"

"कैसे काम का प्रस्ताव भेजा है, डैडी ?"

'कुछ है जो सब लड़कियों के लिए माता-पिता और बड़े सोचा करते हैं।"

निर्मला समझ गई, परन्तु 'क़िवल अज़ मर्ग वावेला' की कहावत स्मरण कर आंखें नीचे कर पूछने लगी, "तो किस दिन चलेंगे ? सीट बुक करा लेनी चाहिए, उस समय कठिनाई होगी।"

"मैं सब कर लूंगा। सत्र के अन्तिम तिथि का ज्ञान होते ही सीट बुक करा लूंगा।"

निर्मला प्रसन्न थी, परन्तु सत्र बन्द हुआ तो मिश्रजी ने कश्मीर भ्रमण का कार्यक्रम बना लिया।"

कश्मीर से लौटे तो जौनपुर और कलकत्ता में गर्मी के बहाने नैनीताल चले गये। जब भी निर्मला कलकत्ता जाने की बात कहती तो कह देते कलकत्ता में वर्षा आरम्भ होते ही चल देंगे।"

यह जुलाई का महीना आ गया। निर्मला का परीक्षा फल निकला और वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गई। अब मिश्रजी उसके प्रवेश का प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय में करने लगे।

प्रवेश पा सकने में तो सन्देह था ही नहीं, परन्तु निर्मला के मन में दिल्ली में पढ़ने के स्थान कलकत्ता में पढ़ने का विचार था। इस कारण एक दिन वह उठी और मां से बोली, "मम्मी ! मुझे मिराण्डा कालेज में प्रवेश मिल गया है। अब उसमें फीस इत्यादि जमा कराने के लिए रुपये चाहियें।"

"कितने चाहियें ?"

"अभी दो सौ रुपया दे दो और आवश्यकता होगी तो फिर मांग लूंगी।"

मां प्रसन्न थी कि लड़की के मस्तिष्क से कलकत्ता और विष्णु शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बात निकल गई है। उसने दो सौ रुपये लड़की को दिये और कह दिया, टैक्सी कर लो और प्रवेश की फीस जमा करा सीधी घर लौट आना।"

निर्मला गई और फिर नहीं लौटी। रात को मिश्रजी घर लौटे तो कमल कान्ता ने अपने पति से बताया कि निर्मला प्रातः नौ बजे की गई अभी तक नहीं लौटी। मिश्रजी स्तब्ध खड़े रह गये। फिर पूछने लगे, "कहां गई होगी ?"

"मैं क्या जानूं ! कलकत्ता की बात तो समाप्त हो चुकी थी। मेरा विचार था कि परीक्षा में बहुत अच्छे अंक आने के उपरांत उसके मस्तिष्क से लेखिका बनने की बात निकल चुकी थी। कई दिन से वह विज्ञान और व्यावहारिक विज्ञान के विषयों पर बातचीत किया करती थी।"

"मैं तो समझता हूं कि वह कलकत्ता चली गई है। अधिक सम्भव तो यह है कि वह डीलक्स एयर कंडीशण्ड से गई है। आज मंगलवार है और आज डीलक्स जाती है।

"अच्छा ठहरो, मैं रेल वालों से पता करता हूं।"

मिश्रजी ने टेलीफोन नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पूछताछ के कार्यालय से मिलाया और वहां से पताक रने पर वह जान गया कि एक निर्मल कुमारी एयर कण्डीशण्ड चेयर बुक कराकर कलकत्ता गई है। इस पर उसने कलकत्ता में अपने साले शिवकुमार के घर पर अर्जण्ट कॉल बुक करा दी।

"आधे घंटे में सूचना भेज दी गई कि एयर कण्डीशण्ड थर्ड क्लास से निर्मला अकेली कलकत्ता आ रही है। उसको स्टेशन पर से गाड़ी भेज मंगवा लिया जाये।"

शिवकुमार ने पूछा, "कैसे आ रही है ?"

निरंजन मिश्र ने कह दिया, "कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना चाहती है।"

"परन्तु यहां तो अभी प्रवेश की तिथि दूर है।"

"इस पर भी वह प्रवेश पाने के लिए आपसे यत्न करवाना चाहता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंजन मिश्र ने उसके कलकत्ता आने का सत्य कारण नहीं बताया। परन्तु साथ ही कह दिया, "उस लड़के के विषय में भी तो विचार करना है। कदाचित् वह लड़की देखना चाहे।"

इस बात ने शिवकुमार का समाधान कर दिया। उसने कह दिया, "कल कोई न कोई स्टेशन पर पहुंच जायेगा।"

निश्चित समय पर निर्मला की मामी हावड़ा स्टेशन पर पहुंची। गाड़ी से उतर निर्मला ने देखा कि उसकी मामी सदारानी रेलगाड़ी के डिब्बे देखते हुए उसकी ओर चली आ रही हैं। वह तुरन्त समझ गई कि उसके पिता ने अवश्य टेलीफोन से उसके आने की सूचना भेज दी है। उसको यह समझने में कठिनाई नहीं हुई कि पिताजी ने उसके कलकत्ता भाग आने का अनुमान लगा लिया होगा। परन्तु वह यह विचार नहीं कर सकी थी कि उसके कलकत्ता आने का क्या उद्देश्य बताया होगा और कितना बताया होगा? इससे वह अपने आने के विषय में मामी को बताने की योजना बनाने लगी।

मामी सामने आई तो उसने लड़की की पीठ पर हाथ फेरकर प्यार दिया। दिल्ली वालों का सुख समाचार पूछा और फिर कहा, "लगेज की रसीद कहां है। आओ पहले उसको छुड़ा लें।"

"मामी लगेज नहीं है।"

"नहीं है.........?" वह उसका अर्थ समझने के लिए निर्मला का मुख देखने लगी।

निर्मला ने समाधान के लिए कह दिया, "मामी! तुम्हारे घर ही तो आ रही थी। बिस्तर की क्या आवश्यकता थी?"

अरी! मैं तुम्हारे पहनने के कपड़ों के बारे में पूछ रही हूं।"

"वे मैं यहां सब नये खरीद लूंगी।"

सदारानी को संदेह हो गया कि दाल में कुछ काला है। वह विचार करने लगी थी कि सम्भवतः लड़की घर से भागकर आई है। उसने निर्मला के साथ-साथ चलते हुए कह दिया, "तो मां से लड़कर आई हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला को समझ आया कि उसके पिता ने कुछ संकेत इस विषय में भी दिया है। अतः उसने बात स्पष्ट करने के लिए कह दिया, "मामी ! लड़कर नहीं। भागकर आई हूं। डैडी विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए हठ करने लगे तो मैं चुपचाप यहां चली आई और साथ कुछ भी नहीं ला सकी।

"बस, इतनी-सी बात के लिए माता-पिता की बात की अवहेलना कर दी है ?"

इस समय तक वे सामने खड़ी मोटर गाड़ी के पास जा पहुंचे थे। ड्राइ-वर ने सीट का दरवाजा खोला तो निर्मला और सदारानी भीतर जा बैठीं।

: ३ :

सदारानी को सन्देह था कि युवा लड़की है। अवश्य किसी के मोहजाल में फंसकर घर से भागी है। अतः वह मार्ग में निर्मला से उसके मन की अवस्था जानने के लिए यत्न करती रही। जब वह कुछ नहीं जान सकी तो उसने लड़की पर देख-रेख कड़ी रखने का संकल्प कर लिया।

अगले दिन निरंजन मिश्र का एक लम्बा पत्र आया। उसमें लड़की के 'ज्योति' के सम्पादक विष्णु शर्मा से लेखन कला सीखने के विचार के विषय में लिखा और फिर अपने मन का संदेह लिख दिया। उसने लिखा, "लड़की उस लफंगे के मोह में फंस गई प्रतीत होती है।"

इस सूचना के मिलने पर तो शिवकुमार और सदारानी दोनों सतर्क हो गये। वे जहां निर्मला की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति का ध्यान रखते थे, वहां उसके लिए ढूंढे लड़के के माता-पिता से बातचीत करने लगे।

निर्मला के लिये घूमने-फिरने के योग्य वस्त्र की एक समस्या हो गई। तुरन्त तो सदारानी ने अपने कपड़े दे दिए, परन्तु वह शरीर की भारी थी और निर्मला दुबली-पतली। इस कारण उन कपड़ों से काम नहीं चला। परन्तु मां ने दिल्ली से उसका सूटकेस तैयार कर सवारी गाड़ी से भेज दिया। उसको पहुंचने में चार-पांच दिन लग गये। तब तक निर्मला घर से बाहर नहीं निकल सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कपड़े आ गये तो अगले ही दिन निर्मला तैयार हो बालीगंज जाने के लिए तैयार हो गई। वह जाने लगी तो मामी ने पूछ लिया, "कहां जा रही हो निर्मला।"

"ऐसे ही ज़रा घूमने-फिरने। पांच दिन से घर में कैदी की भांति बद थी।"

"तो ठहरो, तुम्हारे मामाजी की मोटर आ जाये तो उसमें सवार हो जाना। मैं भी घूमने जा रही हूं।"

"नहीं मामी। मैं तो जा रही हूं। तुम गाड़ी आयेगी तो चली जाना।"

"पर तुम बालीगंज ही जा रही हो न ?" सदारानी ने यह बात उसको अपने मन की वात कहने में प्रोत्साहित करने के लिये कही थी। निर्मला अपने मन की वात मामी को कहते सुन अवाक् खड़ी रह गयी। इस पर सदारानी हंस पड़ी। हंसते हुए कहने लगी, "मुझको भी विष्णु जी से काम है। इकट्ठे चलेंगे।"

"तुमको क्या काम है मामी ?" निर्मला ने झेंप खुल जाने पर हंसते हुए पूछ लिया।

"मैं जानना चाहती हूं कि तुम्हारा उससे क्या काम है ?"

"तो तुम जानती हो कि मैं विष्णु जी से मिलने जा रही हूं।"

"बिलकुल। सुनो निर्मला ! जो बात चोरीचोरी की जाये वह पाप होती है। उसके करने से दुःख प्राप्त होता है।"

"और जो बात प्रत्यक्ष और सब के सामने की जाये ?"

"वह पाप तो नहीं होता। हां, वह ठीक है अथवा गलत है, विचार का विषय बन जाता है। तब दूसरों से राय भी की जा सकती है।"

"पर मामी ! मैं उनसे अपनी लेखन कला की उन्नति में सहायता लेना चाहती हूं।"

"यह तो ठीक है, परन्तु वह सहायता देगा क्या ? कितनी और किस प्रकार सहायता देगा, यह तो देखने का विषय है। मैं यही देखने जाना चाहती हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम उससे पृथक में मिल कर बात कर लेना।"

"मतलब यह कि तुम कुछ लुक-छिप कर बात करना चाहती हो। यही तो पाप है।"

निर्मला उत्तर तो दे सकती थी, परन्तु उसे लज्जा लग गयी। उसने कहा, "मैं तो इस समय जा रही हूं। मामी ! यदि तुम मुझ पर खुफिया पुलिस का काम करना चाहती हो तो आओ। हम टैक्सी में चली जाएंगी।"

"व्यर्थ में दस रुपये खर्च हो जाएंगें। जब अपनी गाड़ी है तो इतना पैसा नाली में फेंकने के समान हो जायेगा।"

निर्मला के पास अपने रुपये कुछ थे। परन्तु वह समझ रही थी कि शीघ्र ही उसे मामा जी से मांगने की आवश्यकता पड़ेगी। इस कारण धन व्यर्थ गंवाने में वह हठ नहीं कर सकी। वह घर की गाड़ी के आने की प्रतीक्षा करने पर तैयार हो गयी।

गाड़ी आयी और सदारानी निर्मला को ले कर बालीगंज 'ज्योति' के कार्यालय में जा पहुंची। जब ये वहां पहुंचे तो वहां भारी चहल-पहल थी। बीसियों लोग शामियाना, कनातें, कुर्सियाँ, मेजें आदि सामान लगाने में जुट रहे थे।

निर्मला इस चहल-पहल को देख विस्मय में खड़ी रह गयी। उसने एक आदमी से पूछ लिया, "यहां आज क्या है ?"

"अर्चना जी के भाई का विवाह है।"

"तो उनका भाई भी है?"

बताने वाला व्यक्ति विस्मय में इन दोनों का मुख देखने लगा। निर्मला ने पूछ लिया, "विष्णु जी कहां हैं ?"

"इस समय विवाह हो रहा है। वे वहां पर है।"

"विवाह कहां हो रहा है ?"

"आर्य समाज मन्दिर में। यहां तो सायंकाल की चाय पार्टी का प्रबन्ध हो रहा है।"

सदारानी ने निर्मला से कहा, "तो चलो। फिर कभी आयेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं मामी! हम आर्य समाज मन्दिर में विवाह पर चलते हैं।"

"यह अर्चना कौन है ?"

"यह विष्णु जी की पत्नी है।"

"तो विष्णु जी विवाहित हैं ?"

निर्मला हंस पड़ी और बोली, "तो अब ठीक है न ?"

अब सदारानी ने बात स्पष्ट कर देने के लिये कह दिया, "तुम्हारी मां को सन्देह था कि तुम विष्णु जी से विवाह करना चाहती हो। इसी कारण उसके पीछे भागी-भागी यहां चली आयी हो। मैंने यह समझा था कि वह कोई अविवाहित युवक है। अतः मैं यह देखने आई थी कि यदि वह ठीक वर है तो चोरी चोरी नहीं खुले में तुम दोनों को मिलने दिया जाये और यदि सब ठीक हो तो तुम्हारा विवाह रचा दिया जाये।"

निर्मला हंसती हुई खड़ी कार की ओर चल पड़ी। सदारानी उसके साथ-साथ थीं। जब दोनों गाड़ी में बैठीं तो निर्मला ने ड्राइवर को कह दिया, "आर्य समाज मन्दिर में।"

"ड्राइवर ने एक बार प्रश्न भरी दृष्टि से मालकिन के मुख को देखा और उसे चुप देख गाड़ी चला दी।

आर्य समाज मन्दिर में भी बहुत से लोग एकत्रित थे। कुछ यूरोपियन भी थे। मन्दिर में वेदी पर तो चार-पांच लोग बैठे थे। कुछ पीछे हट कर चुप चाप विवाह संस्कार होता देख रहे थे। अधिकांश दो-दो चार-चार की टोलियों में मन्दिर भवन में और बाहर खड़े बातें कर रहे थे। उनमें से कोई भी निर्मला इत्यादि का परिचित नहीं था। इस कारण वे किसी से इस विषय में पूछ नहीं सकीं। वे जूता उतार भीतर चली गयीं और वेदी के समीप ऐसे स्थान पर जा बैठीं जहां विष्णु और अर्चना की दृष्टि उन पर पड़ सके।

विष्णु ने उनको देखा। विष्णु को विस्मय इस बात पर था कि निर्मला इस विवाह पर किसलिये आयी है। क्या वह भी कम्यूनिस्ट पार्टी से संबंध रखती है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निर्मला को आधा घन्टा भर बैठना पड़ा। विवाह समाप्त हुआ। बैठे लोगों ने अर्चना, विष्णु और वर-वधू को बधाइयां देनी आरम्भ की तो निर्मला उठ खड़ी हुई।

अवकाश पा विष्णु उठ कर अर्चना को सम्बोधन कर बोला, "वह निर्मला आयी है।"

"देख रही हूं।"

"उसके साथ कोई औरत भी है। कदाचित् उसकी मां हो?"

"नहीं मां नहीं है। रूप रंग से बहिन नहीं लगती।"

"तो उनसे मिल लो।"

अर्चना हंस पड़ी। हंस कर पूछने लगी, "आप में यह हीन भावना कहां से घुस आयी है?"

"इसमें हीन पना कहां है। मैं तो उसके किसी सम्बन्धी की मान प्रतिष्ठा के लिये कह रहा था।"

"मैंने समझा कि आप निर्मला से डरते हैं।"

अब हंसने की बारी विष्णु की थी। वे दोनी निर्मला और उसकी मामी की ओर चले आये।

उस समय तो औपचारिक बात हुई और विष्णु ने उनको सायंकाल चाय पर आमन्त्रित कर दिया।

: ४ :

सतीश और अन्ना ज़िबटस्की ने विष्णु और अर्चना को अपने विवाह का विचार बताया और अपनी परिस्थिति का ज्ञान कराया तो अर्चना ने पूछ लिया, "भैया! इसमें हम क्या सहायता कर सकते हैं?"

"मैं समझता हूं कि यदि विवाह हो गया तो मैं अपनी पत्नी को अपने साथ रहने के लिये कह सकूंगा। सोवियत राज्य यह पसन्द नहीं करेगा। तब इस विषय में मैं भारत सरकार और अमरीकन सरकार की सहायता पाने का यत्न करूंगा।

"पहिली बात यह है कि हमारा विवाह एक सर्व विख्यात घटना हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाये। इसमें मैं आप दोनों की सहायता चाहता हूं।

"अच्छा ठहरो। मैं चटर्जी से राय करती हूं।" इतना कह अर्चना ने चटर्जी के घर टेलीफोन किया। टेलीफोन चटर्जी ने उठाया :"

"कौन ?" अर्चना ने पूछा।

"चटर्जी।"

"मौसा जी ! सो रहे थे क्या ?"

"नहीं। मैं अभी एक केस स्टडी कर रहा था।"

"उसे छोड़ नहीं सकते ?"

"छोड़ भी सकता हूं। यदि उससे अधिक रुचिकर बात करने को मिल जाये।"

"रुचिकर बात कैसे कह सकती हूं। इसका अपने मन की अवस्था के साथ सम्बन्ध होता है। हां, एक आवश्यक विषय पर परामर्श करना है और वह तुरन्त ही।"

"तब तो करो। बताओ।"

"तो हम वहां पर आयें या आप हमारे यहां आ सकते हैं ?"

"हमारी मोटर सर्विस के लिये गयी है। तुम ही आ जाओ। क्या तुम्हारी मौसी की भी आवश्यकता होगी परामर्श में ?"

"हो सकती है।"

"तब तो तुम ही यहां आ जाओ।"

"हमारे साथ दो प्राणी और है।"

"कौन है ?"

"एक संतोश भैया हैं और दूसरा एक अपरिचित प्राणी है।"

"तो उनको भी ले आओ। मैं कॉफी तैयार कर रहा हूं।"

'विष्णु ने टैक्सी पकड़ी और चारों चटर्जी के पास चले गये। विष्णु जाने से पूर्व अपनी मां से कह गया कि वह बच्चे के पास चली जाये। उनको लौटने में कुछ देर भी लग सकती है।"

चटर्जी को जब पूर्ण समस्या समझाई गयी तो उसने कह दिया, "देखो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सतीश ! जहां तक विवाह का सम्बन्ध है, वह आर्य समाज में हो सकता है उसको कोई रोक नहीं सकता। इस औरत को एक लिखित वक्तव्य देना होगा कि इसके पति को लापता हुए पांच वर्ष से ऊपर हो चुके हैं और इसके विचार से उसका देहान्त हो चुका है।

"सब से कठिन समस्या यह होगी कि यह विवाह के उपरान्त भी रूसी नागरिक रहेगी और रूस की सरकार इसको वापिस रूस में आनेका आदेश दे सकती है। इस आदेश का विरोध भारत सरकार कर सकेगी अथवा नहीं, कहना कठिन है। उस समय के लिये इसको अमरीकन सरकार की सहायता भी मांगनी चाहिये।

"इस पर भी झगड़ा होगा। कदाचित मुकदमा लड़ना पड़ेगा यदि अमरीकी सरकार डर गयी तो मुकदमा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर लेगा। और सफलता की आशा बढ़ जायेगी।

"एक बात और है। यह मिशन जिसमें यह औरत यहां आयी हुई है रूसी सरकार की ओर से है क्या ? यदि है तो रूसी सरकार अपने वेतन धारी नौकर को वापिस रूस लौट कर चार्ज देने पर विवश भी कर सकती है।"

सतीश का कहना था, "कि चटर्जी साहब ! मैं कुछ हल्ला-गुल्ला करना चाहता हूं। इससे मेरी और अन्ना की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति होगी और हमको लाभ होगा।"

"परन्तु सतीश ! इस भाग दौड़ में खर्चा भी तो बैठेगा ?"

सतीश ने कह दिया, "अर्चना ने एक बार कहा था कि वह यथा शक्ति मेरी सहायता करेगी।"

"क्यों अर्चना ?"

"बात यह है कि कम्यूनिस्ट विचार धारा में तो पारिवारिक सम्बन्ध सारहीन है, परन्तु हमारी भारतीय विचारा धारा में इनको सारहीन नहीं समझा जाता। मैं तो सतीश जी के लिए पूर्ण सामर्थ्यानुसार खर्चा दूंगी।"

"और तुम्हारी सामर्थ्य कितनी है ?" चटर्जी ने मुस्कराते हुए पूछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिया।

"लाख दो लाख तो हो सकती है।"

"तब ऐसा करो। कल इस, क्या नाम बताया है ?"

"अन्ना ज़िवटस्की।" सतीश ने कह दिया।

"जब तक इसके साथी लौटें तब तक तुम्हारा विवाह इससे हो जाना चाहिए। तब यह अमरीकी सहायता प्राप्त करने का यत्न करे और मैं कलकत्ता पुलिस की सुरक्षा प्राप्त करने का यत्न करूंगा।

"विष्णु जी! विवाह तो थोड़े लोगों की उपस्थिति में हो जाना चाहिए। मैं पुलिस का प्रवन्ध कर दूंगा और अन्ना अमरीकन सरकार की संरक्षा प्राप्त करने का यत्न करे।"

अन्ना और सतीश तो चटर्जी के मकान से अमरीकन कन्सलेट के कार्यालय में चले गए और विष्णु तथा अर्चना अपने घर पहुंचे वे अगले दिन का कार्यक्रम बनाने लगे।

अगले दिन सब प्रवन्ध हो गया। विष्णु आर्य समाज मन्दिर में विवाह का प्रवन्ध कर आया। अर्चना ने टेलीफोन से अन्ना को अगले दिन प्रातः सात बजे, सतीश के साथ आने को कह दिया। तदन्तर वह दावत के प्रवन्ध में लग गई।

अपने छापाखाना में निमन्त्रण पत्र छपवाकर उसने कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा वितरित करा दिए। निमन्त्रण पत्र में लिखा था—

"अन्ना ज़िवटस्की, सोवियत रशिया के एक नागरिक फेडरिक ज़िवटस्की की विधवा से श्री धनजय सोमानी के पुत्र श्री सतीश सोमानी के विवाह के उपलक्ष में आज २० जुलाई १९६४ के सांय पांच बजे 'ज्योति' कार्यालय में आपको सपरिवार आमन्त्रित किया जाता है। कृपया पधार कर वर-वधु को आशीर्वाद दे कर कृतार्थ करें।

नीचे हस्ताक्षर विष्णु और अर्चना के थे।

जब सतीश और अन्ना आये तो अर्चना ने अन्ना को हिन्दुस्तानी कपड़े-साड़ी इत्यादि पहिनाए और दोनों को लेकर आर्य समाज मन्दिर में पहुंच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गई। वहां विवाह के संस्कार के लिए सामग्री और पुरोहित उपस्थित थे।

विवाह संस्कार आठ वजे आरम्भ हुआ और दस वजे समाप्त हो गया। अर्चना और विष्णु अभी निर्मला तथा सदारानी से भेट ही कर रहे थे कि चटर्जी अपनी मोटर गाड़ी में सतीश और अन्ना को लेकर प्रेज़िडेंसी मेजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित हो गया।

सतीश की ओर से एक प्रार्थना दिलवाया गया कि अन्ना विधवा फेडरिक ज़िवटस्की ने स्वेच्छा से मेरे साथ विवाह किया है। वह सोवियत रूस की नागरिक है। अपने कुछ मित्रों के साथ भारत भ्रमण के लिए आई हुई है।

"मुझको संदेह है कि अन्ना के मित्र वल पूर्वक इसको मुझसे पृथक करने का यत्न करेंगे। अतः मैं भारत का नागरिक होने के नाते अपनी पत्नी की रक्षा के लिए पुलिस की संरक्षण चाहता हूं।"

मेजिस्ट्रेट से चटर्जी पहिले ही उसके घर पर मिल कर उसे पूरी बात से अवगत करा चुका था। मजिस्ट्रेट ने औपचारिक रूप में चटर्जी से कहा, "यदि किसी ने इस औरत पर किसी प्रकार का हक वताया तो कौन इसके अदालत में हाजिर होकर दावे का उत्तर देने का ज़ामिन होगा ?"

चटर्जी इसके लिए तैयार था। वह अपने एक मित्र को जो कलकत्ता का एक साहूकार था, लाया था और पचास हजार की जमानत हो गई। इस पर मजिस्ट्रेट ने पुलिस को अन्ना सोमानी की रक्षा के लिए उचित कार्यवाही करने का आदेश जारी कर दिया।

चटर्जी उस आज्ञा को लेकर लाल वाज़ार थाने में पहुंचा और वहां से उसने होटल में और दावत के अवसर पर ज्योति के कार्यालय पर पुलिस का सुदृढ़ प्रवन्ध करा दिया।

उसी मध्याह्न के समय एक अमरीकन अधिकारी ने मजिस्ट्रेट के सामने अपने एक नागरिक अन्ना 'सोमानी' की कुछ रूसी आवारा आदमियों से रक्षा के लिए प्रार्थना कर दी। उसने यह दावा किया था कि अन्ना जिवस्टकी ने चार दिन हुए अमरीकन नागरिक वनाए जाने की प्रार्थना की थी। उसके विषय में युनाइटेड स्टेट्स के उचित अधिकारियों से लिखा-पढ़ी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गई है। हमको आज यह सूचना मिली है कि अन्ना जिबटस्की की प्रार्थना पर विचार किया जा रहा है। तब तक उनको अमरीकन संरक्षण प्रदान किया जाए। हमको विदित हुआ है कि आज उसने एक हिन्दुस्तानी सतीश सोमानी से विवाह कर लिया है। इस कारण हम अपने एक नागरिक के हिन्दुस्तानी पति के साथ रहने की स्वतन्त्रता के लिए भारत सरकार की रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं।

: ५ :

इस प्रार्थना ने मुआमले को और भी जटिल बना दिया। सतीश ने मणीन्द्र, तिलोत्तमा तथा अन्य कई कम्यूनिस्टों को विवाह के अवसर पर आर्य समाज मन्दिर में बुलाया हुआ था। और जब विवाह हो रहा था ये कम्यूनिस्ट परस्पर विचार कर रहे थे कि पार्टी का इस विवाह के सम्बन्ध में क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए। जहां तक बुद्धि से विचार करने की बात थी, यह विवाह आपत्तिजनक प्रतीत नहीं हो रहा था। सबका यही विचार था कि अन्ना के साथ सतीश को भी रूस जाना होगा। वहां जाकर सतीश सोवियय सरकार को अपनी सेवाएं दे कर अन्ना के साथ रह सकेगा।

परन्तु सायंकाल की चाय पार्टी में जहां कलकत्ता पुलिस के एक दर्जन सिपाही उपस्थित थे, वहां अमरीकन अधिकारी भी आए हुए थे। इन दो परस्पर विरोधी तत्वों को देख कम्यूनिस्ट दल के मन्त्री ने अर्चना से पूछ लिया, "ये अमरीकन किस नाते आमन्त्रित किए गए हैं ?"

अर्चना ने कहा, "यह चाय पार्टी मैंने अपने भाई के विवाह के उपलक्ष में दी है। मैंने सतीश जी से कहा था कि वे कुछ कार्ड लेकर अपने मित्रों को बुला लें तो उन्होंने, मेरा अभिप्राय है कि सतीश और अन्ना ने, एक सौ कार्ड लिए थे। ये अमरीकन लोग उन्होंने बुलाए हैं। जहां तक मुझे ज्ञात है आप लोग भी तो उन द्वारा भेजे कार्डों पर आए हैं।"

"हां, हमारे निमन्त्रण और सोवियत रूस के निमन्त्रण पत्रों पर अन्ना और सतीश के हाथ से किए हस्ताक्षर थे।

"तो इनको भी उन्होंने बुलाया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कलकत्ता सोवियत-दल के लोग कलकत्ता में आए रूसी आयोग के सदस्यों के नेता से पहिले ही पता कर चुका था। दल के नेता ने मन्त्री को बताया था कि वे दो दिन के लिए खड़गपुर गए थे। अन्ना बीमार होने का बहाना कर यहीं रह गई थी। जब हम आज तीन बजे के लगभग होटल में पहुंचे तो अन्ना और सतीश ने हमको इस चाय पार्टी के निमन्त्रण पत्र दिए। हम अभी तक समझ नहीं सके कि यह कैसे हो गया है। हमने रूसी दूतावास को दिल्ली में रिपोर्ट कर दी है। उनका अभी तक कोई उत्तर नहीं आया। हम अपने व्यवहार का निर्णय उत्तर आने पर बना सकेंगे। हम सीधे इन अमरीकी अधिकारियों से बात नहीं कर सकते। आप पता करें कि वे किस नाते यहां आए हैं ?"

इस उत्तर पर मन्त्री अर्चना से पूछने आया था। यहां यह तो पता चला है कि सतीश अथवा अन्ना ने उनको आमन्त्रित किया है। परन्तु यह पता नहीं चल सका कि दोनों में से किसका और फिर निमन्त्रण देने वाले का कैसे इनसे सबन्ध है।

चाय पार्टी चलती रही। मन्त्री ने तिलोत्तमा को यह रहस्य जानने के लिए भेजा। तिलोत्तमा अन्ना से मिली। उसने पूछ लिया, "अन्ना ! तुम सतीश से परसों ही मिलीं और तुरन्त ही विवाह का निश्चय कर लिया था ?"

"मैंने निश्चय मास्को में ही कर लिया था। परन्तु वहां इस बात का उचित अवसर न जान भारत में इसी मतलब से आई थी। सतीश जी का पता नहीं चल रहा था। जब पता चला तो हमने निश्चय किया और उनकी बहिन ने यह सब प्रबन्ध कर दिया हैं।"

परन्तु सतीश का इन अमरीकन अधिकारियों से कैसा सम्बन्ध है ?"

"मुझको ज्ञात नहीं कि उनका इनसे कोई सम्बन्ध है अथवा नहीं।"

"हम सब लोग विस्मय कर रहे हैं कि वे यहां किस कारण आये है ?"

"ओह ! यह बात है ? तो मैं बताती हूं। मैंने उनको निमन्त्रण भेजा था और वे आ गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारा उनसे क्या सम्बन्ध है ?"

"यह मैं तुमको बताना नहीं चाहिती। न ही तुमको पूछना चाहिए।"

"परन्तु तुम रूसी नागरिक होने से एक विदेशी से सम्बन्ध नहीं रख सकती।"

"परन्तु रूस में रहते हुए कई विदेशियों से सम्बन्ध बनाने के लिए मुझे कहा गया था।"

"वह बात दूसरी है। रूस का प्रत्येक नागरिक वहां की समाज का सेवक है और समाज उनसे प्रत्येक प्रकार का काम ले सकती है।"

"जब तक मैं सरकार की नौकरी करती थी यह बात तो ठीक हो सकती है परन्तु यहां मैं सरकार की नौकरी में नहीं थी।"

"तो किसकी नौकरी में थी ?"

"सोवियत दल की।"

"तिलोत्तमा ने मुस्कराते हुए कहा, "वहां पर सोवियत दल और सोवियत सरकार में अन्तर नहीं माना जाता।"

"परन्तु यह रूस नहीं है। वहां दल और सरकार में भेद है। यहां तक कि दल का आयोग एक सरकारी आयोग नहीं माना जाता। भारत सरकार हमको रूसी नागरिक के रूप में ही स्वीकार करती रही है। सरकार अधिकारी के रूप में नहीं।"

"परन्तु अन्ना कामरेड ! रूसी नागरिक सरकारी नियन्त्रण में है।"

"मैं ऐसी नागरिक नहीं रहना चाहती।"

"कैसी नागरिक ?"

"जो मन और तन से सरकार के अधीन हो। यह कैदियों से भी अधिक बुरी स्थिति है। मुझको बताया गया है कि अंग्रेजी सरकार के दिनों में तो भारत में कई राजनीतिक कैदियों से जेलखाने से बाहर लड़कियों से विवाह की स्वीकृति दी गई थी। मैं तो कैदी भी नहीं। एक नागरिक हूं। जिससे चाहूं विवाह करने में स्वतन्त्र हूं।"

तिलोत्तमा स्वयं सोवियत ढंग के समाजवाद से अर्थात् समाज अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राज्य के नागरिकों पर पूर्ण अधिकार की बात से ऊब चुकी थी, परन्तु वह अपने मन के विद्रोह को छुपा कर रखे हुए थी। उसने अन्ना को कहा, "यह तुमने ठीक नहीं किया। तुमको विवाह से पूर्व अपनी सरकार से स्वीकृति ले लेनी चाहिए थी।"

मैंने इसकी आवश्यकता नहीं समझी।"

"और फिर इन अमरीकी अधिकारियों से सम्बन्ध नहीं बनाना चाहिए था।"

"वह तो अब बन गया है।"

"क्या इस सम्बन्ध की बात सतीश जी जानते हैं ?"

"जरूरत जानते होंगे।"

"तुमने अपने देश से दगा किया है।"

"मैं ऐसा नहीं समझती।"

तिलोत्तमा उठी तो उसके मन्त्री के पास जाने से पूर्व मणीन्द्र उसका एक ओर ले जाकर पूछने लगा, "क्या कहती है वह ?"

तिलोत्तमा ने सब बात बताकर कहा, "मैं समझती हूं कि उसने अपने देश, राज्य और दल से दगा किया है।"

इस पर मणीन्द्र ने एक और रहस्य बता दिया, "मिस्टर चटर्जी प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट से बातें कर रहा था और मैं सुन रहा था। मैजिस्ट्रेट यहां चाय पर आमन्त्रित नहीं। वह अपनी नौकरी पर यहां उपस्थित है। अन्ना ने अमरीकन नागरिकता के लिए प्रार्थना की हुई हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि अमरीकन सरकार ने उसकी नागरिकता स्वीकार कर ली है। मैजिस्ट्रेट एक अमरीकन नागरिक की रूसी आवारा लोगों से रक्षा के लिए पुलिस के साथ आया हुआ है।"

"तो हम यह बात मन्त्री महोदय को बता दें।"

"हम क्यों बताएं ?" मणीन्द्र ने गम्भीर हो पूछ लिया।

"इसलिए कि हम कम्यूनिस्ट दल के सदस्य हैं। मन्त्री ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं अमरीकन के यहां आने का रहस्य पता करूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"ठीक है। परन्तु कलह में भी अमरीकनों की सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। मैं भी दल की तानाशाही से ऊब चुका हूं। तुम भी तो यही बात कह रही थीं।"

तिलोत्तमा इस सुझाव से भौंचक्की हो मुख देखने लगी। मणीन्द्र ने कह दिया, "तुम चुप रहो। होने दो जो होता है। मैं समझता हूं कि अभी-अभी किसी प्रकार की घटना होने वाली है। इस घटना में हम क्यों सहायक हों ?"

तिलोत्तमा मन्त्री के पास जाती-जाती रुक गयी और मणीन्द्र के साथ उस मेज पर जा बैठी जिस पर मणीन्द्र बैठा हुआ था।

उनकी मेज के समीप ही चटर्जी मैजिस्ट्रेट से बातें कर रहा था। चाय का कार्यक्रम लगभग समाप्त हो चुका था। सतीश और अन्ना उठ कर अभ्यागतों से मिल रहे थे। अर्चना उनके साथ थी और वह सब का परिचय करा रही थी।

जब ये लोग रूस के आयोग के सदस्यों के पास पहुंचे तो एक पिस्तौल चलने की आवाज़ आयी। दो गोलियां चलीं। सबका ध्यान गोली की आवाज़ की तरफ गया तो कुछ अन्तर पर एक पुलिस सिपाही का एक बंगाली युवक से हाथापाई होता देखा गया। वह बंगाली युवक पकड़ लिया गया। एक पिस्तौल युवक के पांव के पास गिरा पाया गया।

मजिस्ट्रेट ने युवक को और पिस्तौल को अधिकार में ले लिया। एक गोली अर्चना के कन्धे पर लगी थी और दूसरी कनात को छेदकर कहीं दूर जा गिरी थी।

अर्चना को तुरन्त हस्पताल पहुंचाया गया। बंगाली युवक तो हवालात में भेज दिया गया। अन्ना को अमरीकन अपने साथ कॉन्सुलेट में ले गये। वहां उसकी रक्षा के लिये भारतीय पुलिस बैठा दी गयी।

: ६ :

बंगाली युवक, जिसको पुलिस ने गोली चलाते पकड़ा था, एक निखिल कुमार घोष था। पिस्तौल रूसी फैक्टरी का बना हुआ था। सोवियत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आयोग के सदस्यों की तलाशी ली गई तो उनके पास से पिस्तौल और निकले जो उसी फैक्टरी के बने हुए थे।

पुलिस का मुकद्दमा था कि घोष ने अन्ना की हत्या करने का यत्न किया है। घोष का कहना था कि वह बेकसूर है और उसे शक में पकड़ लिया गया है।

दो बातें घोष के विरुद्ध जाती थी। एक तो वह उस चाय पार्टी में अनामन्त्रित आया था। दूसरे पिस्तौल उसके पांव के पास पकड़ा पाया गया। जिस पुलिस के सिपाही ने उसको पकड़ा था, उसके बयान घोष विरुद्ध थे।

रूसी आयोग के सदस्यों ने कह दिया कि पिस्तौल उनका ज़रूर है, परन्तु यह उनका चोरी किया गया है। वे नहीं जानते कि किसने चोरी की है और क्यों की है?

इस पर भी आयोग के नेता ने यह मांग की थी कि अन्ना रूसी नागरिक है और अमरीका के अधिकारी उसका अपहरण कर ले गये हैं, उसे वापिस दिलाया जाये।

अमरीकन अधिकारियों का कहना था कि अन्ना ने अमरीका के नागरिक बनने की प्रार्थना हुई है और जब तक अमरीका की सरकार उस प्रार्थना पर निर्णय नहीं करती, तब तक वह उसको अपने संरक्षण में रखना चाहते हैं।

अन्ना का बयान था कि वह रूसी नागरिक थी, परन्तु वह उसकी नागरिकता को छोड़ चुकी है। अब उसके लिये प्रश्न यह है कि वह अपने पति की नागरिकता के लिये भारत सरकार से प्रार्थना करे अथवा अमरीकी सरकार से एक स्वतन्त्र देश की नागरिकता स्वीकार करे। उसने दूसरा विकल्प स्वीकार किया।

रूसी आयोग तो वापिस मास्को चला गया। इस पर भी उनकी ओर से कलकत्ता का एक वकील मुकद्दमा लड़ता रहा।

न्यायालय ने घोष को दो अपराधों का दण्ड दिया। एक तो पिस्तौल चोरी करने का और दूसरा अर्चना पर घातक आक्रमण करने का। दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराधी को सात वर्ष का कठोर दंड दिया गया। चटर्जी ने अपनी ओर से तो यह सिद्ध करने का यत्न किया था कि वास्तविक अपराधी रूसी आयोग है। घोष तो उनका किराये पर उपलब्ध हत्यारा था। गोली का निशाना अन्ना थी। अर्चना तो घटनावश चोट खा गयी है। परन्तु न्यायकर्ता ने यह बात सिद्ध हुई नहीं मानी। उसने नीति के विचार से अथवा न्याय के विचार से हत्या के मुकद्दमें से अन्ना को तथा रूसी आयोग के किसी सदस्य का सम्बन्ध नहीं माना। न ही इस पूर्ण मुकद्दमे को रूस तथा अमरीका के झगड़े में घसीटने का यत्न किया। अन्ना का सतीश से विवाह ही इस पूर्ण झगड़े का मूल कारण समझा गया। जज ने इस ओर संकेत किया कि घोष सम्भवत: अन्ना से प्रेम करता है और अन्ना को किसी दूसरे से विवाह करते देख हत्या करने का उतारू हो गया है। उसने अर्चना की ही हत्या करनी उचित समझी प्रतीत होती है। यह एक साधारण बुद्धि की बात है कि अर्चना इस विवाह में मुख्य कारण थी। अत: घोष को क्रोध उस पर ही निकालना उचित प्रतीत हुआ होगा।

अन्ना की अपनी इच्छानुसार उसे अमरीकन सरकार के अधिकारियों के हाथ में दे दिया। विज्ञ जज का यह कहना था कि यद्यपि अन्ना भारत का नागरिक नहीं, इस पर भी भारत भूमि पर कोई भी मानव स्वतन्त्रता से रहने से वंचित नहीं किया जा सकता। शर्त केवल यह है कि वह भारत सरकार के किसी कानून का हनन करने वाला न हो। अन्ना ने सतीश से विवाह कर अथवा रूस देश से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर भारत के किसी कानून का विरोध नहीं किया। इस कारण यह न्यायालय उसको उसकी इच्छा के विपरीत किसी के हाथ में नहीं दे सकता। वह जहां जाना चाहे जाने के लिये स्वतन्त्र है।

जिस समय न्यायालय ने उसको ज़मानत से मुक्त किया उसी समय भारत सरकार की यह आज्ञा उसको मिली कि उसका भारत में रहने का वीसा रद्द किया जाता है और उसको चौवीस घंटों के भीतर भारत से निकल जाना चाहिये। अन्यथा भारत सरकार उसको पकड़ कर भारत सीमाके बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कर देगी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस नई परिस्थिति में अन्ना ने अमरीकी वीसा प्राप्त किया और प्रथम हवाई जहाज से कलकत्ता से सिंगापुर को चल दी। जाने से पूर्व उसने सतीश को पत्र लिखा कि, "यदि आप अमरीका में स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करने की सामर्थ्य रखते हैं तो एक सप्ताह के भीतर आप मुझे सिंगापुर में मिल लें।"

सतीश ने बैरिस्टरी अवश्य पास की थी, उसने कलकत्ता मे वकालत का काम भी आरम्भ किया था,परन्तु वह उसमें सफल नहीं हो सका था। वकालत के काम में असफल हो वह लेखक के काम में रुचि लेने लगा था। उसमें भी वह साधारण योग्यता ही प्राप्त कर सका और चलाऊ काम भी कम्यूनिस्ट दल की सहायता से ही चला सका था।

पद्म भूषण की उपाधि प्राप्त करने के लिये तिलोत्तमा बहुत सहायक सिद्ध हुई और जब सतीश ने उसको अपनी पत्नी घोषित करना स्वीकार नहीं किया तो उसने उसको अकिंचन बना दिया।

तिलोत्तमा के सतीश को लूटने में तो कम्यूनिस्ट दल का सहयोग नहीं था। हाँ, जब वह लुट गया और फिर रूस तथा कम्यूनिज़मके विषय में स्वतंत्र विचार प्रगट करने लगा तो पार्टी ने उसे एक साधारण कार्यकर्ता मान, एक चोर और बरदाफरोशों के मुहल्ले में काम करने पर नियुक्त कर दिया।

इस पर तो सतीश की आस्था कम्यूनिस्ट दल से और भी उठ गई। प्रफुल्लचन्द्र रस्तोगी और अन्ना की घटनाओं ने तो सोने पर सुहागे का काम दिया। वह एकदम अपने पिछले छः वर्ष के जीवन पर पुनरावलोकन करने पर विवश हो गया।

इस पूर्ण विचार में विष्णु और अर्चना दोनों सहायक हुए। जिस दिन अन्ना को भारत सरकार ने भारत में घूमने का वीसा रद्द किया और अन्ना भारत से भागी तो वह सतीश से मिल नहीं सकी। या तो उसके पास इसके लिए समय ही नहीं था अथवा उसकी सतीश में अब रुचि ही नहीं रही थी। कुछ भी कारण हो, सतीश को उसका पत्र मिला तो वह भौंचक्का हो देखता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गया। उसमें [illegible] न तो एक पत्नी के पति से पृथक किये जाने का संताप प्रकट होता था, न ही उससे किसी प्रकार की उसको अमेरिका साथ ले जाने की उत्कण्ठा प्रकट होती थीं।

इससे अनिश्चित मन, पत्र लिये हुए सतीश अर्चना से मिलने उसके कार्यालय में पहुँच गया।

: ७ :

विष्णु के कार्यालय में अब निर्मला सहायक के रूप में कार्य करती थी। विष्णु की सम्मति से उसने विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं लिया और 'ज्योति' कार्यालय में लेखन कार्य करने लगी थी।

सतीश कार्यालय में प्रविष्ट हुआ तो निर्मला से सामना हो गया। उसे वह अन्ना से अधिक आकर्षक प्रतीत हुई और वह विचार करने लगा था कि यह कौन लड़की है। वह निर्मला से पूछ ही रहा था कि वह कौन है तथा कब से वहां काम करती है कि विष्णु अपना लेखन कार्य समाप्त कर वहां आ पहुंचा। अर्चना कार्यालय का काम समाप्त कर किसी कार्य से बंगाल सरकार के प्रकाशन विभाग को जाने के लिये अपने कमरे से निकली थी कि सतीश दिखाई दे गया।

दोनों को बाहर जाने के लिये तैयार देख सतीश ने कह दिया, "मैं तो एक अत्यावश्यक कार्य के लिये आपसे मिलने आया था।"

"क्या बात है भैया ?" अर्चना ने पूछा।

"भीतर चलो तो बताता हूं। विष्णु भैया ! तुम भी ज़रा आ जाओ।

विष्णु और अर्चना दोनों वापिस कार्यालय में लौट आये। सतीश ने बैठ अन्ना का पत्र अर्चना के हाथ में देकर पूछा, "मैं क्या करूं ? आपसे राय करने आया हूं।"

अर्चना ने पत्र पढ़ा और विष्णु को देते हुए सतीश से पूछा, भैया ! प्रश्न तो यह है कि आप क्या चाहते हैं ?"

"इसमें दो स्पष्ट बातें देख रहा हूं। एक तो यह कि अन्ना मेरे वहां उसके पास जाने में कुछ अधिक रुचि नहीं रखती। दूसरे, मैं वहां पर स्वाव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लम्बी [illegible] तो वहां उससे मिल लूं।

"उसकी मुझ में अब कितनी रुचि है ? यह इस 'यदि' शब्द से स्पष्ट है। मैं वहां जाऊं भी तो उसको पत्नी के रूप में पा सकूंगा अथवा नहीं ? कहना कठिन है। दूसरे मेरी सामर्थ्य तो जो कुछ भी है, वह तुम हो।"

"देखो भैया ! यदि तुम चाहो तो वहां जा सकने में आर्थिक सहायता मिलेगी। वहां पर कुछ काल के लिये रहने के भी साधन उपलब्ध हो जाएंगे। परन्तु यह जीवन भर के लिये नहीं हो सकेगा।"

"दूसरी बात है अन्ना के तुम्हारी पत्नी बन कर रहने की आशा। यह तो हमको न तिलोत्तमा से थी, न ही अन्ना से है। इस पर भी भैया ! जैसा आपके मन में है, आप करें।"

सतीश अर्चना के कथन के अर्थ पर विचार ही कर रहा था कि विष्णु ने पूछ लिया, "सतीश भैया ! क्या तुमको अभी भी जीवन का कम्यूनिस्ट ढंग ठीक प्रतीत होता है ?"

"इसमें कम्यूनिस्ट ढंग का जीवन कहां से आ गया। यदि मैं अन्ना के पास गया तो अमरीका के किसी नगर में जाकर रहूंगा और वहां कम्यूनिज़म का कुछ अर्थ नहीं होगा।"

"नहीं भैया ! यह इस प्रकार नहीं है। कम्यूनिस्ट ढंग से मेरा मतलब है कि तुम जड़वादी हो क्या ? तुम समाज को सदा सर्वत्र व्यक्ति पर शासन करने वाला समझते हो क्या ? क्या तुम समाज में वर्गों का निश्चय आर्थिक आधार पर करते हो ? इन तीन प्रश्नों पर कम्यूनिज़म और मानववाद में अन्तर है और तुम अमरीका में रहो अथवा रूस में रहो, इन तीन बातों के आधार पर ही भावी जीवन का निर्णय करना होगा और फिर तब ही हम तुमको उसमें राय और सहायता कर सकेंगे।"

सतीश अभी भी नहीं समझा कि उस समय की उसकी समस्या का उक्त प्रश्नों से किस प्रकार सम्बन्ध है। इस कारण उसने कह दिया, "भैया ! तनिक व्याख्या से कहो तो मैं कुछ उत्तर दे सकूंगा।"

"तो सुनो।' विष्णु ने कह दिया, "जड़वादी ही वासनाभिभूत सम्बन्धों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को अधिक महत्ता देते हैं। आत्मवादी पति-पत्नी के सम्बन्ध को केवल यौन-सम्बन्ध नहीं मानते। विवाह का मुख्य उद्देश्य सन्तान उत्पन्न कर उसे अपने से श्रेष्ठ बनाना है। इसमें से ही मानव समाज का कल्याण है। एक जड़-वादी इसको इस प्रकार नहीं मानता।

"इस विचार की धुरि पर अन्ना से अपने सम्बन्ध का विचार करो। यह संबंध एक जड़वादी का सा है। अन्ना के पत्र से तो यह जड़वादियों का सा ही सम्बन्ध समझ में आता है। वह जने-खने की भार्या बनने के स्थान एक की भार्या बनना तो पसन्द करती प्रतीत होती है, परन्तु सम्बन्ध वासना का ही है। इसमें आत्मवादियों का उद्देश्य दिखाई नहीं दिया। सतीश भैया, तुम निश्चय करो कि तुम उससे एक आत्मवादी भार्या का सा सम्बन्ध बनाना चाहते हो, अथवा केवल जड़वादियों का सा। यदि तुम भी कुछ वैसा ही अनुभव करते हो, तो अर्चना तुमको जाने के लिए खर्च दे रही है। तुमको चला जाना चाहिए। यदि विवाहका उद्देश्य केवल वासना तृप्ति नहीं तो अन्ना के पास जाकर सुखी नहीं रह सकोगे।"

"और भी सुन लो। यदि तुम कम्यूनिज़म अर्थात् समाज को व्यक्ति पर सदा और सर्वत्र अधिकार सम्पन्न मानते हो और समाज में वर्गों का आधार अर्थ को मानते हो तो तुम अमरीका में तो उन्नति कर नहीं सकोगे। रूस में तुम जा सकते हो अथवा भारतवर्ष की कम्यूनिस्ट पार्टी में पड़े-पड़े गल सकते हो। तुम उन्नति नहीं कर सकोगे। कोई भी समाजवादी जो उक्त सिद्धान्तों को मानता है वह समाज की उन्नति में किसी प्रकार का सहयोग देगा अथवा नहीं, यह समाज के स्वीकार करने पर निर्भर रखता है; परन्तु उसकी अपनी किसी प्रकार की उन्नति होगी अथवा उसमें किसी प्रकार का मानसिक विकास होगा, असम्भव है।

व्यक्ति फलता-फूलता है जब वह स्वतन्त्रता से विचार करता है अथवा स्वतन्त्रता से विचरता है। कम्यूनिस्ट प्रपंच में व्यक्ति नगण्य है। समाज सर्वोपरि है और समाज एक विशाल यन्त्र है, जिसको चलाने वाला कोई एक आध व्यक्ति होता है। उस यन्त्र में एक पुर्जे की स्थिति तो कोई हितकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तथा श्लाघनीय अवस्था में नहीं।

"एक बात और है सतीश! तुम अपना जीवन कार्य क्या बनाना चाहते हो? वकील तुम बन नहीं सके। लेखक तुम बन सकते थे, परन्तु कम्यूनिस्ट दल में चले जाने से तुम्हारी लेखन प्रतिभा कुण्ठित हो गई है। लेखक दासता के वातावरण में नहीं बनते। इसके लिए स्वच्छ और अबाध विचार क्षेत्र की आवश्यकता होती है। दार्शनिक होने के लिए देश, पद्धतियों तथा परम्पराओं के बन्धन अवाञ्छनीय है।

"अब बताओ, तुम क्या हो और क्या चाहते हो? तब वैसी ही सम्मति हम तुमको दे सकेंगे और यथाशक्ति सहायता भी देगें।"

: ८ :

सतीश इस विशद विवेचना से स्तब्ध तथा मौन रह गया। वह आंखें मूंदे आत्म-विश्लेषण करने लगा था। उसमें लेखक बनने की उत्कट उत्कण्ठा थी और उसमें भी सफलता का मुख देख रहा था। सरकारी पदक मिल जाने पर भी वह लेखकों की पंक्ति में सबसे पिछली बैंचों कर बैठा अनुभव करता था।

विष्णु का कहना था कि इसमें कारण है उसके विचारों पर समाजवाद को समस्याएं। वह मन में विचार कर रहा था कि विष्णु का कथन सत्य है क्या?

एकाएक उसके मन में विचार आया और उसने पूछ लिया, "अर्चना! यदि मैं कहूं कि मुझको आत्मवाद में विश्वास नहीं, यदि मैं यह कहूं कि मैं इस जीवन के आर-पार कुछ नहीं देखता, इस कारण जो कुछ इस जीवन में सुख स्वाद उपलब्ध हो सके, वह ही सब कुछ हैं। यदि मैं यह कहूं कि इस जीवन में सुख के लिए मुझे समाजवाद, जिसकी सुस्पष्ट रूप-रेखा कम्यूनिज़म में है, ही एक सबल साधन दिखाई देता है तो फिर क्या करोगी? क्या तब भी तुम मुझको सहायता दोगी?

अर्चना ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "बताइए, कितने से आपका काम चल जायेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अर्चना ने अपने ब्रीफ केस में से चैक बुक निकाल सामने रख ली और सतीश का मुख देखने लगी।

सतीश ने कहा, "यह तो मैं कल बताऊंगा। अन्ना ने सात दिन की अवधि मेरे पहुंचने के लिये दी है, परन्तु मुझको यह समझ नहीं आ रहा कि तुम मेरे लिये यह सब क्यों कर रही हो ?"

"तो भैया ! आप नहीं जानते ? सुनो। आप उसी माता-पिता की सन्तान हैं जिसकी मैं हूं। मैं अनुभव करती हूं कि उन दोनों पुण्य आत्माओं का अंश जैसा मुझमें है, वैसा आप में भी है। इसलिये मैं जो कुछ धन सम्पद् रखती हूं, उनकी हैं और यह मैं उनका एक अंश, जो आप में है, सहायतार्थ देने में प्रसन्नता ही अनुभव करती हूं।"

"परन्तु संसार तो ऐसा नहीं मानता।"

"जो कुछ मैं मानती हूं, वह संसार के मानने अथवा न मानने से सन्बन्ध नहीं रखता। यह मेरे संस्कारों और विचारों से सम्बन्ध रखता है। इसका किसी दूसरे से सम्बन्ध नहीं है।"

सतीश उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "विष्णु भैया ! धन्यवाद। मैं एक दो दिन में आपसे मिलूंगा और जो कुछ सहायता आवश्यक होगी मांग लूगा।

"हां।" उत्तर अर्चना ने दिया, "मेरे बैंक में इस समय चालू खाते में दो लाख रुपया है। इतना कुछ तो आपको एक क्षण के नोटिस पर मिल सकता है।'

सतीश उठकर वाहर आया तो अर्चना और विष्णु भी वाहर चले आये। सतीश पैदल ही अपने होटल की ओर चला गया। वे दोनों उसे कुछ दूर जाते हुए देखते रहे, फिर अपनी गाड़ी में सवार हो चले गये।

मार्ग में केवल इतनी वात और हुई। अर्चना ने पूछा, "आप क्या समझते हैं कि भैया लौट आयेंगे क्या ?"

"कहा नहीं जा सकता। इस पर भी हमने अपने हृदय को खोल कर उनके समक्ष रख दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिन व्यतीत होने लगे और सतीश नहीं आया। आर्थिक सहायता लेने भी नहीं आया। जब से अन्ना से उसका विवाह हुआ था, उसके रहने का सब खर्च अर्चना दे रही थी। मुकदमें पर भी सब खर्चा वह ही कर रही थी। परन्तु उस दिन की भेंट के उपरान्त सतीश वह सहायता लेने भी नहीं आया जो वह प्रति सप्ताह लेने आया करता था।

उक्त भेंट को हुए सात दिन हो गये तो अर्चना ने समझा कि सतीश का पता करना चाहिये। उसने होटल मेट्रोपोलिटन में टेलिफोन किया और कहा, "रूम न० ३० से सतीश कुमार को बुला दीजिये।"

"सतीश जी को यहां से गये पांच दिन से ऊपर हो गये हैं।"

"कुछ पता है कि कहां गये हैं?"

"नहीं; कुछ बता कर नहीं गये।"

अर्चना ने टेलीफोन बन्द कर दिया। अब धैर्य से प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं था।

सन् १९६५ आ गया और एक दिन एक पुस्तक जिसका नाम था, 'मैं अब स्वतन्त्र हूं' विष्णु जी के पास समालोचनार्थ आयी। ऐसी पुस्तकें विष्णु रात सोने के समय देखा करता था। विष्णु ने पुस्तक खोली। प्रकाशक थे 'युनिवर्सल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।' यह एक नई प्रकाशन संस्था थी। पुस्तक का लेखक था—'सोमानी'। विष्णु ने पुस्तक खोली। वह समर्पित थी, 'स्नेहमयी बहिन अर्चना को।'

विष्णु समझ गया। उसने अर्चना को आवाज़ दे दी। वह अपने बच्चे के साथ दूसरे कमरे में सोया करती थी। आवाज़ सुन वह आ गयी।

विष्णु ने पुस्तक का पन्ना खोल जिस पर समर्पण लिखा था, अर्चना के सामने कर दिया। अर्चना ने पढ़ा और नीचे सोमानी नाम पढ़ा तो समझ गयी। उसके मुख से निकल गया, "तो भैया मुझको 'स्नेहमयी' मानता है?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी सोयी आत्मा जाग उठी है।"

अर्चना की आंखें आंसुओं से भरने लगीं। वह पति के पलंग पर ही बैठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गयी और चुपचाप आंसुओं को बहने का अवसर देने लगी।

विष्णु ने कह दिया, "प्रातः मैं इस पुस्तक पर समालोचना लिखूंगा, जिससे वह अगले अंक में ही छप सके और देखो अर्चना ! इस पुस्तक का एक बहुत बड़ा 'आर्डर' अपने विक्रय विभाग की ओर से जाना चाहिये।"

"बिना पुस्तक को पढ़े कि इसमें क्या लिखा है ?"

"मेरा मन कहता है कि पुस्तक अच्छी होगी। जिस आत्मा ने यह समर्पण लिखने की प्रेरणा दी है, उसी ने तो पुस्तक लिखी है।"

रात बहुत देरी तक विष्णु सतीश की पुस्तक को पढ़ता रहा। पुस्तक अभी समाप्त नहीं हुई थी कि उसको नींद आ गयी। प्रातः उसकी नींद खुली, जब अर्चना अपने कमरे में गा रही थी :—

अम्बवा की डार पर फूला है बौर नया।
चला गया शरद कूकत है कोयलिया॥
अब आया वसन्त निकलेगीं नव कलियां।
चहक उठेंगे पक्षी, करेंगे रंगरलियां॥

उस दिन अर्चना कार्यालय में पहुंची तो निर्मला उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने कुर्सी पर बैठते हुए पूछ लिया, "क्या बात है निर्मला ?"

"मैं छुट्टी चाहती हूं।"

"कितने दिन की ?"

"सदा के लिये।" इतना कह उसने अपनी माता का पत्र अर्चना के सामने रख दिया।"

"यह क्या है ?"

"आप पढ़ लीजिये। यह मेरी छुट्टी मांगने में कारण है।"

अर्चना ने पढ़ा। सामान्य आशीर्वाद इत्यादि के उपरान्त लिखा था, "सतीश कल आया था और विवाह का निश्चय कर गया। १६ मार्च को वसन्त पंचमी के दिन हम तुम्हें उसके हवाले कर देना चाहते हैं। अब तुम अपने कार्य को छोड़कर यहां चली आओ। सतीश, तुमको अपने से दूर रहने की स्वीकृति नहीं दे सकेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"यह सतीश कौन हैं, क्या करते हैं ?" अर्चना ने पूछ लिया। अर्चना विचार कर रही थी कि उस दिन ग्यारह मार्च है। अतः अब तुरन्त ही निर्मला को छुट्टी देनी होगी और उसके स्थान पर उपसम्पादक के रूप में किसी को रखना होगा। इससे उसने उक्त प्रश्न को अन्यमनस्क भाव से ही पूछ लिया था।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्चना ने कहा, "वे आपके भाई ही हैं। आजकल दिल्ली में लेखन कार्य कर रहे हैं।"

"ओह !......।" अर्चना विस्मय से निर्मला का मुख देखती रह गयी। फिर पूछने लगी, "तुम उनको कब से जानती हो। यह विवाह कैसे निश्चय हो गया है ?"

यहीं कार्यालय में उनको देखा था। पत्र व्यवहार से बातचीत हुई और पिछले सप्ताह मैंने उनको लिखा था कि मेरे माता से मिलकर तिथि निश्चय कर लें। यह उसी पत्र का उत्तर है।"

"ठीक है। तुम जब चाहो जा सकती हो।"

निर्मला ने एक हाथ का लिखा अन्य पत्र अर्चना के सम्मुख रख दिया। वह विवाह पर पति सहित आने का निमन्त्रण था। अर्चना हंस पड़ी, "तो तुम चाहती हो कि मैं लड़की की ओर से सम्मिलित होऊं ?"

"दोनों की ओर से।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Central Library
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
168015
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

कुछ अन्य नटराज पुस्तकें

दूखन लागे नैन	श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी	२.००
अवहेलना	प्रकाश भारती	१.००
प्रमाद	,,	१.००
दो मार्ग	,,	२.००
नल-दमयन्ती	श्री सीताराम गोयल	१.००
प्राणों का पाश	,,	१.००
शक्तिपुत्र शिवाजी	[illegible]	१.५०
सस्यकाम सोक्रातज	[illegible]	१.५०
सम्यक् सम्बुद्ध	[illegible]	१.००
संस्कार-संसद	,,	१.००
कमल-कुलिश	डा० रमानाथ त्रिपाठी	१.००
इत्ता-इत्ता पानी	श्री ब्रह्मदत्त	१.००
अंधेरे उजाले के फूल	श्रीमती शकुन्तला	१.००
धरती है बलिदान की	श्री शान्ताकुमार	१.००
पाण्डवप्रिया पांचाली	श्रीमती विमला	१.००

081
168015

भारती साहित्य सदन

३०/९०, कनाट सरकस, नई दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।
विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar